



भजन सफ़

119 11

112 11

॥ ४ ॥

गिर गोविंद	६
आनरा	१२१३३६
आसावरि	१०९
ईमन्	२६६
कान्हरा	१२८
कोला	१५
काफिर	४
कौसिकराग	
केदार	३०८
कल्याणा	१२२
गद	१७
गांधा	३३८

गौरि	३७४
गौरिसारड	११४
गालि	३०१
घादु	३७२
जयजमंति	३१०
तोलि	१८४
धमाल	६८
धनाश्री	२०४
नद	१४३
नद वेलावरि	१४८
पज	१६८
पहरिया	२६६
प्रथम मंजरी	३०६

वल्गारि	८०
वेलावारि	१३८
विभास	१५०
वसंत	३५६
विजपत्री	
भिंप्राम	७२
भथ्याहार	३१४
भैरव	२८०
मल्लार	३३२
मालात्री	२४०
मालव	१६०
मैचालि	

परियार्द्रमन	२१३
रामकल्पी	३७
राजविज	२३०
ललित	२६०
श्री	१६४
सार्थ	३४४
सारंग	३२२
सिन्हाज्या	३६८
हिंदोल	३०३

॥ ६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीनृत्येनाथाय नमः ॥ श्रीसारदाय नमः ॥

रागरामकल्पी ॥

प्रलयपयोविजलेधुजवानसिखेदं ॥ वि

हित वधित चरित मखेदं ॥ केशबंधुत मीनशरितं ॥ जयजगदिसहरे

॥ १ ॥ छेनिरतिविपुललेतवतिष्ठतिपिच्छं ॥ धरणिधरु किनचक्र

गरिष्ठं ॥ केशबंधुत कक्षयरूपं ॥ २ ॥ वसतिदसनसिखलेधरणि

तबलगां ॥ शसिनिकलक कलेबलिमनं ॥ केशबंधुत श्रुकरूपं ॥ ३ ॥

तवकलकमल बलेन खमधुतशृंगं ॥ दरितहिरण्यकसिपुननभृंगं ॥

केशबंधुतनरहरिरूपं ॥ ४ ॥ छलयसिबिक्रमनेवालमधुतवामन ॥ पद

नखनीरुज नितजनपावन ॥ केशबंधुतवामनरूपं ॥ ५ ॥ क्षतियरुधिर

मयजगदं पगतपापं ॥ स्तपयसिपव सिसमित भवतापं ॥ केशबंधुत

भृगुपतिरूपं ॥ क्षावितरसिदिशुरनेदिगपति कमनीयं ॥ दसमुखमौरि

॥ प्रलयपयो ॥

वरीरमणाय ॥ केशवंधुतरघुपतिरूपं ॥ ७ ॥ बह्मशिवदुर्विषदेवसनं
जलसभं ॥ हरहतिभिति मिरितयमुनाभं ॥ केशवंधुतहलधारुपं
॥ ८ ॥ निन्दसिजज्ञविभेरहहश्रुविजातं ॥ सदयहृदयदरसितपसु
घातं ॥ केशवंधुतबोधसारं ॥ ९ ॥ स्नेहनिवर्धनेधनेकलवासिक
लवादं ॥ ध्रुमकेतु निवकीमपिकलातं ॥ केशवंधुतकलंकिसारं ॥
१० ॥ श्रीजयदेवकवेरिदमुदिलमुदारं ॥ शृणुश्रुवदंसुभदभव
सारं ॥ केशवंधुतदसवृधरूपं ॥ ११ ॥

॥ राग

॥

॥ ११ ॥

शितकमलाकुचमंदल धृजकुण्डलये ॥ कलितललितवनमात्रं ॥ जय
जयदेवहरे गोपालश्री ॥ १२ ॥ दिनमनिमंदलमंडनभवरखण्डन
मुनिजनमानसहंस ॥ १३ ॥ कलियविषधरंजन जनंजनये

॥ १४ ॥

यडुकल नलिननिनेशं ॥ १५ ॥ मधुमुरनरकविनासनगरुडासन
ये ॥ सुरकुलकेलिनिदानं ॥ १६ ॥ अमलकमलंदललोचन
भवमोचनये ॥ त्रिभुवनभवननिदानं ॥ १७ ॥ जनकसुताक
तभूषणजितइखणाय ॥ समदशमृतदसकराट ॥ १८ ॥ अभि
नवजलधरसुंदरधृतमंदलरे ॥ श्रीमुखचंद्रचकोरं ॥ १९ ॥ तवचर
नेप्रणतावयमितिभावये ॥ करुणशरीप्रणतेषु ॥ जये ॥ २० ॥
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुतेमुदये ॥ महुलमुज्वलगीतं ॥ २१ ॥

॥ राग वसंत ॥

॥

॥

ललितलवंगल तापरि शीतल कोमलमलय समीरे ॥ मधुकरनिर
करंवीतकोकिल कुंजितकञ्जकतीरे ॥ २२ ॥ विहरति हरीरिह
सरसवसन्ते नृत्यति युवति जनेन समं सखीविरहिजनस्पदुरिते ॥ २३ ॥

॥ शितकमलाकुच ॥

॥ ललितलवंगल ॥

उन्मदमदनमनोरथ पथिकबधुजनजनितविनाये ॥ अलिकुलसंकुलकु
 सुम समूह निराकुल वकुलकलाये ॥ २ ॥ मृगमदमौरभ रभ सवसं
 म्वद नवदलमालत माले ॥ युवजन हृदये विदारणा मनासेज नरवह
 चि किंसुप्रजाले ॥ ३ ॥ मदनमहिपानि कनकदराडहृचि केशरकुसुमनि
 कास्ये ॥ विगलितलज्जितु व पातलिपतल कृतस्मरतरुणा विकार्ये ॥ ४ ॥
 विगलितलज्जितजगदवलोकन तरुणाकरुणा कृतहसे ॥ विरहिनेकृन्तन
 कृन्तसुरवाकृति केतकिदन्तुरितासे ॥ ५ ॥ माधविकापारि मललालितेनव
 प्रालिक यानि सुगन्धो ॥ मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणा
 वन्धो ॥ ६ ॥ स्फुरदनि मुक्कल तापरिरम्भणा मुकलितपलकिनचुने
 ॥ ७ ॥ विन्दावरा विपिनेपरिसरपरि गनयमुनाजल
 पुते ॥ श्रीजयदेव श्रुतिन मिदमुदयानि हरिवरणास्मृति सारंम् ॥ सरस

॥ १० ॥ ॥ १० ॥
 वसंत समयवनवर्णन मञ्जुगत मदन विकारम् ॥ ८ ॥

॥ रागरामकली ॥

चन्दनचर्चितनीलकलेवर पितवसनवनमालि ॥ केलिचलमनिकुण्ड
 लमण्डितगरुडगस्मितसालि ॥ १ ॥ हरिहृमुग्धवधुनिकरे ॥ विता
 सिनि विलसति केलिपरे ॥ २ ॥ पिन पयोधरभारभरेण हरिपारि
 भ्येसर्ण ॥ गोपवधुरनुगायनिकाचिडुदाश्वितपञ्चमरागम् ॥ ३ ॥ कपि
 विलास विलोलविलोचन खेलनजनितमनोज ॥ ध्यायति मुग्धव
 धुरधिकं मधुसूदन वदनसरोजम् ॥ ४ ॥ कपितपोलतलेमिलिताल
 पितुङ्गि मपिश्रुतिमूले ॥ चारुचबुम्बनितम्बवतिदीयतेपकैरुल्ले
 ॥ ५ ॥ केलिकलाकतुकेनचकाचिदुसुयमुनाजलकुले ॥ ६ ॥ कलल
 तालतरलवलायावतिकलितकलस्वनवंसे ॥ रासरसे सहन्दमपरा

चन्दनचर्चितनील

मधुनचर्चितनील

हरि रणायुवानेप्रशशंसे ॥ ६ ॥ पिचुम्बतिकामपिमयतिरामा ॥ पश्यतिसस्त्री
तचारुपरामर्थ रामनुगच्छति वामा ॥ ७ ॥ श्रीजयदेव भनिते मिदमद्भु
त केशव केलिरहंस्प ॥ विन्दावन विपिने ललितं वितनोतु शुभानियशस्य ॥ ४ ॥
राग गुंजरि ॥
सञ्चरदधर सुधामधुरं ध्वनि सुखरित मोहनवंशं ॥ चलित दृगञ्चलचंच
ल मौलिक पोल विनोल वनंशम् ॥ १ ॥ राशेहरीमिह विहितविलाशं ॥ स्म
रति मनोममकृतपरिहासं ॥ २ ॥ चंद्रकचारुम यूरशि खराड कमराडल
वलयित केशंम् ॥ ३ ॥ पुचुरपुरंदरधनुरनु राजित मेदर मुदिर सु
वेशम् ॥ ४ ॥ गोपकदम्बनि नम्रवति सुख चम्बन लम्बितलोभं ॥ वंधु
जीव मधुरा धर पल्लव मुल्ल सित स्मित शोभम् ॥ ५ ॥ विपुल पुलकभुज
पल्लव वलयित वल्लव युवति सहस्रं ॥ करचरणोरसि मणिगगणभूषणा
किरणा विभिन्नत मिश्रम् ॥ ६ ॥ जलदपटलवन दिन्दु विनिन्दकचन्दन

निलकललाटं ॥ पीनपयोधर परिसर मर्दन निर्दय हृदय कपाटम् ॥ ५ ॥
मनिमयमकरमनोहरकराडल मणिडनगंडमुदारं ॥ पितवसनमनुगतमनिमनु
जसुरासुर वरपरिवारं ॥ ६ ॥ विशदकदम्बतलेमिलितं कलिक नुरवप्रयशमयनं
॥ मामपिकिमापि तरु दनरु दृशामन सारमयनं ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभणितम
ति सुन्दर मोहनमधुरिपु रूपम् ॥ हरिचरणा स्मरणा प्रतिप्रतिपुण्यवता
मुनुरूपम् ॥ ८ ॥

रागगोडामालव ॥

निभृतनि कुञ्ज गृहगत यानिशि रहसिनि लियवसनं ॥ चकितविलोकि
सकलदुसारति रभसभरेन हसनम् ॥ १ ॥ सखिदेकेसिमदनमुदारं ॥ रम
यासहमदनमनोरथभावितयासविकारम् ॥ २ ॥ प्रथमसमागसलजित
यापदुचातुशनैरनुकूलं ॥ मृदुमधुरस्मृत भाषितया शिथिलि कृतजघ

नदुकुलं ॥ २ ॥ किशलयशयननि वेशितयाचिरमुरशिमेवशयानं ॥
 कृतपरम्भराचुम्बनयापरिरभ्यकृताधरपानम् ॥ ३ ॥ अलसनिमीलित
 लोचनयापुलकावलि ललितकपोलं ॥ श्रमजलसिक्तकलेवरयावरमदन
 मदादतिलोलं ॥ ४ ॥ कोकिलकलरवकुञ्जितयाजितमनासिजनैत्रविचारं ॥
 क्षथकुसुमाकुलकुञ्जिलयानरवलिखितजघनस्तनभारम् ॥ ५ ॥ चरणागो
 तमरिणानुपुरयापरिपूरितसुरनवितानं ॥ मुखरविशृङ्खलमेखलयासक
 चग्रहचुम्बनदानम् ॥ ६ ॥ रतिमुखसमयरसालसयादरमुकुलितनयन
 सरोजं ॥ निस्सहनिपातिततनुलतयामधुसूदनमुदितमनोजम् ॥ ७ ॥
 श्रीजयदेवभरितमिदमतिमयमधुरिपुनिधुवनशीलं ॥ मुखसुत्क
 रिततगोपवधुकथितं वितनोतु सलिलम् ॥ ८ ॥

राम गुंजरी ॥

मामियंचलिता विलोक्यवृत्तं वधूनिचयनं ॥ सापराधतयामयापिन
 वानातिभयन ॥ १ ॥ हरिहरिहतादरतयागता साकुपितेव ॥ २ ॥
 किंकारिष्यति किंदिष्यति साचिरं विहरा ॥ किंधनेन जनेन किंममजिपि
 तेन गृहेण ॥ ३ ॥ चिंतयामितदाननं कुटिलभुकोपभरेण ॥ शोचापभ
 मिवोपरि श्रमताकुलं श्रमेण ॥ ४ ॥ तामहं हृदिसङ्गतामरिणं शंभुशरम
 यामि ॥ किंनेऽनुसरामितामिह किंविधाविलयामि ॥ ५ ॥ तन्निखिन्नम
 सखया हृदयन्नवालकयामि ॥ तन्नर्षेति कुतो गतासि ननेन तेऽनुनयामि
 ॥ ६ ॥ दस्पसपुरतो गतागतमेवमे विदधासि ॥ किंपुरेव ससंश्रममेरि
 रम्भणं न ददासि ॥ ७ ॥ क्षाम्यतामपरं दापितवेदसंन करोमि ॥ देहि
 सुन्दरि दर्शनमममन्मथेन डुनोमि ॥ ८ ॥ वरिणतञ्जयदेवकेन हरेरि
 दस्पबनेन ॥ किन्दविल्वसमुद्रसम्भवरोहिणीरमरोन ॥ ९ ॥

रागकराटक ॥

निन्दति चन्दनमिन्दुकिरगामनुकिन्दतिरेवेदमधीरं ॥ बालनिलयमिलनेनगर
लमिवकलयतिमलयसामिरम् ॥ १ ॥ साविरहेतवदिना ॥ माधवमन
सिजविशिखभयादिव भावनयात्वयिलीना ॥ २ ॥ अकिरलनिपति
मदनसरादिव भवदवनाय विशालं ॥ स्वहृयममारावम्भकरोति
सजननलिनीदलजालम् ॥ ३ ॥ कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पाविला
सकलाकमनियं ॥ व्रतमिवतव परिम्भ सुखायकरोतिकुसुम
शायनियम् ॥ ४ ॥ वहनिचवलित विलोचनजलधरमाननकमल
मुदारं ॥ विधुमिवकिटविधुनुददन्तदलनगालितामृतधारम् ॥ ५ ॥
विलिखतिरहसिकरुमदेनभवन्तमसमशरभूतं ॥ प्रणामतिमकर
मधोविनिधायक रेवसरंनयचुतम् ॥ ६ ॥ प्रतिपदमिदमपि

निगदति माधवचरणोपनिताहं ॥ तोयिविमुखे मयि सपदिसुधा
निधिरपितनुते तनुदाहम् ॥ १ ॥ ध्यानलयरागुर पारकल्पभवंत
मतिवडुरायं ॥ विलपतिहसतिविषिदति चञ्चनिमुञ्चनितापम् ॥ २ ॥
श्रीजयदेवभणितमिदमधिकं यदि मनसानटनीयं ॥ हारिविरहा
कुलवत्सभयुवति सखिवत्सनं पठनियम् ॥ ३ ॥

रागदेशाग ॥

स्तनविनिहितमपि हलमुदारं ॥ सामनुतेकृन्तनुरिवभारम् ॥ १ ॥
राधिकाविरहेतवकेशव ॥ २ ॥
सरसमश्रुगामपि मनयजयङ्क ॥ पश्यति विशामिव वपुषिसशङ्कम्
॥ ३ ॥ स्वशितपवनमनुपमपरिणाहं ॥ मदनदहनमिववहति सदाहम् ॥ ४ ॥

निन्दति चन्दनम्

स्तनविनिहितम्

॥ १७ ॥
 दिशिदिशकिरति सजलकनजाल ॥ नयननलिनामिव विगलितनालम् ॥ ४ ॥
 नयराविषयमपि किशलयतल्पं ॥ गरायतिविहित हुताशविकल्पम् ॥ ५ ॥
 त्यजतिनपाशितलेनकपोलं ॥ बालशशिनमिव सायमलोलम् ॥ ६ ॥
 हरीरति हरीरति जपतिसकामं ॥ विरहविहितमरगो वनिकामम् ॥ ७ ॥
 श्रीजयदेव भागितमितिगीतं ॥ सुखयतु केशवपदमुपनीतम् ॥ ८ ॥
 ॥ रागवल्लारि ॥

वहने मनय

वहतिमलय समीरे मदनमुपनिधाय ॥ स्फुटति कुसुमनिकरेविर
 हि हृदय दलनाय ॥ १ ॥ तवीरहेवनमालि सरिव सीन्दति ॥ २ ॥
 दहतिशिशिर मयूखेरमरा मुनुरोति ॥ पततिमदन विशिखे विलपति
 विकलतरोति ॥ २ ॥ ध्वनतिमधुप समूहे श्रवणामपिदधाति ॥ मन
 सि वलित विरहे निशिनशि रुजमुपयाति ॥ ३ ॥ वसतिविपिनविताने

॥ १८ ॥

त्यजति ललितनिधाम ॥ लुथति धराशायने बहुविलपति नवनाम ॥ ४ ॥
 भरातिकविजयदेवेविरहविलसितेन ॥ मनसिभसविभवेहीरुदयतु
 कृतेन ॥ ५ ॥

॥ राग ॥

रति सुखसार

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशं ॥ नकुहति तन्मिनिगमन
 विनम्वन मनुसरतं हृदयसम् ॥ १ ॥ धीरसमिरे यमुनातिरे वसतिवने
 वनमालि ॥ गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगली ॥ २ ॥ नाम
 समेतं कृतसङ्केतं बादयते मृदुवेषं ॥ बहुमनुतेतनु तेतनुसंज्ञत पवरा
 चरितमपिरेणु ॥ २ ॥ पततिपतत्रे विचलति पत्रे ॥ शङ्कितभव
 दुपयानं ॥ रचयतिशयनं शचकितलयनं परपति तवयन्थानम् ॥ ३ ॥
 सुस्वरमधीरं तेजमाज्जरं रिपुमिवके लिमुलोनं ॥ चलसरिवकुञ्जसावि

मिले पुञ्जं शीलयनीज निचोलम् ॥ ४ ॥ उरसि मुरारे रूपहितहारे धन
 ईवतरलवलाके ॥ तडीदिवपीते रतिविपरीते राजसिमुकृत विपाके ॥ ५ ॥
 विगलितवसनं परिहृतवसनं घटयजघनमापे धानं ॥ किशलयशयने
 पङ्कजनयने निधिमिव हर्षनिधाम् ॥ ६ ॥ हरीरभिमानिरजनिरिधानि
 मियमापे पातिविराम ॥ कुरुममवचनं संचरचनं पूरयमधुरिपु
 कामम् ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवेकृत हरीसेवेभरातिपरमरमणीयम् ॥ प्रभू
 दितहृदयं हरिमतिसदयं नमतुमुकृत कमनियं ॥ ८ ॥

॥ रागगोराडकिरि ॥

पस्यातिदिशिदिशिरहासेभवंतं त्वदधरमधुरमधुनिपिवन्तं ॥ १ ॥
 नाथहरे शिदिनि राधा वासगृहे ॥ २ ॥
 त्वदभिसरनरभ सेनवलन्ति ॥ पततिपदानिके यन्तिचलन्ति ॥ ३ ॥

~~यदुज्जयनिनिवेशं ॥ ३ ॥ मधुरावरकविनामयमृदासवये~~

~~॥ विभुवनभवन निदाने ॥ ४ ॥ समलकमलदन्तलो वनभवमोव~~

~~मये ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ समजनेकसुताह्वयमूकसामित~~

~~वृषाणे पातमयमृदसकसं तदा ॥~~

निवेहितविशदविस किमलयवलया ॥ जीवतिपरमिहतवरातिकलया ॥ ३ ॥

मुहुरवलोकित मराडललिता ॥ मधुरिपुरहमितिभावतशीला ॥ ४ ॥

त्वारितमपेतिनकथमभिसारं ॥ हरीरिति वदति सखी मनुवारम् ॥ ५ ॥

श्लिष्यतिचुम्बतिजलधरकल्प ॥ हरीरूपगतशक्ति निमिरमनल्पम् ॥ ६ ॥

भवतिविम्बनि विगलितलग्ना ॥ विललपतिरो दितिवासकसज्जा ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवक वेरि ॥ ८ ॥ मुदिनं ॥ रसिकजंतनुता मतिमुदितम् ॥ ९ ॥

॥ कथितसमयपि ॥

कथितसमयपि दीरह हनय योवन ॥ मम विफलमेतदनु रूपयोवनम् ॥
 यामिहे कमिह सरां ॥ सखि जवचनवाग्निना ॥
 पदनुगमनायानि शिगहनमपिशितं ॥ नेनममह दयामिदमशमसत्किनेन
 म् ॥ २ ॥ मममरगामेववरमतिवितथकेतना ॥ किमिहवियहामिविरहा
 नचमचेतना ॥ ३ ॥ मामहहविधुरयतिमधुरमधुयामिने ॥ कापि
 हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिने ॥ ४ ॥ अहह कलया मिवलयादि
 मारिगभूषणां ॥ हरिविरदहनवहनेन बहुदुषणाम् ॥ ५ ॥ कुसुम
 कुसुमारतनमनु शरलिलया ॥ स्वगपि हृदि हन्ति मामतिविषमशि
 लया ॥ ६ ॥ अहमिह निवसामिनगणितवनवेतसा ॥ स्मरतिमधुसु
 दनो मामपिनचेतसा ॥ ७ ॥ हरिचरणा सरणा जयदेवकावेभारति ॥

वसति हृदयु वति रिक्को मलकलावति ॥ १३ ॥

॥ राग ॥ ६४ ॥

॥ स्मरसमोचिन ॥

स्मरसमोचिन विरचिवेवा गनितकुसुमदरविलुलितकेशा ॥ १ ॥
 कापिमधुरिपुरा विहसतियुवति रधिकगुणा ॥ २ ॥ हरिपरिमभरा
 वलितविकारा ॥ कुचकलसोपरितरलितहारा ॥ ३ ॥ विचलदलकललि
 ताननचन्द्रा ॥ तदधरपानरभसकृततन्द्रा ॥ ४ ॥ चञ्चलकराडलदलित
 कपोला ॥ सुखरितरसनजघनगतिलिला ॥ ५ ॥ दयितविनोकिताञ्जि
 तहसिता ॥ बहुविधकुजितरतिरसरसिता ॥ ६ ॥ विपुलपुलकपृथुवे
 पथुभङ्गा ॥ स्वसितनिमिलितविकसदनङ्गा ॥ ७ ॥ अमजलकनभर
 सुभगसारिगा ॥ परिपतितोरसिरनि रगाधीरा ॥ ८ ॥ श्रीजयदेवभारित
 मतिलालितं ॥ कलिकलुखंशमयानु हरिरमितम् ॥ ९ ॥ १४

॥ समुद्रमदन ॥

समुद्रमदन रमणीवदने चुम्बनवलिनाधरे ॥ मृगमदालेकं लिख
 निसं पुलकं मृगमिवरजनि करे ॥ १ ॥ रमनेयमुना पुलिनवने ॥ वीज
 यीमुगारिरधुना ॥ २ ॥ घनचयरुचिरे रचयति विकरे तरनिनन
 रुगानने ॥ करवककुसुमंचपलासुसमं रतिपतिमृगकानने ॥ ३ ॥ घट
 याते सुघने कुचयुगगने मृगमदरुचिरुषिते ॥ मारीसरममलं तारक
 पटवं नखपद शशिभूषिते ॥ ४ ॥ जितविश सकने मृदुभुजयुने कर
 तलनले नीदले ॥ मरकटवलयं मधुकरनिचयं वितरति हिमशीतले ॥ ५ ॥
 रतिगृहजघने विपुलापघने मनसिजकनकासने ॥ मारीमयरसनं
 तोरगाहसनं विकिरति कृतवासने ॥ ६ ॥ चरगाकिशलयैकमला
 तिनय नखमारी गरापूजिते ॥ बाहिरपवरायावकभरराजिनयति

हृदयो जिते ॥ ७ ॥ रमयति सुमृशं कामपि सुदृशं खलहलधरसोदरे ॥
 किमफलमवसंचिरमिह विरसंवदसखिवितपोदरे ॥ ८ ॥ ईहसभरगे
 कृतहरिगुराने मधुरिपु पदसे वके ॥ कलियुगचरितं नवसतुदुरितं कवि
 नृपजयदेवके ॥ ९ ॥ १५ ॥

॥ रागबल्लारि ॥

॥ अनिलन ॥

अनिलतरल कुवलयनयनेन ॥ तपतिनशाकिशलयशयनेन ॥ १ ॥
 सखिजालमितावनमानिना ॥ २ ॥ विकसितशरसिजलनिनमुखे
 न ॥ स्फुटतिन सामन सिजविशिखेन ॥ ३ ॥ अमृतमधुरमृदुतर
 वचनेन ॥ ज्वलतिनसामलयजपवनेन ॥ ४ ॥ स्थलजलरुहरुचिकर
 चरणेन ॥ दहतिनसाहिमकरकिरणेन ॥ ५ ॥ सजलजलदसमुद्र
 यरुचिरेणा ॥ दलतिनसाहृदि विरहभरेणा ॥ ६ ॥ कनकनिकवरुचि

शुचिवसनेन ॥ श्वसितिनसापरि जनहसनेन ॥ ६ ॥ सकलभुवगायुव
जननरुगेन ॥ वहनिनसारुज मतिकरुगेन ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभ
नितवचनेन ॥ प्रविस्तुहरीरपि ॥ हृदयमनेन ॥ ८ ॥ १६ ॥
॥ रागभैरवि ॥ १७ ॥

रुजनिजतगुरुजागरागकसायितमलसनिमेष ॥ वहनिनयगा
मनु रागमिवस्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥ १ ॥ हरिहरियाहिमाधव
याहि केशवमावदकैटववादं ॥ तामनसरसर सिरुहलोचनघात
वहरति विषादं ॥ २ ॥ कज्जलमलिनविलोचनचुम्बनपरचितनी
लिमरूपं ॥ दशनवसनमरुगान्तव कृष्णननोतितनोरनु रूपम् ॥ ३ ॥
वपुर ॥ नु ह्यनितवस्मरसङ्ग ॥ रवरनरवरक्षतेरेवं ॥ मरकतसकल
कलितकलि चोत्तलि पेरि वरनिजयले खम् ॥ ४ ॥ चरणाकमल गल

दलन्कत सिन्धु मिदंतव हृदयमुदारम् ॥ दर्शयतिववहिर्मदनद्रुमनव
किसलय परिवारम् ॥ ४ ॥ दशनपदम्भवदधरगनंममजनयतिचेतसि
खेदं ॥ कथयतिकथमधुनापिमया सहनववपुरेदभेदम् ॥ ५ ॥ कथम
~~भवभवसेजनमनुगतमममशरज्वरदूतम्~~ ॥ वहिरिवमलिनतरंतव
कृष्ण मनोपिभविष्यतिनुनम् ॥ ६ ॥ कथमथवभवसेजनमनुगतमम
मशरज्वरदूतम् ॥ ७ ॥ भ्रमतिभवानवलाकवलाय वनेषुकिमंत्रविचित्रं
॥ प्रथयतिपूतनिकैववधूवधनिर्दयबालचरित्रम् ॥ ८ ॥ श्रीजयदेवभ
विस्त रतिव ॥ चितरवरिडतयुवतिविलापं ॥ शृणुतसुधामधुराम्बिबुधा
विबुधालयतोपिदुरापम् ॥ ९ ॥ १७ ॥
॥ रागरामकली ॥ १८ ॥

हरिरभिसरति वहतिमधुपवने ॥ किमपरमधिकसुखसखिभवने ॥ १९ ॥

॥ ३॥

माधवेमाकरुमानिनिमानमने ॥ १ ॥ तालदम्फलादीपेगुरुमातेसरसं ॥
किंविफलिकरुषेकचकलशम् ॥ २ ॥ कतिनकथितमिदमनुपदमचरं ॥
मापरिहरहरीमतिशय रुचिरम् ॥ ३ ॥ किमिति विषीदसिरोदिषिविकला ॥
विहसति युवति सभातवसकला ॥ ४ ॥ सजलनलिनिदलशीलितशयने ॥
हरिमवलेकयशफलनयने ॥ ५ ॥ जनयसिमनासि किमिति गुरुवेदं ॥
भृगुममवचनमनिहितभेदम् ॥ ६ ॥ हरिरुपयातुवदनुवहुमधुरम् ॥
किमिनिकरोषि हृदयमतिविधुरम् ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभरिणानमनिलाले
नम् सुखयनुरासिकजनं हरिचरितम् माधवे ॥ ८ ॥ १८ ॥

॥ रागदेशावली ॥

वदोमे

वदोश्यादेकिंविदपिदन्तरुचि कौमुदि हरति दरति मिरमतिघोरं ॥
स्फुरदधरसिधवेनववदनचन्दुमारोचयानिलोचनचकोरम् ॥ ९ ॥

॥ २० ॥

प्रियचारुसिलेमुञ्चमाषिमानमनिदानं ॥ सपदिमदनानलोदहतिमममानं
संदोहिमुखकमलमधुपानम् ॥ १ ॥ सत्यमेवासि यदि मुदतिमायिको
पिनी देहि वरनखरसरघातं ॥ घटयभजवन्धनं जनयस्वरवाडनं
यनवाभवातिमुखजातम् ॥ २ ॥ त्वमसिममभूषणं त्वमसिममजिवनं
त्वमसिममभवजलधिरत्नं ॥ भवतु भवति ह्मयिशातनमनुरोधिनिर्गतं
ममहृदयमति यत्नम् ॥ ३ ॥ नीलनलिनाभमपितान्वितवलोचनधार
यतिकोकनदरूपं ॥ कुसुमसरवागाभावेनयादेरञ्जयसि कृष्णमिदं
मेतदनु रूपम् ॥ ४ ॥ स्फुरतुकचभुम्भयोरुपरिमाणो मञ्जरीरञ्जयतु
तवहृदये सु ॥ रमतुरमनापितवधनजघनमराडले घोषयतु ममथ
निदेसं ॥ ५ ॥ स्थलकमल गञ्जनं ममहृदय रञ्जनं जनितरतिरं कु
परभागं ॥ धनमभृगावागि करवागि चरणादयं सरसलसदलं

नृकरांगं ॥ ६ ॥ स्मरगदल खराडन ममसिरसिमंसाडन देहिपदप
 लवमुदरं ॥ ज्वलतिमयिदासुखो मदनकदनानलोहरतुतदुपाहित
 विकारम् ॥ ७ ॥ ईतिवदुलचाकुपटुचारुमधुवैरिणोराधिकामधिवचं
 न जानं ॥ जयतिपत्रावति रमणा कविभारति मानिनीजनजनितशात
 म् ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ रागवन्त ॥

॥ विरचित ॥

विरचितचातुवचनरचनं रचयित्वाचित प्राणिपानं ॥ संप्रतिमञ्जुलवञ्जु
 लसीमनि केलिशयमनुयातम् ॥ १ ॥ मुग्धेमधूमथनमनुगतमनु
 सर राधीके ॥ २ ॥ चनजघनस्तनभारभरे दरमन्थरवराविहा
 रं ॥ मुखविरा मारो मञ्जोर मुपेहि विधेहि मरणविकारम् ॥ २ ॥

भृगुरमणो यत रंतुरुणीजन मोहनमधुस्त्रिषुखं ॥ कुसुमसरा
 सन शासन वन्दिनिपिकनिकरे भजभावम् ॥ ३ ॥ अनिलतरलकि
 शल यनिकरेण करेणालतानिकुरुम्बं ॥ प्रेरा मिवकरभोरुकरोति
 गतिमुप्राति मुञ्चविलम्बम् ॥ ४ ॥ स्फुरितमनकूतरकूवशादिवसुचिन
 हरिपीरे रम्भं ॥ पृच्छमनोहर हारविमलजलधारममुदुचक्रम्भम् ॥
 ५ ॥ अधिगतमाखिलसखीभिरदंतववपुरपिरतिरणासज्ज ॥ चरिड
 रणितरसनारवाजिगिडममभिसरसर समलज्जम् ॥ ६ ॥ स्मरसरमु
 भगनखेनकरेण सरिविभवलं व्यसनीलं ॥ चलवलय करिणितैरवबोध
 य हरिमापेतिजगतिशीलम् ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभरिततमधरीकृत
 हारमुदा सितवामं ॥ हरिविनिहितमन साप्रधितिस्तु कराठनटिमावे
 रामम् ॥ ८ ॥ ॥ २० ॥

रागवल्गारि ॥

मञ्जुतरकुञ्जतलकेलिसदने ॥ प्रविशराधे माधव समीपमिह विलसर
तिर भसहसितवदने ॥ १ ॥ नवभवदशोकदल शयराशारे ॥ प्रविशराधे
माधवसमिप मिहविल सकुच कलशानरुलहारे ॥ २ ॥ कुसुमचयर
चित श्रुचिवासगेहे ॥ प्रविशराधे माधवसमिप मिहविलसकुसुमसुक
मारदेहे ॥ ३ ॥ चलमलयजवन सुरभिशीति ॥ प्रविशराधे माधवसमिप
मिह विलसरनिवलिललितगीते ॥ ४ ॥ विततवहुवाल्मितपल्लवघने ॥
प्रविशराधे माधवसमिपमिह विलस चिरमिलितपीनजघने ॥ ५ ॥ मधु
मुदितमधुपकुलकलितरावे ॥ प्रविशराधे माधवसमिपमिह विलसमदन
रभसरसभावे ॥ ६ ॥ मधुरतरुनपिक निनदमुखरे ॥ प्रविशराधे माधव
समिपमिह विलसदसन रुचिरचिरशिखरे ॥ ७ ॥ विहितपद्मावीतिमुख

समाजे ॥ कुरुमुखरे मङ्गलसताने भस्मजयदेवकीविराजराजे ॥ ८ ॥ २१ ॥
रागवल्गारि ॥

राधावदनविलोकन विकसितविविधविकाविभङ्गं जननिधि मिविविध
मंडल दर्सेन तरलिततुङ्गतरुम् ॥ १ ॥ हारममल हीरेकरमंचिरप्रभि
ल मितविलास साददर्शगुरु हर्षवशमदवदनमनङ्गविकासम् ॥ २ ॥
तरुतरुमुद सिद्धधनं परिंभ्य विह्वलं ॥ स्फुटतरुफेनक दम्बकरमिन
मिवय मुनाजन पुरम् ॥ ३ ॥ श्यामल मृदुलकलेवरमराडल माधिगत
गौरदुकूलं ॥ नीलनलिन मिवपीतपराग पटलभरवलयितमूलम् ॥ ४ ॥
हीरेकरम् ॥ ५ ॥ तरुलट्ट गङ्ग चलचलन मनोहरवदनजनितरति
रागं ॥ स्फुटकमलोदर खेलित खञ्जन युगमिशरादि तदागम् ॥ ६ ॥
वदनकमलपरी शीतनर्मलिन मिहिरम मकराडल शोभं ॥ स्मितरुचिरचि

रसमुल्लसिताधरपल्लभकृतरतिलोभम् ॥ ५ ॥ शसिकिरणच्छुरितोदरज
 चरसुन्दरसकुसुमकेशं ॥ तिमिरोदितविधुमण्डलनिर्मलम् ॥ लयजति
 लकभरदन्तुरितंरतिकेलिकलाभिरधोरं ॥ ६ ॥ निवेशं ॥ विपुल
 पुलकभरदन्तुरितंरतिकेलिकलाभिरधोरं ॥ मणिगणकिरणसमूह
 समुच्चलभ्रूवणशुभगशरीरम् ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभवरिमतविभवंदि
 युगीकृतभ्रूवणभारं ॥ प्रणामत हृदेविनिधाय ह्रीं सुचिरं सुकृतो
 दय सारम् ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ रागविभास ॥

किशलयशयरातलेकरूकामिनिचरणनलिनविनिवेशं तवपदपल्ल
 ववैरिपराभवमिदमनुभवतु सुवेशं ॥ १ ॥ क्षणमनुनारायणमनु
 गतमनुसरराधिके ॥ २ ॥ करकमलेनकरोमिचरणमहमागमि

कमलपत्र

ताशिबिहूरं ॥ क्षणमपिकरसयनोपरिमासिव नूपुरमनु गतिसुरि
 ॥ २ ॥ वदनमुधानिधिगलितममृतमिव वरचयवचनमनुकूलं ॥
 विरहमिवापनयामिपयोधररोधकमुरसिडकूलम् ॥ ३ ॥ प्रियपरि
 रम्भरा रम्भसवलितमिव पुलकितमणिदुर्वायं ॥ मन्दुरसकुच
 कलशं विनिवेशयशोषयमानसिजतापम् ॥ ४ ॥ अधरमुधारसमु
 पनयभामिनिजीवय मृतमिव दारुणं ॥ त्वयिविनिहितमनसं विर
 हानलदग्धकपयमविलासम् ॥ ५ ॥ शशिमुखिमुखरय मणिरस
 नागुणाकराठनिनादं ॥ ममश्रुतेयुगलेपिकरुतविकले शमयचिरद
 वसादम् ॥ ६ ॥ मामतिविकलरूपाविकलिकृतमवलोकितुमधुनेदं ॥
 मीलितिलज्जितमिवनयननवविस्मयिस्मृतस्तिखेदम् ॥ ७ ॥ श्री
 जयदेवभनितमिदमनुपदनिगाततमधुरिणमोदं ॥ जनयतुरसिक

जने सुमनोरम रतिरस भाव विनोदम् ॥ ८ ॥

॥ रागरामकान्ति ॥

कुरु यदुनन्दन चन्दनशिशिरनरे ~~रा~~ राकरेणपयोधरे ॥ मृगम
दपङ्कक मंत्रमनोभव मङ्कलकलशसहोदरे ॥ १ ॥ निजगादशायदुन
न्दने किदतिहृदयानन्दने ॥ २ ॥ अलिकुलगञ्जनमञ्जनकरनि
नायकसायक मोचने ॥ त्वदधर चुम्बनलम्बितकज्जल मुज्ज्वल य
प्रियलोचने ॥ ३ ॥ नयनकरद्वत रुक्मविकास निरासकरेश्रुतिमण्डले
॥ मनोरोजयाशविलासरे शुभ वेष्टनि वशयकुण्डले ॥ ४ ॥ अमरव
यंरचयन्त सुपरिरुचिरं सुचिरं ममसमुरवे ॥ जितकमले विमलेपीर
कर्मय नर्मजनक मलकं सुरवे ॥ ५ ॥ मृगमदरसवलिनीललिनी कुरु
तिलक मालिक राजनिकरे ॥ विहितकनक कलंकमलानन विलम्बित

अमसिकरे ॥ ५ ॥ ममरुचिरेचिकुरेकुरु मानद मानसेजध्वजकनरे
॥ रजिगलितेल लिनेकुसुमा निमिरखण्ड शिखण्ड कडामरे ॥ ६ ॥
सरसद्यतेजघने मम सम्वरदा रावारण कन्दरे ॥ मणिरसनावस
नाभरणानि शुभाशय वासय सुदरे ॥ ७ ॥ श्रीजय
देवभ ~~विष्ट~~ वसिजयदेवदेव ~~हृदय~~ कुरुमण्डले हीरवरणा
सार रणमृतकृतकरुख जनसंजल खलुणा ॥ ८ ॥ ॥

यदुक्षरपदभ्रष्ट मात्राहीनचूयड भवेत्तत्सर्वक्षम्यतां देवप्रति
हृपरमेश्वर ॥

ईदं पुस्तक रामवहाङ्गर राजभट्टारिने लेखि श्री परमेश्वर
प्रीतिगारि चढाभ्यां शुद्ध असुद्ध दुनगयको क्षमा होस

॥ रागराम कव्धि ॥

॥ रागराम कव्धि ॥ ॥ हे मनराम सेंकर स्नेह ॥ वहुनि याहि जंग
जन्म नाहि ॥ १ ॥ ओ सो देह ॥ ॥ भूल भुला जै से उपजित विमुक्त जव
लागि वर सतनेहु ॥ वहि साहि न प्राण जै हे उडि है न रवेह ॥ १ ॥
का भुले नरक नक कामिनि सुधा विसापह ॥ यसव यको कामना आई
हे छुति है जव देह ॥ २ ॥ येक नाम आधार कर मन छाजे सकल संदेह
दास तुलति भजु श्रीपति सुफल करु यह देह ॥ ३ ॥
॥ रागराम कव्धि ॥ ॥ नमो चरिउ कामाता मोक्ष पद लाय थुलितु जिमन स
भावना ॥ ॥ पद्म आसन सें हवाहन सितल तेज जुल चंद्रकला ॥ अति
नमो भालाक गल समोल माल खड्ग धरल पा जो सेतल ॥ १ ॥ सुरमुनि
याग अभय वर विसे दुस्तान व फुल कल ॥ हवै वाजन दंवर सवद

न देवलोक पति मो हजुल ॥ २ ॥ अशानि जुयान मसया जपत पलाय
दिचरणा जिनगन ॥ सो गुलिलोक स दन दिहल आसा अनाथ
सिसे याव पावना ॥ ३ ॥ विनतिया कल्या नेहुने ईश्वर पूरन
मनेथ याव दिन ॥ विष्णु मति पति विष्णु मलयात स्वसिद्धि
विर धिरन ॥ ४ ॥
॥ रागराम कव्धि ॥ ॥ भव भय हरिरे हो गंगा देवि ॥ ॥ पतिन
तारणि दुर्गा हरसिर तरंग ॥ जग के पाप सब भंगा ॥ १ ॥ वैल ह्या
क रोग पातक नासत ॥ निर्मल होय सारिरे ॥ २ ॥ विष्णु पद रज हरि
देव मुनि गतिकारि सेवकी पाप वहाईये ॥ ३ ॥
॥ रागराम कव्धि ॥ ॥ सुनिय भूपति चैत्र नंदन धिर धरि चित को दयि ॥ ॥
दिहि सुपति सो जननिकर वग्न अति भिषन नयि ॥ निगुलि श सैनिय भ

॥ हे मनराम सेंकर ॥

॥ रागराम कव्धि ॥

॥ भव भय हरि ॥

॥ सुनिष ॥

टके असुरनासन को लाये ॥ १ ॥ पुनिसहस्रनयराइ नरेदिहि घंटा सुनादके ॥
 ॥ कुंजलघराट से घराट प्रगत के दिहि दान वक्षोभके ॥ २ ॥ दिहि यम पाते दराड
 भिरवगा दराड में प्रगत करि ॥ दिहि जल पाते पास भुजंग के दैत्य गरावंध
 नथीरे ॥ ३ ॥ दिहि जल पाते दक्ष गरागमिलि विविध अक्षय माला कि ॥ दि
 हि विधि औनि शित जल सहकर क मंदगुहिन कि ॥ ४ ॥ अनत सिंह विरभ
 भरम गानजन मंगत करो भुवसे कलिमल विनासन डख के सकल हरे ॥ ५ ॥
 रागराम कलि ॥ सुन्दर स्यामा मनोहर काहा तुम आई ॥ ६ ॥ गृह
 तोय अगम पथ भोजनहि आई ॥ कोने तेरी माई बाप कोन लेप आई ॥ ७ ॥
 तुम सुंदर देखि हृदय जो धाई ॥ भागो २ आई मेरे फेरि दुवार जाई ॥ ८ ॥
 भागो नहि जा ॥ वरे सुन्दरि जसोदा के लाल ॥ कालिनाग शिर तोरे फूल लेन आई ॥ ९ ॥

जागो २ कालिनाग काल पुरुष आई ॥ ऊलल पले फूल सहस्र भारि ॥ १ ॥
 कोन अपराध मेरे काल योग आई ॥ सहस्र फनि गुफ पोरि समुद्र बाप आई ॥ ५ ॥
 समुद्र २ बाप आई समुद्र सुंदर आई ॥ यक सूरि रंग हड मित्र कालिनाग आई ॥ ६ ॥
 समुद्र २ गरुड मेन समुद्र सुंदर आई ॥ कालिनाग नाथ के जा के से लेप आई ॥ ७ ॥
 हित चितय कमन भारथि जो धाई ॥ कुल मन आनन्द भई गोपाल गित गाई ॥ ८ ॥
 राग राम कलि ॥ जोग याव छाया सदेस उद्व ॥ ९ ॥ नाप नंवि
 न्द्रावनस हित लजु याव वेले सगन वन थरव उपदेस ॥ १ ॥
 बुयग थे विभनेन के गुलिन नितिय मय ॥ हसाति मानिक मोति नीतिया
 व सतजरिन गथे जुय जोगि निया भेस ॥ २ ॥ दतो लेहि हुरि स या
 कसेतल काम या रस ॥ आवहु याय वस रु रेश दरसन मयियान ॥ सिय धु
 न वसरु व मतो लत मथुरा या देस ॥ ३ ॥ कने मते थरव दिन से हल पेधु मति
 न फुटकल जिथ वस भाग्य थास २ पिबि ति नुय कावत याति न मंदत ला
 करुणा योनेस ॥ ४ ॥ गोपाल दास न लाय तमन मते र हाय थथे मड वस यक से
 वियोग गुल से ॥ तायाव याव उजाग जोग कल नामति व मेस ॥ ६ ॥ ॥

॥ आपकी ॥

रागरामकलि+ ॥ आपकी पहिचाने हो नारायण ॥ १ ॥ चतुर्भुजवतु
वेद चतुरतुमाहि संखचक्रगदापञ्चधारिहो ॥ जिनतोहे जियदिन नाको
तुं भजन किहो ॥ ओहैकेटु नाम लियेसर नाहो ॥ २ ॥

॥ सुनहिता ॥

रागरामकलि ॥ सुन हित पातक हरि गंग ॥ १ ॥ गंगागिता
भगवतिभावन ॥ यहिकलियुग गति नरनि ॥ १ ॥ दरसभयसव
पातक नासये ॥ परसभय गतिनरनि ॥ २ ॥ हरिचरणारविंद
सैनिकलि ॥ माहादेवसिद्धर ॥ नि ॥ ३ ॥ सुरदासकेप्रभू तुमा
रिदरसको बारबार गतिनरनि ॥ ४ ॥

॥ जनम ॥

रागरामकलि+ ॥ जनम २ तुव आस मेह सोर ॥ १ ॥ वृष
भआसनगौरिनाथ सदाशिव ॥ १ ॥ भस्मलेपित अंके सिरजरा
गंगे पारवति अर्द्ध गे ॥ १ ॥ त्रिसुलहमरु हाथे वालचन्द्र माथेयक

वगंवरसाथे ॥ २ ॥ गलसोभित भुज गे नवरसरंग राखो मोहि
शिवसंगे ॥ ३ ॥ मोहिअनाथाकि तुमारिदरसको डखनारोसुख
देहो ॥ ४ ॥

॥ दिगुगा ॥

रागरामकलि+ ॥ दिगुगा ल्हानानंमव्याक शिव २ ॥ १ ॥
विषतदहलपु खनावलषलपुः कालकृतगलज्वाक ॥ मभिन
तरलपु असहसेलपु दिभजलपुल्लमजाक ॥ १ ॥ ब्रह्मादिदेवनं
पुजानंभजलपु वाजनहर्षनंथाक ॥ त्रिशुलधरलपु थुमानचरलपु
सितलमुखसविज्याक ॥ २ ॥ श्रीनाग भासेपु तसे प्राहकलपु
पुरुषया ववनामेल्लहाक ॥ सदानंवासदिपू रसतु जियवापु
दिपालियातलनगाक ॥ सदानवासदिपु ॥ ४ ॥

रागरामकली + ॥ ~~सामसंक~~ ॥ ग्यामसंक ~~समभजो~~
 मन ॥ गौरिपति बहे नाम रुक्मिणी संतजन दुखहरण ॥ १ ॥
 बहे पितांबर बहे धंवर गरुडवसाहा चढन ॥ उनकि सुरालि उनकि दम्बर
 आपर सधुनिकर ॥ १ ॥ उनकि अंगविभूति सोभित उनकि टिल
 क विसालन ॥ कृष्ण उनवनमाल सोभा सिवके सोभाव्याल ॥ २ ॥
 उनकि सरवचक्र गदापत्र हे उनकि कर त्रिशूलन ॥ बहे कहा बहे
 पति तपावय बहे अभयवरमूल ॥ ३ ॥ दिनबन्धु दयाल होहु तुमसत
 के दुख हरण ॥ मातुपिता कुलतारनेको सुर मा गतसरन ॥ ४ ॥
 रागरामकली + ॥ ॥ दिनके दुखहरण प्रभुतुम ॥ पति तपावरा
 प्रणालि लज्जा वान असन सरण ॥ ५ ॥ दलकि कौरव पान्दु सुतसे

कपतपासाधरणा ॥ सुवापि विष ~~विष~~ गृह अग्निदि होनाहि पायो
 जलने ॥ १ ॥ दूरे दोष सुहामा आये धाये परसे चरणा ॥ लक्ष्मी अद्भुत
 दिहो दान अधरन धरन ॥ २ ॥ मारिकंसको विध्वंस किहो को उकहे
 गिरधरणा ॥ सुरके प्रभू कृपासागर भक्ति तारन तरण ॥ ३ ॥
 रागरामकली + ॥ ॥ जयदेवदेवी जोगनिन्द्रा जोतिरूपज्वाला मुरिब
 ॥ असुरसकल संहार संकरि देवगण सब कियो मुरिब ॥ ४ ॥ जयने
 अम्बा अम्बिके निजभक्त अभिमत दायिनि ॥ कालिका करख डुरवण
 र धनुज सोभित दायिनि ॥ ५ ॥ सिरसा सिद्ध सुवर्ण करण्ड सिद्धि जानि
 त्रिशूलनि ॥ तंत्रोहे नृपसिंह संपयो सान रूप हरा हरि ॥ तोहे देत
 कौनो बलम्ब धनजन पदमपद परमेश्वर ॥ ६ ॥

रागरामकास्त्रे ॥ मागतमारवनरोति गोपाल पा ॥ रे ॥ १ ॥ मेरेगोपा
 लजिके रोतिवनादे बोयक छोनियक ब्रमोति ॥ १ ॥ मेरेगोपालजिके
 जामालादेवो अवरपिताम्बाधोति ॥ २ ॥ मेरेगोपालजिके तोपिकामिद्या
 देवो विवविवाहिरालालामोति ॥ ३ ॥ मेरेगोपालजिके व्याहाकरादेवो वडेर
 रूपकेव्योति ॥ ४ ॥ मेरेगोपालजिके महत्वनादेवो कंचनचक्रकीजोति ॥ ५ ॥
 लमका ॥ जनमन भोलानाथलसंकर ॥ ६ ॥ वासयायदेसमसान थायस
 लायफायवधंवर ॥ विश्रुतेबुसा हस पतिवी निसा रसभूतगगा संगदि
 गंवर ॥ १ ॥ बाहानगसेजुल ज्याथदोहन जोसाताहालत्रिशुल ॥ दमरुवाजन
 थाथिन साजन थमथ्येथम आनेरसतार ॥ २ ॥ ससलजुलजन देविमवो
 ॥ जन विभद्रलतोलतल ॥ धमसानपातथन जससहितन दक्षप्रजापति
 वलिबिल ॥ ३ ॥ सातेयाविरहन जोगउजोगन सकलभोवि तोलतल ॥
 तमन मिथान मिपितियाव रेन कामदेवल कुरकल ॥ ४ ॥ मनन नुमनि

व ह्रिधननामकाव जुयिवपापनिवारन ॥ जोगियाउगलसजोगथतनमन
 जोतिरुपमेश्वर ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

~~सुन्दरस्याममनोहरकाहोनुमआई ॥ १ ॥ गुलनोराअगमपंथ
 भोजनाहआई ॥ कोनेतोराआई बाप कोनेपडाई ॥ १ ॥ तुमसुन्दरदेवि हृदय
 जोदाई ॥ भागो २ भाई मेरे फेरि दुवारआई ॥ २ ॥ भागोनाहजावर सुंद
 रिजमोक्ष केलाव ॥ कालिनागसि तोरि फलेलेवआई ॥ ३ ॥ जागो १ कालिनाग
 कानपुरुषआई ॥~~

रागवल्हारि ॥ श्रीजय २ उग्रतोराजननि ॥ १ ॥ मतिचूरपखतभवानि
 दिवासदिक ॥ हवनविज्याकरसन ॥ १ ॥ जगतपाथकसानि नेपालयाउग्रामनि
 दिगुवामकासेजुलनानि ॥ २ ॥ भगतवननआक वयलिख बुनिकाक ॥
 वासुर लिनावस्याक ॥ ३ ॥ लहाकलपातनमन छिपानिनिपायाध्यानपालि
 कोसतिहने सनान ॥ ४ ॥ जन्मसमिनागसज नेपानवासवसरजेष्ठभुक्त

पंचमि तिथि ॥ ५ ॥

कोरथ

राग काफि ॥ ॥ कोरथप्रभुजुके गाउं मेरिरसना ॥ १ ॥

कोटिजननकरदारनपाउं ॥ वहिकृपा र न हरिहरध्याउ ॥ १ ॥

जाचक नुलसिदास करजोरे ॥ कृपाकरत सबमुखपायो ॥ २ ॥ पारवरा

जब भयोहोदयाला कहनानकतव ॥ छुतहिजंजाला ॥ ३ ॥

कोरुका

राग काफि ॥ ॥ काहेकोदेहधरे भजनवीनु ॥ १ ॥ नवहरि

भजन साधुकेसंगत ॥ गुरुसेवानकरे ॥ १ ॥ भूखेकोअन्नदियो नहि कवहु

न ॥ ~~कवहु~~तिरथ पगनधरे ॥ २ ॥ कहयकविर गुरुभजनविनु ॥ हुयज

नम भारपरे ॥ ३ ॥

जमुनामे

राग ॥ काफि ॥ जमुनामेजायपयो कन्हैयामोरे ॥ १ ॥ यह

जमुनाके कहियेपानि देखाहि यादरे ॥ १ ॥ माताजसोदा थादिरोके

नयनननिरधरे ॥ २ ॥ वैष्णवाताल कालिनाग नाथे ॥ फनिपरनिन्द

कियो ॥ ३ ॥ चन्द्रसखि हितवा ॥ लक्ष्मणद्वि ॥ चरणाकमलचितधरे ॥ ४ ॥

विधिवाहा

राग काफि ॥ ॥ विधिवाहा येन आहें रस वा हरजोगी ॥ १ ॥

डिमिके २ दमरुवाजे पातारि फात वाघछाला ॥ पसर २ शिव भाग बापे

वाजनवाजे गालरस ॥ १ ॥ नहिदेखोहातिनहिदेखोघोडा नहिदेखोवा

य मुखपान ॥ यकवेलासिव विभुत उतालल देखोजुबाईके रूप ॥ २ ॥

जबमाहादेव पीदाचरे धर जटाधुरतिवहे सिरगंगा ॥ जटाहिगंगाभस्म

अंगा नयराकी चाहुं दंसाये ॥ ३ ॥ भनयविआपतिमुनहोमंदागिनि

अर्द्धचंद्र सिरसंभो ॥ ~~जगमग~~ जगमग २ तेलिकेतारा गावत

भगवतिदास ॥ ४ ॥

नवभयनारे

राग काफि ॥ ॥ भवभयनारेदेवहे किततिस्थाने ॥ १ ॥

शिवविधि नहि जप नहि मनमें उदास्य सुमरन भैरवनाथ ॥ ईह गाल
जपत पजानत नहि के स्पे विधि जपत पनाथ ॥ १ ॥ दीनतरन करपाल करंजक
तुव विनु नहि भूतनाथ ॥ जगत कृपानिधि पापहर गा यभू सुमरन पसु
पतिनाथ ॥ २ ॥ अनत महिपति जगत रसिरोमनि पारवति पतिनाथ ॥
चरण कमल पर सकल भगत जन दास को गति देहो नाथ ॥ ३ ॥

मोरी

राग ॥ काफि ॥ मोरी मोपिया विनु पिय को जानि ॥ १ ॥
दरद दिरो दाह्य कहुनाहि काहे को वैअबोला ॥ १ ॥ जात न लागी
सोहित न जानो ॥ काहे को वैखत लगाय ॥ २ ॥ चन्द्रसखि हिन बाल कूल
छवि ॥ विलाकि कपत वृक्षाय ॥ ३ ॥ ॥ ॥

भजने

राग ॥ काफि ॥ भजले हो राम संधानि प्यारे मन भजले हो ॥ १ ॥
क्यातेरे घर न वत बाजा क्यातेरे घर हाति ॥ दरद गाहा देवान बोलाये
सिर पर काल पशति ॥ १ ॥ जुठि माया जुठि काया जुठि कुटुंब कुल

नारि ॥ यह संसार में वनिज को आया कर सो दाउ थिजासि ॥ २ ॥
कह्य कविर सुन भाई साधु यह जुग पदम उदासि ॥ राम राय जवलेखा
जाग्य ॥ चंद्र सूर्य इनु साधि ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

जोधा

राग ॥ काफि ॥ जोधावै सोहि पावै साविय अंध को ॥ १ ॥
ब्रंशवेद पधन द्वारे तेरे ॥ ईंद्र आरति उतारे ॥ १ ॥ नारद भजन करत निर
वास ॥ शिव शिव करत उकारे ॥ २ ॥ मन वांछित फल देहो भवानि ॥ जान सेन
जस गाये ॥ ३ ॥

आनंद

राग ॥ काफि ॥ आनंद रूप भवानि जय ॥ १ ॥ तुमि तारा तुम त्रिपु
रास्यामा ॥ तुमि निगमार्गे भवानि ॥ १ ॥ रिपु कुल नासिनि बुद्धि विलासिनि ॥
दुर्मति दहन कृपानि ॥ २ ॥ दुर्गति दहनि अभय वरदानि ॥ सुमरत निर्गुन वा
नि ॥ ३ ॥ विद्यापति पर कृपा कीजे ॥ नग कोट कीरानि ॥ ४ ॥

चरणराजा

राग काफि ॥ चरणराजाचन्द्र श्रीवानमुकन्द प्रभुपारे तेरि
 गतलेखिनमनन्द ॥ १ ॥ जन्मलियवमुदेवकीघर हुतिगयेसवफन्द
 ॥ हीनकरेजसोमानिघर आयेनामधरे लन्दनन्द ॥ १ ॥ खरवखर जववाधे
 दामरतोडोदोउकदम्ब ॥ दरसनदिजेमोको कुवलकन्देपा मुक्तिकरे
 तुरंत ॥ २ ॥ खेलत २ गीदुभईहे जमुनामे कूधपन्द ॥ वैधिपाताव
 कालिनागनाथे फनिपर नीद कर्नई ॥ ३ ॥ कपटहेतुरंतहे पुननातारे
 जाके पानकरन्द ॥ मातिवात मुखदेविजसोदा तिनलोकदेखन्द
 ॥ ४ ॥ मुखकासागर डरकाहरेया पूरणपरमानन्द ॥ गोपिनाथ
 प्रभु ऊँजविहारि श्रीविन्द्रावनचन्द ॥ ५ ॥

गिरिराज

राग काफि ॥ गिरिराजकमरिजय ३ ॥ १ ॥ थक ३ यकरह २
 दन्तारह २ ॥ पासलल आदि महेसागिरि ॥ १ ॥ चन्दमुन्द समालल

देविभवानि

घेरि ॥ करखपर सो नृपतिमहंत ॥ २ ॥ भनयनामदेवा दासकिदास
 अवनमे दोदेवी चरणकिआस ॥ ३ ॥
 राग काफि ॥ देविभवानिजनानिभवानि सिंहचरु वरचारीनी
 दैत्यविन्दविदारिनि मंगलकारिनि ॥ १ ॥ मुद्रमालिनिकलाल
 करधरवड्ड वपर धारिणि ॥ भयहारिभवतारिणि जगदम्बिके ॥ असुरसुर
 सुरनरलोक मोहिनि चन्दभुन्द मुदारिनि मंगलकारिणि ॥ १ ॥ सजलजलध
 र वदनतरुवन विकतदशनप्रकासिनि ॥ खरनासिनिगिरिवासिनि जय
 चरिजेके ॥ चरणपंकज दासवदनतभक्त अनुगततारिणि ॥ २ ॥

मैतानाम देवाना

राग काफि ॥ मैतानामदेवा ना डुनि ॥ आंवहु रिहो ॥ १ ॥
 ओजत २ पायोहीरनामा ॥ तोरिगारिका भयो अभिमाना ॥ १ ॥ क्याकरेमाना
 पिता सुनवन्धुभाई ॥ हंसनिरसय यकलाजाई ॥ २ ॥ विषघोतिदियो

मेको हरि परसाद ॥ पियल अघायल अम्बर पाया ॥ ३ ॥ मिरा के प्रभू गिरि
धर लाल ॥ तुमारे दरस बिनु भयो रे विद्वान ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

राग काफि ॥ ॥ धाकर के दरवार डनियारे चलोरे ॥ ५ ॥ जनम
कि दुषिया पाप कि भरिया कौरे नहि मेरे हाठ ॥ ६ ॥ धिरे धिरे जावना पाप
हुतावना ॥ कोहिकरो मेरी साथ ॥ ७ ॥ चारियक जिवना आधिर मरनायक
वाहिर घुनाथ ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग काफि ॥ ॥ कामनिका मोक्षा देवि हो राजरानि जय जय
ज्वाला मुरवि ॥ १ ॥ चारु वेद तुं वधानि संकर देवाभरि ॥ अंजनि मे भज २
नि मे श्री वागवानि ॥ ३ ॥ त्रिभुवन रानि त्वहे जगत कि जोति ॥ तुहि रिपु कुल
भंजिनि भक्त रक्षनि ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग काफि ॥ ॥ नाचे सदाशिव आदिगुरु अगर वं कि डिमि कि २

वाजे दमरु ॥ १ ॥ अक स्त्राय विक्राय घाय ॥ चतुर जोगिनि का जोगि
का संग नाचे नाचे अवधूत ॥ २ ॥ गंगा सागरति रथ फिराय ॥ अरय गंगा जल
शिव को चढाय ॥ ३ ॥ राजा भय हनुमन्त शिव जिके अंरा ॥ जिवन मेरे गिनुन
मोरे अंग ॥ ४ ॥

राग काफि ॥ ॥ किसि बाल स्वहनं हलसलो व विजे नानं उन
थव्या च्चाप वसमान ॥ १ ॥ गुनद को याकः लानथान कासे प्यावन
सदान ॥ २ ॥ अद्भुत गुलध्वरुपनं ॥ ३ ॥

राग धमाल ॥ भजो मन श्री गणेशायक मङ्गलमन्त्रा ॥ १ ॥

भजो मन

अंगमनोहर गजावरोवन सोभित है वक्ररुहा ॥ १ ॥ मनुक उपरचन्द्र
कलाधर नागफनिसिख वन्ता ॥ परसुमोदक रुद्राक्षमाला चारु
जाहि धरन्ता ॥ २ ॥ सुनसुनिसव ध्यान धरतु है सिद्धि गरो सबि
ता ॥ ३ ॥ जोगिरि नासुतनास पुकारे सो नर के डुरवहन्ता ॥ ३ ॥

नाकि गो

राग धमाल ॥ ताकि मेरी दिख के घोषा आगा कि हरिरङ्गलगा
संतो रामरङ्ग ॥ १ ॥ जव मै बढि मान गुमानी साहेब मुख न बोले ॥
अवबन्दि भई घाघ मिलाव साहेब अंतर वो पाके ॥ १ ॥ साहेब मिला

वृद्धा

रगकाफि ॥ वधवारंगिया भंगिया भोला ॥ चंदनतिलक सोभे
माथे हि दोलाय ॥ १ ॥ वाजेला गि दमरु दिमिकि २ आ ॥ नाचेला
गि बुढवा घुमरी २ आ ॥ १ ॥ अस्तससि गले माला नागरलिला ॥
असमलेपित सिख गले रुद्रमाला ॥ २ ॥ भनये विद्यापति शिख के
लिला जयावजगत पति नयावलिला ॥ ३ ॥

जननि भवानी

रागकाफि ॥ प्र ॥ जननि भवानी त्रिभुवन पालिनि रक्षसदा दिन जा
नि ॥ १ ॥ सुमनि सुमोक्तिक सुघातिक सुंदर विविध विचित्र वीसात ॥
सुजादित रत्न कनक धनु पुष्पकिराण छवि जाल ॥ १ ॥ अतिकमनि
यन विनय ह्वादिनि सोभा वारन न जाई ॥ यह हम अर्पन तुमको भ
वानि कूरुं भक्ति लगाई ॥ २ ॥ अनंत सिंह पिर भानसि पुजन भक्ति
जनम नहि न ॥ जनम सकल कि कलुष विनासत गान भजन किरिग
॥ ३ ॥

रामभक्त

रागकारि ॥ व ॥ हेममभक्त सुरथ समाधिवांछिन पररा होई ॥ क ॥
 तरवजगदंब प्रसन्न भई जव जिनकि रूप अनुप ॥ बोलनि हेनी जभक्त
 केउपर उमकिकरुणारूप ॥ १ ॥ हे धरनि पाति हे कलनन्दन जो वांछित
 तपकिन्हु ॥ सो ~~सुख~~ हमसे सव पररा होई तुम्ह भय हमदिन्हु ॥ २ ॥
 भनतसि हविर अचं वचन यह दिन्हि मनो रथ दान ॥ जो जन भक्ति
 भजन केरे नित पावन सो वरदान ॥ ३ ॥ सुख

समलकर

रागकारि ॥ व ॥ समलकरे अद्भुत जला सुरकि सुन ॥ क ॥
 लांगुलसै अति सागरतादिन जलमय भुकी दिन्हि ॥ किंपकरी डूनु भू
 ग सुनि धरा खंड २ घन किन्हु ॥ १ ॥ स्वासनसै गगन विरफे कन
 सै त समुह ॥ यह रित कोपन सै ज्वलित भई आये महि वसन मुख
 ॥ २ ॥ सो महि सासुर कितमे देवत भगवति को पडि किन्हि ॥ सो

अति दुस्त महिष विनासन ईश्वर प्रेम किनि ॥ ३ ॥ भावनसिंह
 विर पद सुंदर आहव कि जस गानु ॥ गावन सै मनु पसत नासन
 देत सदा कल्याण ॥ ४ ॥

रामभक्त

रागकारि ॥ व ॥ धुमकरे महि सासुर महति कोप करे ॥ क ॥
 प्रथम किसेने निपात करि जव केसरी हनन को धाये ॥ सो महि सा
 सुर कि छल देषि क भगवति को पच डाय ॥ १ ॥ कोपि भवति देषि
 माहाविर सोपि कोप अति किन्हि ॥ सुरक्षान सै अमिष नन के ना
 सत भ्रम किन्हि ॥ २ ॥ अंगन सै अति उच्च गिरि धरि छेप दना दहि
 किन्हु ॥ वेगन सै सुर धरन सै भूमि खराद वं ड करि दिन्हि ॥ ३ ॥ भा
 वनसिंह विर विरकि रस भयन सै भुभ किन्हु ॥ भगत करि भय
 विनासन आपद को हीरी लीह ॥ ४ ॥

श्रीलक्ष्मीनारायण

रगकाफि ॥ व ॥ श्रीलक्ष्मीनारायण भजलेहो संकस्तमोचन
नामहोजमो भजनकरे निहकामरेमन ॥ र्क ॥ मातापितावनिता
सुन न्यारे यनहि हयकोहि तेरोरे ॥ अंतरामकोहि आपननाही
जंगलहोनवसेरारे ॥ १ ॥ तनमनधनजिवनपाननुमअवरनहि
कोहि तेरोरे ॥ रामप्रसादगियसोचन हियकोहि यहविधिअन
रनपारारे ॥ २ ॥

जोगिहवन

रगकाफि ॥ ब ॥ जोगिहवनजंगलगेन वालारमिगेतो ॥ र्क ॥
दोनिमोनिमानैया दसदरवाजा ॥ पाचप्रधानकथिमनराजा ॥
॥ १ ॥ जदिगेतो माधैया उडिगेनो ॥ छायागरोकविचअगम
अपारा ॥ २ ॥ कहयकविरसुनोभाईसाधु हमकेरोवयनो
रामदोहाई ॥ ३ ॥

अजुगामा

रगकाफि ॥ प्र ॥ आजुगामा मोरेघर पाहुनाआये दोनिनमो
निद दियाचंदनकेले ॥ र्क ॥ दोनिनमोनिदोलाय ॥ सितारा
नि ॥ वैरागिरानिगुव केसे ॥ १ ॥ एकसधिआवन पहंगविदा
बल ॥ एकसधिआवन चिरंगमिनाये ॥ २ ॥ एकसधिआवन
पानखेलाय ॥ एकसधिआवन बेनिदोलाय ॥ ३ ॥ गयागजाधर
गंगानोहाय ॥ कसिवीस्पेध ॥ प्रयागवेनिमाधव उधिचलिमनि
जगनाथ ॥ ४ ॥ रामलक्ष्मन भरथसअघन ॥ दसरथनंदसो
हायि ॥ ५ ॥ तीगाएनी

जयश्रीगामा

रगकाफि ॥ व ॥ जय २ वागमतिलोकयागतिअतिसति
सुंदर अति ॥ र्क ॥ त्रिथसमुल श्रीसंखमुल परवनबुल
सिवयाकुल ॥ लखयानुल ह्रुडजापुलउतुजाउलआनंदजुल ॥ १ ॥

मोतियाउनफियाजाचुन बयानिगुन मेवमडुन ॥ दैत्यनंकुनदह
 पेथुन श्रीकृष्णजुन धोनप्रभुन ॥ २ ॥ व्यगर्नल्लाकगनमधाक
 पवित्रयाक गुननलाक ॥ वकह्मदको भगतिवजाक मजवद्धा
 क सुवमग्पाक ॥ ३ ॥ वसयानाम कावननान अतिजाभिन
 वयासेवान ॥ वसयाध्यान यायजीनान परन्तध्यान वनेजि
 अन ॥ ४ ॥

हरि
 गो
 दा
 सी

रागकाफि ॥ ५ ॥ हरसो लागिरहिरेभाई मेरेवनत २ वनिजागा
 ॥ ६ ॥ हरकाभजनकरो घटभितर छाडोसवतेचतुरारि ॥ सेवाबंध
 नअधिरहोतत सहजमिलेरघुरारि ॥ ७ ॥ दोलथडुनियामाल
 खजाना वनिज्यावेचनलारि ॥ वहिदेवतमोहिहोतो अथवा
 योज ववर नहिपारि ॥ ८ ॥ ध्रुवप्रल्लाद नामदेनोभाई सजना

जातकसाई ॥ हरसोसरवर कौनकरिय गुरुनानकसवदसु
 नारि ॥ १ ॥ मलक्षुमनभरथसबुधन हनुमानसुखदाई ॥
 नामदेवजिने कहनालागे लागिकर्महियेहि ॥ २ ॥ ऐसे
 ध्यानधरो घटभितर रामरिश्न भिजागी ॥ दीरासहस
 भजन ॥

राग काफि ॥ प्र ॥ जाईये गरापतिजगवन्दनः संकरकुवरभवा
 नि नंदन ॥ १ ॥ सिद्धिसरगागजवदनविनायक ॥ विजावादि
 ये बुद्धिविदाना ॥ २ ॥ मोदकपियाभुज मंगलदाना ॥ कृपा
 सिंधु सोभासुखदायक ॥ ३ ॥ जाचकतुलसिदासकर जोरि
 वसाहिरामसिया मानसमोहन ॥ ४ ॥

रागकाफि ॥ ॥ प्र ॥ भीमवलि सरणा गतने रिधास
 ॥ क ॥ कपतिमु रुख दुर्जो धनराजा बाधिग योजक्षराजा ॥
 कुलकिनामरावन कारणा तादिये विधिविनासि ॥ १ ॥
 दुस्मदुसासन अतिगुमान दुर्पतिके मान उतारे ॥ हाकिगया
 हातिचटि वैरे रक्तपिबयन खफारे ॥ २ ॥ जिनके नाम
 लिये जोगाय पंथ चले मन कासि ॥ केरजनरासि कोहिज
 नमको प्रजितो हे अबिनासि ॥ ३ ॥ कहत उदासि भक्त
 तुमारि जनम २ तीर दासि ॥ भीममाहावलि छत्र
 विराजे छुतिगयो जम कि फासि ॥ ४ ॥

एगकाफि ॥ ॥ आनुज्यावा एति के घर आनी द वधा
 ई ॥ क ॥ भैरव भूत मृदेग वजावे ॥ नाचत जोगिनी
 संग सदा शिवः मगन भई सवरीग ॥ १ ॥ एक नारद
 एक प्रसादि गावे ॥ चौदी स चंद्र दो लाये ॥ हरगन सब
 फरकि लगि तु व के से ॥ २ ॥ भक्त जन मीठी कर जोरे
 धारे ॥ जये जये जये गोरि एज कु मारि चर एति आ
 सह माणे ॥ ३ ॥

118411

113311

रागधमाल ॥ ॥ भजो मन श्री गंगा नायक मंगल मन्ता ॥ १ ॥
 अंग मनोहर गजवरोवन सोभित हें यक दन्ता ॥ मतुक उपर चंद्र
 कलाधर नागफनिसिर बंता ॥ परसुमोदकरुद्राक्षमाला चार
 भूजाहि धरंता ॥ २ ॥ सुस्तर मुनिसवध्या न धरतु हे सिद्धि गणो
 श निरंता ॥ जोगिरिजा मुन नाम पुकारे सो नर के दुख
 हरंता ॥ ३ ॥

रागधमाल ॥ ताकि मेरी दिल कि घोषा भागा कि हीर रंग लगा
 संतो राम रंग ॥ १ ॥ जब मे चाँद मान गुमानि सोहेव मुख हुन
 बोलि ॥ अब वंदि भई वास मिलाये सोहेव अंतर बोधा की ॥ १ ॥ सोहेव

॥ ६८ ॥

मिला अन्तर बोधा ॥ स्पज लिया मुख देना ॥ रोम रपिया संग राजि प्रेम पाराम
 को पिया कि ॥ २ ॥ लोकराज कल कि मल जादा तोर दारो जैसै धागा ॥ हीर
 जन हीर सो योन मिजाय सोने मो मिलन स्वाहा गा कि ॥ ३ ॥ साचा दिल सो सा
 चा सोहेव जु राम न सो भागा ॥ कह सक विरगुर परो पाया भाग्य हमारा
 जागा कि ॥ ४ ॥

राग धमाल ॥ मथुरा सहर्ष न विष्णु क भाल पागुनिके ना ॥ १ ॥
 सुन्दर सुघन स्पाम राम वालय ज्वाल मुना ॥ मनन मान नयान पायल
 पालि सब दयका ॥ होव पलेखान जोल खाल मुसूई न्हिलाने खया खना
 नई मोहन मिसान ति सावत फेर मचाव ॥ २ ॥ अने गणपति पनिस आसा
 दन ध्वष नाव सुदेव देव कि यामन स आते हर्ष विया ॥ परम मुख के स
 किसि आदि स्याक हिला भगवति भावन लाय थास विहु ये हाक हसियाव ॥ ३ ॥

नेपाल

राग धमातु ॥ नेपालसरसनं विष्णुक नैरवी सहित नं धि ॥ १ ॥
 त्रिभुलदमरुषकुविन्दु पात्रजोसे दिक ॥ वरअभयदानविसेभकरणा
 याक ॥ मुराडमालास्वगोलामेखारवन्हागंभयंकररूप ॥ विवोजितदरसनधि
 पालिया कोसनिवजितगाक ॥ १ ॥ अनेगडुविजनपनिसेनं आसातयाव ॥
 चोताछिके भक्तिभावसोसे धिने सेवकपालगायाक दुस्तानवफलकसो
 देवमाने आनंद पाक ॥ करजोरिहक छया ॥ दोकोविंको अपराधदको क्षमा
 याक ॥ २ ॥

कुशदा

राग धमातु ॥ ॥ कृष्णदूरेलनमतिजावल मेरि हाहु आवंगि ॥ १ ॥
 मक्षरूपहमसंखासुरमापें चारुवेदलेआया ॥ स्वद्विदेहा ॥
 कोदिया ताहानंद वा हाहु माई मेरे हाहु कैसे होगा ॥ १ ॥ वामनरूपहम
 दलेवालिराजा तिनिपगयोवसुधाउ ॥ बलिको बाधि पातालपठायाताहान

देखा ॥ २ ॥ वामरूपहमारा वनमाप दससिरविसभुजा ॥ विभिषणको
 राजतिलक दिया ॥ ३ ॥ कृष्णरूपहमकंसपछाडे वसुदेववंदिछोशया
 उग्रसेनको राजतिलक दिया ॥ ४ ॥ कुंभ २ हम गौवा चढाया सकलविंश
 वनजाय ॥ कालिनागको मथनजो किया ॥ ५ ॥ बालरूपमातिजोयाया तिनि
 लोक देवाया ॥ सुरदासप्रभू अभि गतलेला मोकोवनदिहो जाउं ॥ ६ ॥
 रा ॥ ॥ ॥ चधे वेदकोराहाहे जिनके बल रामनजाना

॥ १ ॥ राग काफी ॥ प्रताल ॥

गोरे

गोईये गरापनिजगवन्दन संकरकुप्रभवानि नंदन ॥ १ ॥ सिद्धि
 सरसागजवदतविनायक ॥ विद्यावाधियु वाधिविदाया ॥ १ ॥ मोदक
 पियाभूज मंगलसदा ॥ कृपासिंधु सोभाभुभदायक ॥ २ ॥ जाच
 कतुलासिदासकरजोरावसाहि समसियामानममोहन ॥ ३ ॥

जिमवान

रागकाफी ॥ प्रता ॥ भीमवलि सरगगत तोरि आस ॥ क ॥ कपनि सुख
 ख उज्यो धनराजा बाधिय जंक्षराजा ॥ कुलकि नाम राखन कारणा
 तादिय विधि विनासि ॥ १ ॥ उरु उरु सासन आने गुमान उपति के मान
 उतारे ॥ हाकि गयो छानि चाटवै थ्ये रक्त पियन वफारे ॥ ३ ॥ जिनके
 नाम लिय जोगाय पंथ चले मन कासि ॥ केजग राखे कोहि जनमने
 पुजि नोहे आविनासि ॥ ३ ॥ कहत उदासि अक तुमारी जनम शेरि
 दासि ॥ भीम महाबलि छत्रा विरागे छुति गयो जम कि फासि ॥ ४ ॥

उधो पुन

रागभी प्राम् ॥ ॥ उधो पुन वाजत अनंत वढाई ॥ क ॥ नृप
 दसरथ जुके राम जन्म आयि जजमोति चीज लुटाई ॥ सुरब्रह्मादि वटे
 विमान गगरा सुमन ज्हरि लाई ॥ २ ॥ भरत सनु घन लक्ष्म जन्मे
 सारि पान मंगल गाई ॥ सुत मागत वरिंद गन भिछुक जप्तरि
 भुवन दायि ॥ ३ ॥ भरम शृंगार चरेवन का मिरिः नव सत साज
 सजाई ॥ तुलसि दास प्रभू तुमारी दरस को मतई व्हा फल पाई ॥ ४ ॥
 राग भी प्राम् ॥ प्र ॥ भैरवि नारनि भगवानि देवि संकरानि भवा
 नि ॥ क ॥ समर असुर संहार वषेर परम शिव परमेश्वरि ॥
 पाप परिहर भार भजने जगनि मुनि मय रजिनि ॥ १ ॥ चरणा सेव
 क जानि अनुगतरावि ये हो महेश्वरि ॥ तुमहि करुणा रूप
 त्रिभुवन वंदिनि गिरि नीतिनि ॥ २ ॥ पति तनारिण पद मपद

भैरवि

वरदायिणि भुवनेश्वरि ॥ भनन भगवति दास निसिदिन चरणासरन
गुहेश्वरि ॥ ३ ॥

गिरिनन्द

रागभिप्राप्त ॥ ॥ गिरिनन्द निकुमारि हेमाहं माया ॥ ५ ॥
सेवक पालिनि संकष्ट तारिणि भवभयहारिनि ॥ मुनिजनमानि
जगदुरवहरनि डरमतिदहनि ॥ १ ॥ दिनिकुलनासिनि करुणा
दयानिधि सुखरदायिनिरानि ॥ जगतजननि संकरमनि दिज
पातिरावो ॥ २ ॥

निरंजन

रागभिप्राप्त ॥ ॥ निरंजन देवा राजा भूतनाथ भजामि ॥ ५ ॥
अमुरनासक भक्तपालक जगतनाथ महेश्वर ॥ मकुतसोभितनाग
कुराडलभुंयरूपमहेश्वर ॥ १ ॥ त्रिभुवनकरधर दमरुवाजिनदिभि
कि २ हिनि २ भूतप्रेतपिमाच गनसव घराठ ताल कुनुं २ ॥ २ ॥

मोहेत्रिभुवन नाथनाचन जोगिनि सहशुद्ध ॥ भनन भूपति भक्त
जानन वंधपासविनासन ॥ ३ ॥

जगद्वेश

राग भीष्मास ॥ ॥ जगद्वेश भवानि चरणासेयिये ॥ ५ ॥
सुखसुखितुव ध्यानधरतुहे ॥ ब्रह्मावेद पढे ॥ १ ॥ संतनको प्रतिपाल
करतुम ॥ तुल ॥ हो उल्लस महारने ॥ २ ॥ नामप्रसादतुव ससन
रे आर्ह ॥ पतिजनको गतिदेहो ॥ ३ ॥

मोहिनी

रागभिप्राप्त ॥ ॥ मेरोगिरिधारि जिसे कौन लडे ॥ ५ ॥
यागिरिधारक चरणाकमलपर वारिदारो संगरि ॥ १ ॥ चलोरि मैया
मेरे तोहिवताउ जोहमे जगारि ॥ १ ॥ गोवावदनपितांवर वढे
चंचलचपलखरि ॥ २ ॥ तेरहि गिरिधर बन २ फेरि हाथलिये ल
कडि ॥ भुजामेरी रि चिरमाफोरि अवाफोरि गगारि ॥ ३ ॥ तुमनरु

निहम गिरिधर बालव कैसे बुझगारि ॥ चरमे बालव वनमो धुती
 को सुक देखे दारि ॥ ४ ॥ गिरिधर भरभर असुवा दारे आपू हसे रूगारि ॥
 याहिसे तुम कहू वनयोरे ओ मेरे संग पारि ॥ ५ ॥ हमारि म्या वन के योरे ज सो
 दा सुनक वन पारि ॥ मुरदास के प्रभू वनमो या ड तव मेरे वान बडि ॥ ६ ॥
 राग प्रभात ॥ प्र ॥ न्येन सखि जिवि नानि प्रभु दिके पिरानि रस या
 वस मजुय जिह्याय ॥ ७ ॥ भुवन भुंदर प्रविन नागत काम भाव मखे नानि
 ॥ बाल २ नुगल समदन बाल प्रहार फादि नया ॥ १ ॥ चन्द्र चकोर या
 उपमा सिन्धु हया ॥ पुरुष रतन जिव हया ॥ चन्द्र मडन ~~चन्द्र मडन~~
~~चन्द्र~~ चवल महोष्ये परं तु रस हय मय्ये ॥ २ ॥ मदने भुवन स ज्वलन
 ज्वलया गोकुल गोपि निया स्था मिया ॥ राज २ अति विर सुंदर लहा कल
 परनाप सिंह या ॥ ३ ॥

राग श्री प्रभात ॥ प्र ॥ गणपति गणनाथ प्रभू दिके विनानि मस या
 जपत प ध्यान याय ॥ १ ॥ मडने भुवन स रूप ज्वलया गौरि पारि
 पुत्र ॥ पद्म आसन सिंह वाहन सिरस मडन स चन्द्र तया ॥ १ ॥
 वदन हे गुनिया तेज सूरज या विस्व कर्म शो ह मया ॥ रिद्धि सिद्धि देविनि
 ह निखेत मे पिठ गणायानाथ या ॥ २ ॥ लहा कल अनाथ या माया मोह
 दको फटकी पाप या भार या ॥ आदि अग म प्रभु या माहिमा लहाय म
 फु ज्वल या ॥ ३ ॥

राग श्री प्रभात ॥ प्र ॥ चनो हो विदुर घर जायिये उधव ॥ १ ॥ जाके
 चर को ने काम नहि है जाहा आद ताहा जायिये ॥ चरण पयालिके
 चरणोदक लिजे रुचि २ भोग लगायिये ॥ २ ॥ तुम तो है प्रभू अंतर
 ज्यामि तुम सो कां हो छपाई ॥ मुरदास के प्रभू तुमारी दरसको विदुर के
 पाप वहायिये ॥ ३ ॥

वाराणसी

रागभिप्रास ॥ प्र ॥ चरणासरा तेरिमाई गंगादेवि ॥ क ॥ हरसिर
धारनि त्रिभुवनताराणि सुरनरके उदयकारिणि ॥ जन्मके डुरवविनास
कारिनि भवसागरमो उत्तारिणि ॥ १ ॥ दुस्तकोनामिनि संतजनपालि
नि निजराखो शिवरानि ॥ अकृजनेके पापवहारिनि चाहि २ जगएनि
॥ २ ॥ दुर्गा देवि दुर्मतिहारिनि डुरवडुरकर सन्तजानि ॥ अननसेवक
जन्त तु त्रगुणगाय अगमअपारवरवानि ॥ ३ ॥ ॥

त्रिभुवन

रागप्रभास ॥ प्र ॥ त्रिभुवनलोकयानाथ भैरव ॥ क ॥ नेपाल
मंदलपति भगतजनया गति विज्याक पचलि छिरसन ॥ १ ॥ सेवा
याक छत्र जाक पापयाक छत्र महिक ॥ छिगुनामकावल मद्याक ॥ २ ॥
सेवकयान्दित २ छिगुनामकाय ध्यान याव छिन मनोरथपुरा ॥ ३ ॥

दियारा

रागप्रभास ॥ व ॥ दियारा मा परदिया हो आजु भक्ति घरि २ किया
हो ॥ क ॥ चिन्तन जाको हरयक चिन्ता ॥ दुख हरनाको चिन्ता हो

दे हो प्रभास

॥ १ ॥ जाको धावे सुरधन पावे ॥ मंगलता परदीया हो ॥ २ ॥ तुम
मन धाये सब सुख पाय ॥ दुस्तविनासन भ यहो ॥ ३ ॥ गिरि
वरभूपति रकरस धावेये चरणाक मल चित लाये ॥ ४ ॥
रागभिप्रास ॥ प्र ॥ हैं हो प्रितम जानि रसको मनमानि ॥ क ॥
सुखमै आई सब मिलि बैठे रहत सदा संग जानि ॥ विपति परे सब डं
सब छाडे को हुन आवत मेरे ॥ १ ॥ घरकिनारि सब हुत किना रहत सदा
संग लागि ॥ जब यहि हंसा तेजिय काया प्रित २ क आणी ॥ २ ॥ य
ह जग का व्यहाल बन्धो हैं अयवत बहु बिसरायि ॥ नाम २ किनु
यहि संकट मै कोई न होत सहाय ॥ ३ ॥

अप्रभास

राग प्रभास ॥ प्र ॥ श्री श्रीमसेन दिचराणा सरा सदान ॥ क ॥
मानि मयमकरम मसि व छिनेन रूप अर्भुन जुल छि स्वरूप ॥ संसार

सजुसेरूप उगपभूमिदोलवास शुधिरन विष्णुकथवथास ॥ १ ॥ देवग
गादेविगगा दकोसयानायक धमस्वसेचोन बरुन दिशाम ॥ भुवनस
अतिवीर सिरसमतकथिक नामदनवीरभिमेश्वर ॥ २ ॥ हें गुलिवरन
जुल गदानं प्रहारधामेः नृप दुर्जेधन आदिस्पाक ॥ दुर्मतिदुसासनलि
नाव धस्येविष्णुक अनेगभारथ साध्याक ॥ ३ ॥ दिगुलि महिमागुगा
व्हायजिअतिरस ल्हाव्हान मगाकधिवधान ॥ ल्हाकल्लयापनपरेयाई
वसू दिविनान स्वयनेलकरुणामिखान ॥ ४ ॥

रागप्रभास ॥ प्र ॥ चरगासरगादेहोमार्इगुह्यकालि ॥ र्क ॥ महे
श्वरकि प्रागा बल्हवैश्वरि तिनिभुवनाकिरानि ॥ अधमअनाथहमभय
पापिनि ॥ दुर्मतिपापछुतायि ॥ १ ॥ तुमारिचरगाकिसेवानगानि हमपर
करुणाकरिय ॥ श्रीरगावहाड नंद परतापि गिरगानिकिगानि तुमहि
॥ २ ॥

रागप्रभास ॥ प्र ॥ ॥ हेनहिहरकौनरहेकौनरहिये ॥ र्क ॥
यहनगारिकोमरमनजानो फुडिजनमगमायेये ॥ १ ॥ मारिवठना
मातिविडासना ॥ मातिमोमिलिरहिये ॥ २ ॥ नाहिहरदियवडुडुव
पाईये ॥ आखिरजनमगमाईये ॥ ३ ॥ सुरदासकेप्रभु तुमारिदरसको
बहुतगई बहुतगई थोरिरहिये ॥ ४ ॥

रागभ्रीप्रस ॥ प्र ॥ ॥ पुंयकोलायो मेको पिडमे जरिया ॥ सुवासा ॥ र्क ॥
दियोमुनिको दानसुरमेश ॥ पियातरुसाथ मिलायोरे ॥ १ ॥ सताजितकि
अजहुनदिनि ॥ पियाकेहमारेमनायोरे ॥ २ ॥ तुमतोजेठानेविनातेकलुहे
पधनंतवलतुलायोरे ॥ ३ ॥ पूरताहोनपुरावो ॥ डद शिगा ॥ नृपधनदेहिपरायो
रे ॥ ४ ॥

रागाभ्रीप्रस ॥ प्र ॥ ॥ प्रल्हादउवारे होमारेनो वामअधारकहन ॥ र्क ॥
अगरवगर तुमक्यापठाय हमतोपठे ॥ रामनाम् ॥ विनुहारेभजनसो

मुक्ति कैसै कहै धिक जनम विसरान ॥ १ ॥ वेद पढावन पंडित थाके कहि
 यो नृपति सो जाय ॥ सब लधिकन को पधमे भुलाये तान मृदंग वजाय ॥ २ ॥
 यताना सुनि हिरंयाकस को पे वाधे खम्बा लाय ॥ खड्ग निकाले थाटे
 भय उपर काहा हरि सहाय ॥ ३ ॥ अधर पिना मोरे बरुनहिता को जल थल
 व्यापित राम ॥ कौनै करन संग्राम ॥ ४ ॥ नरसिंह
 पति नर हरि प्रगते निकसे रवं वा फारे ॥ हिरंयाकस न उदार विजारे सुर के
 स्वामिक हाय ॥ ५ ॥

॥ ८६ ॥

क्षमा कुरु

राग भिंप्रभास ॥ प्र ॥ क्षमा कुरु मे पराधस्यामा ॥ र्क ॥ पूरु
 वजनम किकर मन जाने यह जनमहुं अज्ञाने ॥ बाल जु वावधा
 पनविते राप्रमर न नहिने ॥ १ ॥ चार पदार्थ कि नु मदाता सुर
 नर मुनय कि माता ॥ करताहरता भराता त्वमेका नहि जानु जगमाता
 ॥ २ ॥ निरथ व्रत जस्त कोटि किहुं गोकं माल वदिहुं ॥ जाको ध्या
 न सो सो सब किहुं सेवक का भक्ति दिहुं ॥ ३ ॥

जय २ कुरु

राग भिंप्रभास ॥ जो ॥ जय २ कुरु गामय प्रभूजि ॥ र्क ॥ बाला पन
 मै ये लि मुमाय तरुणा जुवति भुलाय ॥ वृध भय माया मन जाय
 घर २ बुदन जाये ॥ वृध भयेवल मतिहिने ध्यान मान नहि किहे
 ॥ अंत भयतव पछुताने क्षमा कुरु दिन जाने ॥ २ ॥ यह संसार मो

नुमहियका अउरनाहिदेसा ॥ गावतहैदेवरंजनचरणाकमल
सरणा ॥ ३ ॥

रगा भिमप्राप्त ॥ प्र ॥ आयसरनतिहोराकेदोरेस ॥ र्क ॥ अगम
दगर हिमगिरिविराजे संतनतारनकाजे ॥ गिरिजावल्लभनंदि
सवार वाजतदमरुमुदारे ॥ १ ॥ वधरवधंवर गललहारे पंचानन
त्रिपुरारि ॥ अंगविभूतिस्वहेउनवालेगंगाजटाचंद्रभारे ॥ २ ॥
विधिसेउदकजलजोनरपिवैफेरिजनमहुताय ॥ भनदलभंजनदुहु
करजोर देहुभजनकिंदोरि ॥ ३ ॥

रगा भिमप्राप्त ॥ प्र ॥ टंकेभरभोलानाथगिरिजालिये संगसाथ ॥
र्क ॥ विष्णुमानिगंगाके ततनिकटविराजितसेभिने ॥ भुतप्रेतपिसाच
निजगन प्रमथगगा सवहरविते ॥ १ ॥ कनकजदितसिंहासन

॥ ८ ॥

॥ ८४ ॥

पर गौरसहितविराजिते ॥ विरंचिकेसवसकलसुरगगा कमलचरणा
सुसेविते ॥ २ ॥ त्रिभुवनपतिभक्तकेगति पसुपतिमेरेविनति ॥ गाव
तसेवक चरणाधावन पराकारियमनोरथ ॥ ३ ॥

रगा भिमप्राप्त ॥ प्र ॥ कचिदपिहसितं कचिदपिलपितं कचिदपिमधुमाधुरि
॥ कचिदपिचरितं कचिदपिभिरितं प्रसरतिरतिचातुरि ॥ १ ॥ रतिसदानिव
हनंशिवयोरिहचतुरं ॥ र्क ॥ परप्रमलं विकसितकमलं पङ्कज
यगिकुंतले ॥ स्मरदृष्टसुनं कनकाभराणं वहविवप्रधिकोमले ॥ २ ॥
मुखरितरसनं प्रविचलवसनं नरलिनप्रसिद्धं ॥ गिरिपतिनया
प्रनसिजकलयानमयतिमुखमंदलं ॥ ३ ॥ मनिमयवलयरभसोपच
र्यं रचयतिपदभूषणं ॥ पतिरतिप्रकं कलयतिदिलकं करमधि
गतदूषणं ॥ ४ ॥ कोनुकलीपितं ननुतेलविनं रतिचतुरसुंदरं ॥ प्रथयति

आयभराणा

८५

कनिश

निभृत गिरिजाहसित विकसितरुचि वधूर ॥ ५ ॥ सरसभवचने मा
 लारचने रचननख विग्रह ॥ कलयनिमधुरे रसनावसने निवस
 न लघुरियह ॥ ६ ॥ घटयनिवनिता केतवकपिता पातलरुचिलो
 चन ॥ किमपिनमनुते मुखमावृणुते हिमरुचिकमलोचन ॥ ७ ॥
 कृतहरिविनयो गरापतिमनयो निगहनिहितकारं रां ॥ हिमकर
 मुकुटे विजयनिनिकटे विरचयनचवारन ॥ ८ ॥
 रागाभिप्रास ॥ दे ॥ द्वारेवहुतवेदभयिराधेतुमवृषभानुकि सो
 रि ॥ १ ॥ अंगुलिकोनकपाटप्रहरतमाधवेह हमप्यारे ॥ जाउवस
 न वनघनफलन नहि ॥ चक्रीहेनारि ॥ १ ॥ कैसेकरिलकुलाल
 जाउदुरनहि ॥ अधरगौरि ॥ कैसेफनिउनु रसनाधारनहि ॥
 अहिमततारि ॥ २ ॥ कैसेरपनि जाउनदितन नहि ॥ हरिहेवि
 विचारि ॥ कैसेकपिवन जाउसाषापर हरिवचन मुनिनारि ॥

द्वारेवहुतवेद

॥ ३ ॥ ऐसिसरस राधाकिवचं मुनि हरिमुमुकारि ॥ रक्षहरिगुटे
 न्द्रविक्रम साहजसर्पिह विगाय ॥ ४ ॥
 रागाभिप्रास ॥ जो ॥ सरिवहै मुंदरसिरनिधान गोविंदसिरोमनि
 ॥ १ ॥ करुणामयकंसासुरखंडनश्रीपद्मेसिरसोहे ॥ कर्जरललित
 मुखकामकोतिद्विदेवतत्रिभुवनमोहे ॥ १ ॥ निलपितकस्यामकरे
 वर संखचक्रगिरिधारि ॥ दसरथनन्दनदैत्यविखंडनवंदनजगतमुदा
 रि ॥ २ ॥ सायिसेसहस्रकमलासनपतिगिरिराजकुमारि ॥ दीन
 वंददिनदुरवमोचनः जनरजनहितकारि ॥ ३ ॥ रामनामगुनविम
 लपदारथ वलिगिनजायविचारि ॥ नाथमुक्तमुखपदराजससेवक
 जावतनारि ॥ ४ ॥
 रागाभिप्रास ॥ प्र ॥ निरखतजातजातायि रथपर ॥ व्याकुलवच

सरिवहै

निरखत

नकलय वेदहिसरगा २ गुहालाई ॥ १ ॥ या तनिवचनमुनि-
 रवहु उठिधार्ई हाकदेननिहा ॥ काकोस्त्रीयानामज्यातेरोकोन
 हरेतुहिजायि ॥ १ ॥ येअवधपुरनृपजोछ दसरथ ताकेसुतप्रा
 ई ॥ ताकेस्त्रीयानामजानकिहरियनिमावलिजायि ॥ २ ॥ बंगु २
 चोरकरनदाई तेरेरथहु छिनायि ॥ अवसतजिवनसो कथिनवि
 धानामेसिव सोसहायि ॥ ३ ॥ अगिनिवानतेदोपक्षरुगोश्रुमे
 परेमुहुराई ॥ तुलसिदाम प्रभूतुमारिहरसको आयमिनेरधुराई ॥ ४ ॥
 रागभिंप्राम ॥ प्र ॥ चरगासरनमेआये ~~वियेमाधव~~ वियेमाधव ॥ ५ ॥
 तुमहिहेप्रभुजगतआधार तुमविनुनहिकोहिमेरे ॥ करताहो
 भता तुमहि तुमहिभवहुवतारि ॥ १ ॥ आफहिबीजेआपहि
 बोवय आपहियेलखेलारि ॥ आपहिमारेआपूउद्धारे जिनके

चरगासरनमेआये

॥ ८८ ॥

जैसाकोनैसारी ॥ २ ॥ शिपक लनासिनिमंतजनतारनि तारन
 दुर्पतिरानि ॥ प्रल्हादविभिन्नकवजाउधारे तारोगैतमरानि
 ॥ ३ ॥ यहीसंसारमैतुमहियकाव्र नहिकोउनदेवा ॥ जाकेभा
 नसो त्रिभुवनपावय चरगासेवक धिर्जभाने ॥ ४ ॥

+ राग वल्लारी ॥ ॥ तन मन हरि नाम काहु न्ये न नाने
 ॥ मनु दे जर म जु ये महु सदा नरे ॥ १ ॥ वा ल ष या वे स
 स महु जि के पान रे ॥ जो मन या वे ल जु ल या ये म सु धा
 नरे ॥ १ ॥ ज न म व नु व लो ष्य के त जी मा या नरे ॥ भ ग ल
 ये म सु जी न व स लु म ना व रे ॥ २ ॥ श क ह ल क ह र्या त से
 सो हु न द या न रे ॥ अ ना ष या वी न ति न वा ई व नि दा न रे
 ॥ ३ ॥

कृपा नीव

थये मधु

राग वल्लारी ॥ वं ॥ कृपा नि व वा ल ष ग व पा ल हे ही ॥ १ ॥ व्या त
 प ले स्तान हो त मि खा ॥ अ नु ग ति सं सार या सार ॥ १ ॥
 कं स कि सि फु ट क ल भ ग त ल हि से त ल ॥ धाय क ल द स अ व तार ॥ २ ॥
 सो से नं स्व य म गा क ल सि क ल वा न ला क ॥ के न थ व वा थ थ व सं सार ॥ ३ ॥
 च र रा म रा गा वि व दो ग द को वि को हि व ह्वा क ल या हु ने उ धार ॥ ४ ॥
 राग वल्लारी ॥ वं ॥ थ ये म धु न व ह्वा रित उ ध व ॥ १ ॥ व स त्रि भु
 व न म नि थ पि न द्रु क रणि ॥ जि व व च न या न कु बु जा व चित ॥ १ ॥
 नि र म रा णि उ न व्या त व स या व्या त जि धा ल ॥ व स या नु ग त दि द्रु क ने पर
 नित ॥ २ ॥ जि प नि अ भा गि नि नं भ ग ल पा चो न हि न्हं ॥ अ नु ग ति दु र व
 जु ल थ पि न्हा धि न ॥ ३ ॥ ग थे नं थ व जि व ह्ने थु लि दु र व उ व ने डे ने ॥
 म न त से व स या दि हि त ॥ ४ ॥ थ व दु र व से ह्ने पे नं सि य नु म न स य न ॥

विभुतिवकराठा फोने कनेथचरित ॥ ५ ॥ हाक ह्याथावेनाते वसचरा
 समाने ॥ विपतिसाधिरज मयाय विपरित ॥ ६ ॥
 राग वल्लारि ॥ प्र ॥ उधाई कोने उफाई हे माई ॥ जकर भ्रम यत परि
 जन से कैसे वैस गमाय ॥ ७ ॥ नघर संवर न पृथि अंवर न मिलि पैचो
 उधार ॥ संकर संपति मेघोजि आवल पावल भस्म होलि ॥ ८ ॥ कोद
 य आनि थालि सुरावल वाघहि छाल विदाई ॥ हम अभागिनि
 पानिके ज्पल वसा हा दुतल ॥ ९ ॥ पेत पतकल गल चतकल
 पावल भमर मुलायि ॥ यक दिन भूरवल सहन पावल मासे २ उपवास ॥
 १ ॥ वासुकि जिवल पवन पिबल हरजिवल विखराई ॥ सेवक स्वामि दुभाई
 मिलल हमारि कोने उपाई ॥ ४ ॥ माई ने सोचल वापने जो जल जो ज
 ल देव अपने ॥ विधित लेवल मित न पावल जाके यमन हमारि ॥ ५ ॥
 भनय विजापति सुन हो पार्वति स्वामिके नवो लो मंदा ॥ बहे म हेश्वर

जगत ईश्वर भुगति मु गती दाता ॥ ६ ॥
~~समवल्लारि ॥ व ॥ जेहे आज मान चढावने ॥ ७ ॥ संकष्ट तारिनि~~
~~नित हरि पावन अनन्य मानस २ रसन गावने ॥ ९ ॥~~
 राग वल्लारि ॥ व ॥ जेहे आज मान चढावने ॥ ७ ॥ सोभानगर मेकर
 सुषपावन ॥ पसुपति देवन २ भाव चढावने ॥ ९ ॥ संकष्ट तारिनि नित
 हरि पावन ॥ अनन्य मानस २ नसन गावन ॥ २ ॥
 राग वल्लारि ॥ व ॥ चलिय आज भजन करिये ॥ ७ ॥ सर्व धूमिलि
 मंगल गावे ॥ भैरव देखन भैरवि देखनि आवये ॥ ९ ॥ धन जन दोल
 न संपति पावन ॥ भजो तुम भैरव भजो तुम भैरवि आनन्द होईये ॥ २ ॥
 कहत सेवक नरगुराविचारे ॥ क्या कहें जमके २ तव पदुताईये ॥ ३ ॥

वर्धा

सं

प्र

वर्ध

मनुष्य

रागवल्गारि ॥ व ॥ मलुमनेमनेहीनामहेसखि ॥ क ॥ ज्ञानिगुरो
 शुभाति श्रीभा ॥ गवतआदिने मनतसेनेहुमेपुगान ॥ १ ॥ धनजनजोभ
 न सदानंचोनि ॥ वषन ॥ थवममुगुईवनिदान ॥ २ ॥ न्हिन्हिदिया
 वनदिने अधिक मायामभिना ॥ दानपुंरापयाहुमेनान ॥ ३ ॥ मतेरे
 पापससने थुगुजिबगथेहने ॥ दुधाईवजमयासभान ॥ ४ ॥ तनमन
 यावध्यान जुयमनेथकपान ॥ ल्हाकल्लयावचननेनाव ॥ ५ ॥

वृधवारंगसिया

रागवल्गारि ॥ व ॥ वृधवारंगसिया जनयजुवातिदोषिततवडुरसिया ॥ क ॥
 मागिचाहिआनवधनुमहितमसिया ॥ हरकेचरितदोषिहसयपरोसिया ॥ १ ॥
 छलाविछलागृहवेसलतपसिया ॥ मिथेभोजनपरनायकरसिया ॥ २ ॥
 वृनहि वृधधिक कहवदरसिया ॥ सुखलागतजनि अंवरसिया ॥ ३ ॥
 अनयविआपति सुनहोतपसिया ॥ वृनहि वृधधिक त्रिभुवनरसिया ॥ ४ ॥

सुधाररूप

रागवल्गारि ॥ प्र ॥ सुधारिरूपचलेवनवासा निजवरपरश्रुप
 वसभई स्वतनुकोभईत्रासा ॥ क ॥ सोप्रभूदिनरूपवासुरथ
 खेटकाकि छलाकेन्हि ॥ यकहयासन वेगचलेवन संगकोहु
 नहि लिन्ही ॥ १ ॥ सोवरविच देवअनिमुंदर मेघसमुनिकि
 धाम ॥ शक्तिहरि मृगस्वापद सोभित सिंघेकरे गुरुकाम्
 ॥ २ ॥ ताघरिभुवनि मुनिपशुपर नमृतवर्दिनकिन्ह ॥ सोमुनिने
 दिये आदरआसन वैठेनृपयकछिन ॥ ३ ॥ आश्रमवर्णन गित
 भ्रमरस सिंहविरपदभान्य ॥ भक्तनकेरसदेतसदाजस मंगलको
 रसपान ॥ ४ ॥

यहपवन

रागवल्गारि ॥ ५ ॥ यहपवनमन सुरथकिचार ॥ क ॥ आ

भ्रममेतत्पसोचता फिरत ईतउतभूचहु दिसा ॥ पाँचसुबोलनदि
 जसुघोषत कंजतवनचर किस ॥ १ ॥ नेहकिबधने दिन सुचेतने
 चिताकर विसेय ॥ कथमिहकर्म पुरधननासन समुहममना
 असेय ॥ २ ॥ भावतसुंदरगित सिंहविर काननकि अतिहित
 ॥ आश्रमवर्गोन आपदनासन भक्तिभजन किरित ॥ ३ ॥
 रागवत्सारि ॥ प्र ॥ हेमनकाकहुमै वेदना ॥ आश्रमआगन तु
 मनसमय रूपकरेचिंता ॥ ४ ॥ सोनगरिवरपुर्वमैपितर पालित
 पुर्व मुनित ॥ सोपारिसेहम दिनअवदिन होतयहरित ॥ ५ ॥
 सोममकंजर मुरसदामदमाहृतकि न्हिसुबारे ॥ सोममसेवक
 कुव्यसनरत धर्म सैपालनपाहे ॥ ६ ॥ मेरिसुरगज मुख्यजनस

व ममरिणिकिवसभल ॥ मिलनकाअवदिन सुभोजन दुस्मन
 नकि यहखेल ॥ ७ ॥ भावतसिंहविर गतिमुंदर भक्तिभजन
 किमान ॥ ८ ॥
 रागवत्सारि ॥ व ॥ ईश्वरविधाताया अजुगुतिछ्याल ॥ ९ ॥
 ग्पानिगुनि ॥ पंडितया तिरिअसयान ॥ ललवल अनारिया
 तिरिजसयान ॥ १० ॥ तव २ सिमास सिंगोलसल ॥ धर्वजाफसि
 जा गुविचाससल ॥ ११ ॥ तुंथिहिटियालस तोनेसुसवाल ॥
 दकोतिर्धमनावन समुदरवाब ॥ १२ ॥ ध्वसंसारफययात अति
 नवनाल ॥ १३ ॥ भालपाथे मजुवउकाल ॥ १४ ॥

+ राग वल्लारि ॥ ॥ श्रीजय २ उग्रतारा जनीनि ॥ क ॥
 मनिचूर परवत्त भवानि द्विवास दिक् ॥ हर्षनीविज्या
 क रसन ॥ १ ॥ जगत ठकरानि नेपा लया पुरा मीरा
 ॥ ॥ द्विगुनामकासेजुल शानि ॥ २ ॥ भगत वनवजाक वयलि
 व वुतिकाक ॥ ह्येसासुर लिनावस्याक ॥ ३ ॥ लहाक ह्यया
 ननमन द्विपालिनिपाया ध्यान ॥ पालिकोस तिहुनेसदान
 ॥ ४ ॥ जन्मससिनाग राजनेपालयासम्बत्सर ॥ जेष्ट शुक्ल
 पंचमि तिथि ॥ ५ ॥

वावाह

राग वल्लारि ॥ शु ॥ वावाहे सर्वदेवसरिर भितर है ॥ क ॥ आत्मा उन्नम
 देव नाभिनि ॥ अंवरलोक विष्णु देव पूजने न चले ॥ १ ॥ ललाटे चन्द्रमा
 बैसे हृदयवासुकिनाग पादुका मेवैसे वसुमानि ॥ ईद्रवाहु भुजवर देवि बैसे
 जोतिनिंगे जिह्वा आगे वैस्पेति सरश्वाति ॥ २ ॥ अर्द्ध वैसे वृद्धा उर्द्ध वैस्पेति
 ध्रुव देव मध्ये वैस्पे जलानि अगिनि ॥ ईद्रनाल २ नासिका पवन देव मूलस्था
 ने वैसे गुसाई ॥ ३ ॥ काया ईन्द्र काम देव मनसै भूमा हा देव कर्ण वसे कुमार ॥
 ॥ नवद्वार नवनाथ त्रिवेणी भ्यज गं नाथ वसईने वसनि केदार ॥ ४ ॥ भारी
 हाथ हाथ भारी परस्नायि गोरख नाथ भुमि वृंछा रहे परिमान ॥ माधिर
 परगते वदनि गोरखे मनि कहियादि अन्त न जानै ॥ ५ ॥

शु

राग वल्लारी ॥ प्र ॥ मोहन वांसी वजाई हे सखि ॥ ज्वालनाल सब संगहि दुःख
 हमहि देवन आई ॥ क ॥ हर्ष मथुरा जग मनोहर जमुना सितल पानि ॥ मद
 न सुंदर पुरुष नाम

नसुंदर पुरुषनागर बोलत अमृत वानि ॥१॥ कानमै कुंदल कनकभू
 मरा कन्हैया लाल व आई ॥ तिलक चन्दन कमल लोचन मोरमकुट
 बनाई ॥२॥ बाहू वरस कि जौ भन मेरि कुसुम रंग कि सारि ॥ वहै गिरिधर
 दोनहि छे लन चमेलि फूल कि वारि ॥३॥ एक कुल बालष गौ प्राते पालक
 कुंज २ कि जवन मोहे रि ॥ भक्त न के प्रभू नन्दम हलायित प्रात समान है मेरि
 ॥४॥

हेमाध्याय

राग बल्लारि ॥ व ॥ हेमाध्यायानि के निके कर मोहि पाले ॥ ध ॥ सब
 गोपि ज्वालनि के निके मनु कि उठाव कि के ॥ १ ॥ गंगा जमुना वहे बिरे
 बालष अक्षर मोरा कोरे ॥ २ ॥ दान देह गृह म हारे कर धरि कर मोहि पारे ॥
 ३ ॥ दहि दुध तो हर प्रसारे दान तो हर अधिकारे ॥ ४ ॥ विष्णु पूरि कवि भा
 ने तो हे प्रभू हमरा बिसारे ॥ ५ ॥

श्रीभिमराजा

राग बल्लारि ॥ व ॥ माहाराज धिराज राजेन्द्र श्री भिम रे ॥ ध ॥ तन
 मन हृदय स धिपालिने पापा को स सुधिर या ना व विव वास ॥ पति तम
 सिया थास विहुने दिन गर स वारं २ दि गुनि भर सा ॥ १ ॥ वेपार वन जस
 अने गावि जमाल माल सो तो थिक वंध या का ॥ हिरा मणि मोति कस निरपर
 प्रसाल स प्रसर राज मसि गुति रुद्राक्ष ॥ २ ॥ कापल न अतर स कोचि किं वा
 जीरना स यामुदिद व तो स सहिन ॥ खोप सल कय हं कंस न सिजल
 लिल म अलंकार लुं बहल विव ॥ ३ ॥ जुग कालेया निनु स विज्या ना व स ह
 र स गारि न व अतिया क व स ॥ कुल ना क गा स पाथि उ मू ता ला ज स ति ना भ
 ध क तो ला स हि न ॥ ४ ॥ अंधा ना क मना हं स दि गुनि चरणा को स
 सुधिर या ना व विव वास ॥ पृथ्वि नारायणा दास या ह मे जि दु र व ना स
 वृकोदर भिम सेन नमस्तु ॥ ५ ॥

राग आसावरी ॥ ॥ नित्य सुमेरु गगानायक मंडल करो हो गगोश ॥ १ ॥
 बालचन्द्र मकुट मारथी रंदि सिद्धि दुनु साथे ॥ परसु मोदक पात्र जप माला मूल
 हाथे ॥ १ ॥ मुखक बाहन करे रुद्र माला गले दारे ॥ विघन हरो प्रभु तुव
 यक दन्ते ॥ २ ॥ भगत अजान जानि रिद्धि सिद्धि वर दिजे ॥ अना
 थ विजति सुनि सरन मै लीजे ॥ ३ ॥
 राग आसावरी ॥ ॥ ॥ भैरव सोऊने ननान भगत खना व
 कुरिपानी ॥ १ ॥ वागमति नीरस मनो हरथान सी ॥ गगन सकल मुना
 विज्या कर सनी ॥ १ ॥ बालचन्द्र जता सतयान धुंया दे गुज सहि नानी ॥
 तियातल सर परतन यातिसा ॥ २ ॥ धाल त्रिशूल मुंड सड्ड पात्र जो
 नानी ॥ रूप अति भयंकर स्वगोल मि वानी ॥ ३ ॥ वचु उन वरन या
 वेता लगयानी ॥ मुंड माला को वाया ॥ मु मुंड हिलानी ॥ ४ ॥ दिगु
 लि महि माध्यान लहानान मयाक जिनी ॥ दोन थासं दे माया व अनाथ
 वनानी ॥ ५ ॥ भगत रक्षा दाक अभै वर वियानी ॥ लहाक हल सरन का व
 सुद्धि दिति स्वयानी ॥ ६ ॥

॥ १०२ ॥

हो मोहि

राग आसावरी ॥ व ॥ हे मोहि हरि विनु अवरन कोहि ॥ १ ॥ तव लोक
 हाहीरे गुरा गाई ॥ गृह बास जव होई अवतो जाना जगत हमारा थगत
 फिरत सब कोहि ॥ १ ॥ देखत दुनिया मगन भयो मन हरि के नाम भुलाई ॥
 नि सिद्धि नै धामा यावतोरा आवेर संगन कोहि ॥ २ ॥ यस व संगम दोई पहर
 की धन जन जो भन जोई ॥ राम नाम विनु सुमरन प्राणि अन्त काल गनी होई
 ॥ ३ ॥ जिन अबला के चित्त बटाई तन मन सुमरन सोई ॥ कहत परस जव विंद
 ना कि जनम अकार थखोहि ॥ ४ ॥

विनाकर

राग आसावरी ॥ प्र ॥ चिन्ता करवन मालि होम मेरा ॥ १ ॥ पुरुष जन
 म यक को नेत पाकिया कु घर भय मेरी वासा ॥ बजो पाप मै बुड लगाई ॥ जप
 तप नाम मै दारा ॥ १ ॥ हम गाईय तुम ज्वाल गोसाई जनम २ लख उत्तरा ॥
 हम को पार उतारे गोसाई तब तुम वसत हमारा ॥ २ ॥ गाई डिये मयू घृत

उपजाया सब देवन को आहारा ॥ उन पोसि मैं हरहि जोताया तव हुन नाम
उपकाया ॥ ३ ॥ जान कि जो लखा नाम कविरा मरने को है लखवारा ॥
कपरा उन्दे नाम हि छिपे सुमरत नाम ते हारा ॥ ४ ॥

राग आसावरी ॥ व ॥ राम जे धरति केने कि कहाये ॥ विनु मसि
कागत कलम चलाया ॥ ५ ॥ त्रेता जुग मेरा वारा जालंका कोट बनाया ॥
यकलाव पुत्र सत्रा लाख नाति सो रावरा के दिय गवाति ॥ १ ॥ मेरा वाति
मेरा वेति मेरो वन कुल सारि ॥ मेरा कहते सब हि नर रुधे हरि के
नाम भुवाये ॥ २ ॥

राग आसावरी ॥ व ॥ देखो भुजुत अविगत के गतिके तिक रूप धर हरि व
नाना रूप धरे हरि हो निनि भुवन उदर वस जाके सुत भय गोध परे ॥ ३ ॥
जाहिना दते रुद्र ब्रह्मादिक सकल कला गुन साधे हो ॥ सो अवनाल कि

नति वृजवनि का पात धलाल यवाधे हो ॥ १ ॥ जाहि चलन त रुवसन सो हे
विष धरना ललपताय हो ॥ सो गिरि धर गिरि वरत भारि परना मेरि जुलाई
हो ॥ २ ॥ जो मुख दरसन पावन वंशा शिव समाधिल गाय हो ॥ सो मुख
चुम्बन जननि जसो दाई धना ललपताय हो ॥ ३ ॥ जाहि वारन रावन मारे
हिरन्याकशन वफारे हो ॥ सो भिभुजा वखलिले बाधे यम ला अर्जुन तारे हो
॥ ४ ॥ सो हि भुजा अवते कत गोपिनि धाडे हो हृषियारे हो ॥ सो अवसुखास के
स्वामि गोकुल गोप कहाय हो ॥ ५ ॥

राग आसावरी ॥ भु ॥ हेनर कासि चिन्ते कासि हे ॥ कासि विनु अरका
सगाहि कलन दे हो जमराज ॥ १ ॥ प्रथम पद वरन देव विमेश्वर दराड
पानि दुडिराज हे ॥ काल भैरव देव हि संग मे भिम सेन क्षरपाल ॥ १ ॥ ईंद्र
ईन्द्रासन हुते जल सिव हुते जल कैलास है ॥ तेति सकोरि देव गृहते जल लल

अधर्मजग

कासिवास ॥ २ ॥ मायामाना मायापिता मायाजेय गुरुभाई है ॥ माया
 व्यापित जगत बोधन चोदिग गुनि स्तुति राय ॥ ३ ॥ गावयस्यामाशिवके
 कासि शिवके गुनपरिचारि है ॥ जनम करियुग पाप व्यापित ले हो विसेधर नाम ॥ ४ ॥
 राग आसारि ॥ व ॥ अधर्मजुग या वेहाल हे राम ॥ ध्रु ॥ सयाव
 वडाई खन थवयातत वजन वेहाल पेखव थ मम्बाल ॥ गनधन खन अन
 लोभायेन तल मन पाप पुंरुप मया कविचाल ॥ १ ॥ धरम ख गुपतन अर
 जनक पतन थ व २ जक उपकार ॥ सिधूधका के बलन मभाल प्रसंसा
 रन थ म २ ॥ शानि से सिसाल ॥ २ ॥ धुरतया सभावन फसल पेस वल
 न जुय फल वल्लनिहाल ॥ रसनिथे शुवचन चित जुको डुरजन दल सेल
 थिथि विवहार ॥ ३ ॥ अजुगुति तरहन मायमने अकरम अति कल जुयि
 बहुहाल ॥ करम या सुफलन नारि मुख डवधन भजल पेमान रेगेपाल
 ॥ ४ ॥

होजगान

राग आसारि ॥ व ॥ होजं जाल माया कलाप कलापे जिय हो दिन चलाये
 ॥ ध्रु ॥ माति जलने जप मन लाया गगन मारि बनाया हो ॥ मिरिक जन से
 धैर जपाया अंन अगिनि जलाया ॥ १ ॥ जुठे जुग मै जनम गमाया कथिन
 करत संसारा हो ॥ विषय मगन पित नु सुख पाया पिके मन महुताया ॥ २ ॥
 ताते जुग मै नहि निम्नाया भक्षराम लगाया हो ॥ सकल जगत मै तुमहि
 देवाया तुमहि मन मै आया ॥ ३ ॥
 राग आसारि ॥ व ॥ जो जन उधो मोहन विसारे तान विसारे पलख भारि ॥
 ताको संकट कथिन कर्मको राखो शुख आनन्द भरे ॥ ध्रु ॥ अपने जन प्रदला
 दउवारे नर सिंहरूप ता हातुं त धरे ॥ हिरंया कसन ख उदार बिजारे जय ३
 जिहुं लोक करे ॥ १ ॥ कौरव पाँदव जुद्ध रविहे माह सघन २ नाथ परी ॥
 नाहा भारथ भरहि के अन्दा राखिलिये जग घराब तरि ॥ २ ॥ जो मोहि भजे
 भजे गवायिन ताको यिह परतिन पार पारे ॥ कह्य दाम कहे क्या दरनाको

कालि

निसवासिजोजपतहारे ॥३॥

रागआसावारे ॥५॥ कालिल्ललानमलिक न्हाससकुराडलधिक ॥ तिलक

चंद्रभाविथनतिकर्ष ॥ सिरसमनुकलूं समानिक कंकालि ॥ जोगिनिव्रगिनि

गननैलिका ॥१॥ मिऊनं ह्याउकजिक मोतिया हारनैसिकवदननिल२

सरिर ॥ ~~कामनं धनवानिक न्हिलिवसवदधिक ॥ कंकालिकालि~~

~~का काननैजिक ॥ अनमनसेक~~ जभितधुं देगुलि नजावेकला

ह्यति अतिसाते सावसिक ॥२॥ भावनं धनवानिक न्हिलिवसवद

धिक कंकालिकालिका कालवजिक ॥ अनेगरसेनपेठ डुतिक भुगतिमु

गति विव अधिक ॥३॥ पापयाकलमहिक पुंमयालपूस ॥ कलिक

वृषभचवगयामनपतिक ॥ जुयावपालिसमन डफिक यावजिपापि

अलिक मुलिक ॥४॥

अयोनी

रागआसावारे ॥ चैत्री ॥ च ॥ आयोनंदकि सोरसजनि ॥ ध्रु ॥ प्रान

जिवनधन स्पाममनोहर ॥ श्रीराधेश तपतवृषावन मोरसजनि ॥१॥

सोहिपदभाव सोहिपदपंकज ॥ श्री ४ पारउतारनमोरसजनि ॥२॥

चन्द्रसाविहितवालकृष्णद्वि ॥ श्री ४ मोरमकुट द्वि मोरसजनि ॥३॥

दुरविय

रागआसावारे ॥ च ॥ हरलियेनंदकि सोरे मेरोमन ॥ ध्रु ॥ विन्दारवनकि

मे कंज ३ गलिलेमे ॥ सवगोपिनि चितचोर ॥१॥ यातघाट मुजरोकत

तोकता ॥ मुरलिवजायघनघोर ॥२॥ चंद्रसाविहितवालकृष्णद्वि ॥ पायल

मायन चोर ॥३॥

लजियगो

रागआसावारे ॥ च ॥ लगियतो सालनालगेविंद ॥ ध्रु ॥ तोहिमेरादरद

तोहिमेराजिवन ॥ आरसें ज्या तोहिहै ॥ तोहिहाल हवाल ॥१॥ लयदिना

मनु ध्यानतुसाधे ॥ आरसें ज्या येजिवनजंजाल ॥२॥ कृपारामअजो

ध्याजिवन ॥ आरसें ज्या भक्तनके प्रतिपाल ॥३॥

रघुवर

रागआसावरी ॥ व ॥ रघुवरजि सिराजि मेरोमन ॥ क ॥ ब्रह्माविष्णुमहेश
 खरेहय ॥ नारदभमरकुलार्इ ॥ १ ॥ कह्यमनोधीरे मुनपियारावराक्या
 तुमकुवधिकमार्इ ॥ २ ॥ जिनकिसिनाहरनुमल्लायलंकांमैधुममचायी ॥
 ३ ॥ भरथवानलियकनउपरजेमारिदियदुखरदियो ॥ ४ ॥ हनुमन्मजिन
 के पायनअैसेलंके मन सहदुभार्इ ॥ ५ ॥ रावनमारैरामघरआये
 घरघरआनन्दवढार्इ ॥ ६ ॥

भजोमन

रागआसावरी ॥ प्र ॥ भजोमनरामनाम किसरनां ॥ क ॥
 गिरिधरनावगरिवगिहारि ॥ दिनदरुदखहरा ॥ १ ॥ तेजुजंजालसव
 विषयनको ॥ भजलेगोविन्दसरन ॥ २ ॥ कथिनतु हेरा भवकासागर ॥
 कैसेविधिपारउतरन ॥ ३ ॥ नानकदासआयेप्रभु कासरना ॥ मिनिगयोजन
 म सोमरन ॥ ४ ॥

मेरोअव

रागआसावरी ॥ च ॥ मेरोअवतिरथको मनलागि ॥ क ॥ देसनेपान

भगवान

धर्मकिसाला देवनको पंथआये ॥ १ ॥ वागमति मनमतिको संगमसं
 खमोल चितलाय ॥ २ ॥ भनजातुजनचरणपयोरि ॥ पसुपतिदरसनधाय ॥ ३ ॥
 रागआसावरी ॥ च ॥ भगवानतुमहि संसारकिनाथ ॥ क ॥ जोक
 दुमेरे विरहवथाहय ॥ तुकमै हरयाहिसाल ॥ १ ॥ भनजातुजनचरण
 पयोरि ॥ नृपतिभनत वारंवार ॥ २ ॥

भजोमन

रागआसावरी ॥ व ॥ भजलेजयजगनाथ तनमन ॥ क ॥ जाकेसरना
 मिले सवसुखपार्इ ॥ संखचक्रधरोहाथ ॥ १ ॥ सोप्रभुमोहिसदासुखपार्इ ॥
 कहतरसिकमोहिनाथ ॥ २ ॥

मेरोप्रकाश

रागआसावरी ॥ च ॥ मेरोमनकोवैरागिकारिगयो ॥ क ॥ हाठलकीरिया
 कान्दकमलिया ॥ जमुनापारउतरिगयो ॥ १ ॥ कचाकोटपकादरवाना ॥
 बिरकिरोलनि करिगयो ॥ २ ॥ आफुगयोदरिकाढाये ॥ संखचक्र
 गदाधरिगयो ॥ ३ ॥ सुरदासप्रभु तुमारिदरसको चरणकमल

चित्तधारिगयो ॥ ४ ॥

आरव्या

राग आसावरी ॥ च ॥ अंखियानलागि गोपालनयनने ॥ १ ॥ हमजोगई
जमुनाजलभरने भरल्यारि जंजाल ॥ २ ॥ विन्दावनकेमैकुञ्जगलिलमे
मिलिगई नन्दकिलाल ॥ ३ ॥ होरेअधिनदिन तानेसिख गोपियानउमा
ल ॥ ४ ॥ सुरदासप्रभु कुरिपाकिजे ॥ सवसंतनरक्षपाल ॥ ५ ॥

पुष्पति

राग आसावरी ॥ च ॥ पसुपतिजगकेहेतरंतार ॥ १ ॥ जोकहुमेरे
विरहव्यथाहै ॥ मुझमैहरयाहैज्ञान ॥ २ ॥ सोशिवमेरेसदावर
दानि ॥ भूपतिभनतवारंवार ॥ ३ ॥

भैरव

राग आसावरी ॥ च ॥ भैरवतिभुवनस्तोकयानाथ ॥ १ ॥
नेपालमंदि ॥ दलपति भगतजनयागति ॥ विज्याकपचिलिदिरसनं
॥ २ ॥ सेवायाकल्लवजाक पापयाकल्लमहिक ॥ दियुनामकावल्ह

मझाक ॥ १ ॥ लहाकल्लयान्दिथ ॥ २ ॥ दियुनामकायध्यान ॥ यावदिर्नम
नोरथपूरगा ॥ ३ ॥

मनादिश

राग आसावरी ॥ प्र ॥ मनदियसुनियवचनहमार ॥ १ ॥ वसत
मुसान साथवधंवर करतभूतगनसंग ॥ भस्मचढाये फिरतसवका
नन असनतहै निरभंग ॥ २ ॥ वासवविष्णु विरंचि सुधाकर तेजिसकल
दिगपाल ॥ कोनेविचलमेगोरिके माननहरपरहोतरसाल ॥ ३ ॥ कोनेदे
ससो आयामिलेतुमकोनपुछेउपदेस ॥ ब्राह्मणाकेतुमभेखलियोहै निन्द
कियोपरमेस ॥ ४ ॥ सवसो ॥ धिकजानिसदाशिवचरणाकमलपरध्या
न ॥ कहतसुमति जगतजयभूपति शिवसोकोनसमान ॥ ५ ॥

शिवमंथ

राग आसावरी ॥ प्र ॥ श्रीभिमसेन दुर्पतिदेवितयाव यवसुस्तया
काल ॥ १ ॥ सिरसमगुकलंया हेलमनिथसेतया ॥ चितचंद्रमाया

मिरवाकरागाया वराचवस्वान उनिउनया ॥ १ ॥ व्येसनि सुर्जया
 जोतिकुंदल त्रिभुवन्यादिप ॥ गलसअनेग रत्नयामालानको
 वासे जभिनहातन थिक ॥ २ ॥ पायोलसोभा पाणिप्रादस
 तिव पालिकोस ॥ लहाकल्यानिनतारन परनविवाधिरस ॥ ३ ॥
 रगआसावरी ॥ ४ ॥ हेनर मायिचिन्तनमाई हे माईविनु
 अवउत्रनाहि : लेहोसरवस राजहे ॥ ५ ॥ प्रथमसनामसुपु

~~॥ ६ ॥ मातापिताके संपतिउ ॥ ७ ॥ दासुवाकि~~

त्रपाये उनकिइराजायिहे ॥ ऊपुत्रजनेम उरवपाये कुलकि
 नामउतारे हे ॥ १ ॥ मातापिताके संपतिउ ॥ दासुवाकि
 नार चौरहे ॥ कामलेवाको नामने जिवने अपजसहेहे
 ॥ २ ॥ भनतरसिया अगमगित निर्गुन सतगुरासमुचेहे ॥
 जिनीकजोवोवय उनकि सोहिपायेसोभकि नहि कहुपाये ॥ ३ ॥

जगरानिसोहतहे सिंह वाहिनि ॥ २ ॥

रगगौरिसारङ्ग ॥ चौ ॥ पसुपतिनाथहे देहोमंगल ॥ ५ ॥
 उंमंजुभरिसरभनिविआके संपूरारानि ॥ देहोमैमेकोवरदा
 न ॥ जंत्रमंत्रपूरगादेहो ॥ ६ ॥ स्वयंभुधारीविआधीचन्देश्वरि
 मनधीर ॥ वर्जजोगिनि धरिदेवि माहीकालभैरव ॥ १ ॥ कालिका
 देविदक्षिणाकालि मनकामुनाकालिका ॥ मनपूरगामनभावै
 मनमयशु कालिका ॥ २ ॥ श्रीनित्यनाथनाथेश्वरि नाथनाथ
 गोरवनाथ ॥ महेन्द्रनाथ मोक्षनाथ गरानाथ सिद्धिनाथ ॥
 ३ ॥ कलिकाखड्गवहोत कोहिगावय यहिगित ॥ जोगावयडरव
 डूर निलकराठ नि वरदिये ॥ ४ ॥

रागगौरिसांङ् ॥ पंचमा ॥ हांदे श्रीकृष्ण सर्वचक्रगदापद्म
 चतुर्भुजनारायण मोक्षदाता ॥ क ॥ हांदे नैलोक्येश्वर
 माहावीर्य हा २ दे नंदकुमार हा ३ श्रीकृष्ण सर्वचक्रगदापद्म
 रागगौरिसांङ् ॥ प्र ॥ प्रभूमफयायायेविचालमाया स जिभुन
 लपा आसानंजिबोना ॥ प्रभू ॥ क ॥ संसार ॥ असार सारधका
 जुसेबोना ॥ सुखयारसनासे द्विपालिमजोना ॥ प्रभू ॥ १ ॥ मुख्य
 लुसेबिसेवनयोजिदिनहि ॥ आयुवनमभालपा आसानंजिबो
 ना ॥ प्रभू ॥ २ ॥ रूपजोभनबोनाथासधिरन ॥ रामयाआवल
 गोल ह्युननमबोनाप्रभू ॥ ३ ॥ लहाकल अनाथया नाथद्विजगत
 या ॥ चरणासराविष थुलिजितफोनाप्रभू ॥ ४ ॥

रागगौरिसांङ् ॥ चो ॥ श्रीजयदेविचयितंताजमा ॥ नानिहे
 मातादेविमा ॥ क ॥ दाहिनसिंधिनिवामेव्याधिनि मनमुरवभिम
 सेन मुरतिधीदेवि ॥ जननिहे ॥ १ ॥ दाहिनमुरवकरि त्रिनयणसु
 दार ॥ जगतभय हा २ संसारउधारकरोदेवि ॥ २ ॥ श्रीराजराजको
 करुणाकरिदेवि ॥ संवतगगरा चतुर्भुज दुर्गादेवि ॥ ३ ॥ श्रीराज
 राजेन्द्रविक्रम साहदेव ॥ समसेसुपारहाकरिचोगमारि देवि ॥ ४ ॥

रागगौरिसारंग ॥ ॥ काव मन एम यानामः एम ह्ये ॥ क
 जन्म पासा एय धाये मपु एम यानामः स्व वृद्धन थवत उपाये ॥
 चोने मडु ध्वल सार अर्थ एन थम सि से काव मन एम यानाम
 काव ॥ १ ॥ अचेतन मते मन चेतन नीया वृद्धनः काल वईव
 दु दो काये ॥ मजु मने मते मन दुष सुष माया धापः धीरु हीक
 वाना ताथे हाये ॥ २ ॥ धन अरजन पाये गुलौत मूक एकाये
 ल्पावन दवन मचाव ॥ चोने धन पितु पि स्य यनी वजम ची
 से अनजन धन न दुचाव ॥ ३ ॥ हाक स्या वी नति छी पा
 कोस तीव वासः कहुना मी धान भति स्वव ॥ श्री एम चंड या
 भजन निहृन परलोक धरम सलोव ॥ ४ ॥

राग गौरिसारंग ॥ ॥ चो ॥ ॥ १११८ ॥

चो ॥ शिवसमुनाथे देव ह्यमेश्वर ॥ १ ॥ सुरलोक किनाथ
 दमरु त्रिशूल धारो ॥ पद्मग भूषण चटत हे वृषभ के पृथ ॥ १ ॥ कमल
 वदन अर्धचन्द्र सिर सो है गले रुद्र माता वधं वर साधा गि वारायुद्ध
 विक्रम नरपतिक रगोरि भवसागर पार करो पार्वतिके प्राणनाथ ॥ २ ॥
 रागगौरिसारंग ॥ च ॥ निजकाजे वासव ह्यधाम जनचलो भावत शिवके
 नाम ॥ १ ॥ अमुर निखंडिनि देखो २ त सकल भावत पूरणा आज ॥
 १ ॥ सकल विनोद कर निरुप भनत सकल भावत मंगल पूरणा ॥ २ ॥
 रागगौरिसारंग ॥ चो ॥ लोचन लाल हे दुख मोचन ॥ १ ॥ खंज नमग
 नयनिका हा अनुहारो जल मेहरे अम्बुज मीन न सोचल ॥ १ ॥ चन्द्रव
 दन म्यामचकोर ही जोयि उपमा पाउं कविराग्य दोचन ॥ प्रभु मोहन

शिवसमभर

निजकाजे

दोचन

सरभानि

देविभवानि

लाल मंदिरधरणा जलधरणास्पामा राधेति लकदियगोलोचन ॥ २ ॥
 रागगौरीसाह च ॥ सरभानि भगवति वदन माये वागवादिनि जग
 जोतिवनि ॥ १ ॥ सरद चन्द्र दुति आनंद पूरणावेनाकरधारणा
 जपमाना सुस्तक ज्ञान सकल सुखदायिनि ॥ १ ॥ हरिविधि संभु
 चरणा जुग सेवित सकल भूषणा भो है देव देवि ॥ मंदक सुख तुम
 कालिनि ॥ २ ॥ चरणा सरणा गति वदन महि पाते रसिक कविरतनु
 जय जय मानि ॥ रूपति लक सुख कारिनि ॥ ३ ॥
 रागगौरीसाह चो ॥ देवि भवानि भव भय भंजनि ॥ १ ॥ त्रिभुवन
 जननि मंगल कारिनि भय हरिनि अंवेरानि सोहत गले मुराड मा
 लिनि ॥ १ ॥ रक्षक वदन त्रिनयना सोहत मनि माथे भूषणा अभ
 य वरदायिनि ॥ नट परावहाडर निसिदिन धावन दुख हरणा

जबलागि

आगिनि

हो अव

जगरानि सोहत है सिंहवाहिनि ॥ १ ॥
 रागगौरीसाह च ॥ जबल गिघट मोप्राणा नाता तवलागि ॥ १ ॥
 जब मोरे साहेव बोलि पठावल छुत गई संग साथ नाता ॥ १ ॥ माता पि
 ता सुत धावें धुआई को हुन आवे मोरे साथ ॥ २ ॥ माहाजाली विच
 नैया बोलल सा सुदेवार ने पाउं ॥ ३ ॥ मिरा के प्रभु तुमारे दरस को जान
 न लागो भाई पार ॥ ४ ॥
 रागगौरीसाह चो ॥ आलिलिक हारो विति है आविर द डख सुनि ॥ १ ॥
 नो नैय ह कियो चाहै ॥ द्वारे खोले फिरै कल किका हस दुर्ज मदन मोरे ॥ १ ॥
 रागगौरीसाह प्र ॥ हेरि अवसर नाहि पावना मै तो हरि २ अवर भजो
 ॥ १ ॥ संतो मिन पतन जे मै निर्धन को जे मै निर्धन धावना ॥ साधु
 जनन हरिनाम को जाके पूरो नाम न कामना ॥ नाते राम चरणा चित लाये

के सुखरूप म गनि जलावना ॥ १ ॥

रागगौरी ॥ चो ॥ गोधेनुसाठलिये मानमोहन ॥ क्र ॥ पंकजवरनन

भावनदाये जमुनातिरे अम्बरप्रितमसोहै ॥ १ ॥ मधुसूदनवंसिकजा
वत ॥ जोरिसुकमापाउमनिमाथ्यभूषणा ॥ नृपजगतजयमंगलका

रनडखहारनरामा संग जगतीविवेहालनन्दन ॥ २ ॥

रागगौरी ॥ च ॥ अव्ययप्रभुनिरजे ननि सिदिन धावतहरके नामसु

खकाजे ॥ क्र ॥ सैनमुनाजितवाव करतसदा ॥ भक्तवत्स तुमप्रभ

थकेनाथ ॥ १ ॥ हरजनकेघटवासकरतसदा ॥ सेवक कोदिय राज

आप भिषादि ॥ २ ॥ संतजनपालकदुस्ननासकतुम ॥ धावतपावे

चरानुमारि ॥ ३ ॥

रागगौरी ॥ म ॥ दुनिअ्यातमासाजिवंदकीभरआसायह ॥ क्र ॥ कृतेभरे

हिकरेसे आयाडुकमे व्याकुलसासा ॥ इसकेमुहारे दुनिअ्या तमासा यजि

॥ १२२ ॥

मानाये सुखलोकने होराजिवन्दकी ॥ ॥

कल्पाणा

रागकल्पाणा ॥ चो ॥ देविदयानिसकलशृष्टिमा निसुवचन मुनि

मानवसध्यान ताकोकरमध्यान ॥ क्र ॥ नवकोटपंधानिअचाहिसयानि

करखपरचक्रिरेब्रह्मानि ॥ १ ॥ जयंतिमंगलकालि रक्तविजमेवासुर

करतहै पान ॥ तानसेनकेप्रभु तुमवडनायक जिहुलोकसकलगु

मानि ॥ २ ॥

रागकल्पाणा ॥ प्र ॥ नाथसदाशिवहोवसहोय ॥ क्र ॥ हमसरगागत

सरगागयोहै पापकरमसवदेहोवहाई ॥ गतिमतिपतिगुमहोउसयाय

अकरनहैमुझेनामडुहाई ॥ १ ॥ निमिकयकमुझेदेखकमाकेदेव

दयाकर नयनधुमाय ॥ जयपरकासनिष्पत्ति यहविन्तापदपंकजेत

गोधेनु

अव्ययप्रभु

देविदयानि

अकवनाय ॥ २ ॥

देविभवानि

रागकल्याण ॥ चौ ॥ देविभवानि जक सो भामानि सुरनर मुनिकर तु वध्यान
भाव संकर मानि ॥ ध्रु ॥ रसनी मुराज किमाला देव वैरि गण के तु वहरन है
प्राण ॥ नमानि दयानिकर कृपानि जय संकरि खद्वयानि ॥ १ ॥ ति लोक
कीरानि जगत के बेहानि भयहारिनि नृपानि सो भानि ॥ २ ॥

जोरिनन्दन

रागकल्याण ॥ प्र ॥ जोरिनन्दन दुख मोचन नाथ ॥ ध्रु ॥ मुसकवाहन है
प्रसुमोदक कर पर सो भन सुंदर नोहर ॥ पुनक पुनु पुनु नो परवाजि
न नाचत गणपति रिद्धि सिद्धि साथे ॥ १ ॥ फनि मालिन सुर मुनि सर्व
भजन करत साव गण नाथ तुम है ॥ पुनक पुन पुनि नमधुर हो मेखरात
धाने नृप भय सारे ॥ २ ॥

विघन

रागकल्याण ॥ व ॥ चौ ॥ विघ्न निवारण लै म्बोदर सो है विघ्न निवारन

निवारण

॥ जोतिस्व स्वरूप संसार भयहार जोगि भावय सुखदा ॥ क ॥ वर आ
दि मै अंगरजिन नित्य करत ॥ नाथेरु २ सकल मान ह यलै आ सो
हाई यात कधला वाजैया मुरुजलै ॥ १ ॥ भन राज के संग वन्दित रूप
सरम नाथेरु ॥ २ ॥

असर सरन लै

रागकल्याण ॥ व ॥ चौ ॥ असर सरन लै म्बोदर वन्दे चरण सरन ॥ सोहन
सिन्दू विन्दावलि धामय भूपगावय सुखदा ॥ ध्रु ॥ विनू काम के
गरभ मंदिन दुस्त दोलन माथे चन्द्र २ अचल जान है मैया सो हाई या
त कलौ वाजैया सरन लै ॥ १ ॥ तुम भूपति परापीति हके दुखहरा
माथे चन्द्र २ ॥ २ ॥

रागकल्याण ॥ व ॥ हर अति सुन्दर भुद्रु भवानि ॥ ध्रु ॥ कर धरदम्बरुनि
शुल सो भे सिंह वृषभ दोनो आसन किजे ॥ नित्य पति नाम नुबसि द्विवर
दीजे बैर देवन हिजाने तुव पदवानि ॥ १ ॥ नरसि र गत्य धर कंद

नसोभेनीत्यकरनसिवअंगभुजंगे ॥ नन्दिभृदिदुहुदिसनालमृदंगेनाथे
यानाथे वाजनवाजे ॥२॥ श्रीजयपृथिपतिरगावहादुरभनयातिसहदेव
ईहरसंगीते ॥ भवदुरवदुस्मजननासनकीजे संतजनपालनायिहवरदीप्ते ॥३॥

रागकल्याण ॥ उर्वि चो ॥ वृजगुणामुनोरि आजबलोचिन

धरि गोवावाम् ॥ र्क ॥ गोकुलकिनारि राधास्यामाप्योचितध
रि मुनो यिसभूपवास ॥१॥ गोपिसमातिमि माथेमकुटधारे ॥

निरखतहन तेरो करहाम् ॥२॥

रागकल्याण ॥ उ ॥ साधानकरिमेयुराज्ञानजितेकेतेनारदकेटेब्रह्माके

टेअलंकार ॥ र्क ॥ बहे विजाअटपरबहे परपालेजैसेकमलमिनचव
दोलाय ॥ धुनिकेप्रभुतुम वडुनायक अतिरिसकाहे किजनाय गोपा

ल ॥१॥

॥१२६॥

रागकल्याण ॥ उ ॥ रिनन्दकेलालामोसेदानमागेक्योनलेहो ॥ र्क ॥

तेधिवधिनममोसेकहेगागेआलिमुखगवाला ॥ तेरिजातगमारा ॥१॥

फेरि २ लुतेगोरसगगारिहोतकंसकिजालि ॥ तेरिमानअपारा ॥२॥ कहक

वितासों नारिअज्ञानि बहैत्रैलोक्यनाथ ॥ तेरियारिगोपाला ॥३॥

रागकल्याण ॥ र्क ॥ श्रीजुतसंकर्षाणिमुंदर कर दमरु रंगधरे ॥ धिमिकर्ति २

नाचतमाथेया २ सुरनरमोहपरे ॥ र्क ॥ अतिरसिकत्रिभुवणासारसरणा ॥

ललितवधंवर जंझुधरे ॥१॥ वानमिलानश्रीशिवआय क्षतमो ॥ कहय

नृपवर रसिकसारे ॥२॥

रागकल्याण ॥ व ॥ नन्दनदनजिकेबुद्धावनमेकेसेजावोरि ॥ र्क

॥ स्यामसुन्दरवदनमनोहर चंचलनयनादोरे ॥ राधेवल्लभजायवामुरिस

मनचिनलियोहरे ॥१॥ निसवासकर नाहिअरतुहै मूर्तिप्रेमहारे ॥

विन्द्रावनमैरासरसोहै सवराधेयकस्यामा ॥२॥

राग कल्याण ॥ व ॥ वालंरूसे हनेहल गोरि ॥ क ॥ कामकोनेछावे
मोहनमूर्ति चपला वयना कर्जलान यना देवनसवजगमोहै ॥ १ ॥ मोहन
मूर्ति गलमोजयंतिकेमाला ॥ नंदकेनंदन कंसहिरवंदन गोपिकेप्रेमपिया
रि ॥ २ ॥ जमुनामैजायनागनाथेकालि ॥ गोकुलनारनगोवर्धनधारन ईद्र
किमानउतारि ॥ ३ ॥ जोगिजनककेजोगमोगावै ॥ कह्यकविरसुनोमोरे
भैया केसवमनमोआय ॥ ४ ॥

राग कल्याण ॥ व ॥ नारनिहेमा जगनारनिदेवि ॥ क ॥ त्रिशूलधार
नि त्रिभुवननारनि ॥ त्रिभुवनव्यापिन त्रिनयणजननि पतितनकोगतिदेनि
॥ १ ॥ ब्रह्माविष्णुमहेश्वरध्यान ॥ मुनिजनमानि सुकलरानि चारुवेदतुव
वधानि ॥ २ ॥ हेमगिरिनन्दिनि देवदेवीजुम ॥ सेकक पारिनि दुस्मजननासि

॥१२६॥

नि परनिताशिवजिकेरानि ॥ ३ ॥

राग कल्याण ॥ मूर्व ॥ जयनाथसम्मोपरवेश कालिगिरिजानन्दि
॥ क ॥ माथेगंगाहिमकरसारि ॥ भुजंगमफनिमनिवध्वंरधारि ॥ १ ॥
गावैकविमानिरसिकविहारी ॥ नृपरागवहाइरानिजगुनआरि ॥ २ ॥

॥ कान्ध्रा ॥
राग कान्ध्रा ॥ चो ॥

राग कान्ध्रा ॥ चो ॥ सोभानगृहेलागि रिमोमनदेवनकोजायसक
ल निहारामा ॥ क ॥ देविमायिनि सम्बतसरनीहि २ विह्वता सुखकार
रा उघरमानन करन ॥ १ ॥ दयालाक्ष्मिपतिजयपरकास नरपतिसबे
भावनभनत जानन चतो ॥ २ ॥

सबमुख

राग कांधा ॥ प्र ॥ सबमुख चाहे रहि श्रीराम को दोषि रूप कि रासराम
को ॥ र्क ॥ जो मासिको अक्षत कागन पर तारे नरं नहि ॥ जो पिये २ अंहु
अतके जामन रहि गहि ताहारहि ॥ १ ॥ अधर कपोल मुभगन सापरम दह
सन वृहसि ॥ पियात रुगो को घाटन है दिघन यनन निराखिरहि ॥ २ ॥
वैधे जनक भुवन श्रीरघुवर संगसिता डलहि ॥ तुलसिमनहु रसिपुरना
गर विविधव असि संगहि ॥ ३ ॥

प्रथम मान

राग कांधा ॥ चौ ॥ प्रथम माने अंकार देव माने माहादेव ज्ञान माने
मोविन्द वेद माने ब्रह्मा ॥ र्क ॥ विद्या माने सरस्वति नदि माने गंगा साज मा
ने मृदंग नित्य माने रम्भा ॥ १ ॥ गिता कि संगिता माने संगिता कि सोर
माने ॥ सोरता कि अक्षर माने तारे रोग रम्भा ॥ कह्य वै भुभावत सुनहोगे
पालनायक दिन मान सुख रैन मान चन्द्र ॥ २ ॥

काहु जोरस

राग कांधा ॥ प्र ॥ काहु जोरस चाहे सोरस नाहि जोरस पिये तो पिला
उं ॥ र्क ॥ कंसराज कि सुधर गालिनि चाहे तो पकर मगाउं ॥ १ ॥

काहु को

राग कांधा ॥ च ॥ कान्ह कोरस रंग लायने जो ॥ र्क ॥ धाधि मोरे बागई
मनु कि मोरे फोरे तापर स रंग लाई ॥ १ ॥ आवा सुनत मोहन मुरत गल
विच जयाने के माता ॥ २ ॥ चंद्रसखि हितवाल कल छवि प्रिम पदारथ मेरा ॥ ३ ॥

काहु को

राग कांधा ॥ प्र ॥ काहे कंविजा को नामा धनि ॥ र्क ॥ मन सारा मने
मनोरथ परनवः ॥ सुख निदान कि वानवनि ॥ १ ॥ काहा भय अैसे कृपन के सं
पति ॥ कहत फिरत अफनि ॥ २ ॥ देत न लेत घात नहि घर चत ॥ जैसे भु
जंग सिर रहत मनि ॥ ३ ॥ सिवसन कादि आदि ब्रह्मादि न ॥ ईन वश्रान
कि कोन गाने ॥ ४ ॥ जाके प्रिति निरंतर हरिसो ॥ कहरो हि दास जाके सदाह
वनि ॥ ५ ॥

रुमाचिचरा

राग कौंधा ॥ आनाच ॥ तुमारीचराकि आसाजननि ॥ ध्रु ॥ कामको
धमदलोभमोहसव ॥ तुमभवजलसैतारणि ॥ १ ॥ दुर्गादेविदुरमतिनासि
नि ॥ तुमहिजयवरदानि ॥ २ ॥ दासईश्वरकि सुनहोविनि ॥ तुमहिजगत
किरानि ॥ ३ ॥

विनतिधिपा

राग कौंधा ॥ भु ॥ विनतिधिपालिपेरस करुणानिवमाहं मायादेविथकु
रानि हेजोगिनि ॥ ध्रु ॥ श्रीषंडचन्दनधुपअर्घपंचामृत विसे ॥ उफोल
जिफोलनानास्वानमाला ॥ १ ॥ दिगुलिवदनजोति सुर्यकोटिनेजउति ॥
जोनावत्रिशूलनानादेययाकाल ॥ २ ॥ त्रिभुवनव्यापित दमरुसवद
धिक ॥ न्येनावमनसग्पाक असुर कजान ॥ ३ ॥ श्रीजयपरकासचोना
धिचराआस ॥ पुरलीपिआस जिमनयाविलास ॥ ४ ॥

कैसेकर

राग कौंधा ॥ भु ॥ कैसेकरहमजायव आजमनमोरे धंधानअंधा
भयि दिनललयनि काहजाउआज खोजहि ॥ ध्रु ॥ त्रिभुवनपति
कृष्ण सुनजं प्रद्युमनहे ॥ तनुसुतआनिक हनेमिनाई ॥ द्वारिका
विचमेहोतकौनजुगतिनसे ॥ उनसेभेटनृपनदरुई ॥ २ ॥

माहोदेव

राग ॥ आनारा ॥ चो ॥ माहादेवमहेश्वर जनाजुक्त सिर
धारेगंगे ॥ ध्रु ॥ करत्रिशूलदमरु गलरुद्रमाला ॥ पारवति अरध
गे ॥ १ ॥

हेपासा

राग ॥ च ॥ हेपासागधिननव्याल लहायअपाल वसयानुति
पालि पालिनिपां लहाकल्यागाक ॥ ध्रु ॥ श्रीगोपावसुंदर पुरुषअनु
गुति जुगतिनंजगत सजनमजुया ॥ गोकुलसगुनाल गुमानगोपिगन
लिनकावरसवस प्रयाव रसन विज्याक ॥ १ ॥

शिवभजो

रागकांधा ॥ च ॥ शिवभजो रे मानशिवा शिवभजो रे प्रागति संसा
रनेजो ॥ र्क ॥ सिरपरगंगा जताधार सुरसारी कान्हकंराडन गनमोरुड
किमाला धौततताथे दिमिकि रवाजे दिमिकि रदमरुवाजे तुंपावति
पति ॥ १ ॥

दोना

रागकांधा ॥ प्र ॥ दोलत गंगा तरंगा सुमेरिभाव ॥ र्क ॥ उरंगउरस
पर तिलकचंद्रकला भसमलेपन सवअंगा ॥ १ ॥ किलकि र कि न
निरमिहो तसवा नटपतिभाव सवरंगा ॥ २ ॥

द्विगुलि चरगा वासविष नारायन कृपा

रागकांधा ॥ शु ॥ द्विगुलि चरगा वासविष नारायन कृपा
तयमाल ॥ र्क ॥ वयकुंठ अधिपति विज्याकरसन गुयासिस
॥ देनावरसनन चोदिसादिगसोमे ॥ १ ॥ ई चंगुयानारायणा
करुनाया रूपजुसे ॥ संखचक्रादापप्रजोसे विज्याक ॥ २ ॥

~~विज्याक नारायण विज्याक नारायण विज्याक नारायण विज्याक नारायण विज्याक नारायण~~
~~विज्याक नारायण विज्याक नारायण विज्याक नारायण विज्याक नारायण विज्याक नारायण~~
१०५

दौलागिरि परवतस विज्याक चंगुयानारायन ॥ गरुडआ
सन २ यासे संसारउद्धारयासे हे ॥ ३ ॥ विसेंगुयानारा
यणा स्वयंभूस्वरूपजुसे ॥ संसारयागति २ पतिदयकावह
विज्याक ॥ ४ ॥ फनपियानारायणा सेयनारायणा नामहे
॥ मनसरसन २ डुडतोसे कामधेनुमायियोहे ॥ ५ ॥ चोदि
गनिरथया नारायणा विजजित दानहे ॥ तसे चोनाआसा २
द्विगुलि भावदयका वहे ॥ ६ ॥ नेपालयाछत्रपति श्रीराजेद्र
विक्रमसाहे ॥ सोयनेलछिन २ परजायाडरव फुटकावहे ॥ ७ ॥

एगकांधार ॥ ॥ आदीनामतीहारवपरागाहमा
 ॥ कुं ॥ दीमाँव ताहिवाजे दीमाँव वल्ले ॥ तुमगावतस्य
 लीगरफाते तुमतीगि २ तीडीव नागेतागेताग ध्येती
 क ३ धलीतस्य थरकटमनुवा ॥ १ ॥

+ एगगौरिसारंग ॥ ॥ जयेजयेभैरवभुतगनसाथ ॥
 बीज्याकजोगीनीमनकाव ॥ कुं ॥ कोथपोथजोगीनीत्य
 सुहोमबहुणराजाः मतलीमबहुयनिमाई ॥ तजतिमवीछु
 दोवकंगेस्ववाहहमाई ॥ गुनीदेविदुष्टावनीमाई ॥ १ ॥
 बीज्याधनिजोगीनीस्वभाभगवतीचंदी ॥ देमवाधुवा
 मशमाईः चनवाधुमाहदादमोपासमाकोप्रह्लापानि
 कमवातीसिधीगणे ॥ २ ॥ गुमारेत्योमहेश्वरी
 शिवसकमारिमागुदुनीवेलेमाहीकावा नाथ ॥
 वागमतिवीहमतिमध्यमेकी ॥ तपुरीदुष्टारतनेम
 माई ॥ ३ ॥ मध्येपोथडेताभेदआदीनाथजमले
 त्यारिः मोदुमकहनादयान ॥ अंतमकर्णदुगीदेवी
 नेतलक्ष्मचुल्लुहिल्लकलभेरवयादान ॥ ४ ॥

॥ १३८ ॥

पगाके
रागा वेलावीर ॥ प्र ॥ पागकि प्येचसल्लारो कन्हैया ॥ क ॥ करू
अस्नान कछ जुवेथो ॥ सखियान मंगल गावै ॥ १ ॥ हाथनिय दर्पन
मुख आगे दारो ॥ सुंदर वदन निहारो ॥ २ ॥ देवादास प्रभू तुमारि
दरसको चरणांकि आसा हमारो ॥ ३ ॥

जगन्म
राग वेलावीरि ॥ प्र ॥ जगत्स जुल ब्रह्मसार स्वप्नपासा ॥ वस
यातुनि स मतिनयान लार्ख गति दुखया समुदर पार ॥ क ॥
स्वगुनिलोक याधनि संसार सजुसे धनि गो कस काल अवतार ॥
निरुन जनपनि नापत सेराधापनि धाय कलथम साज बाल ॥ १ ॥
रूप काम देव कोटि दोलधि सुरज जोति लकधि चन्द्रमा सम खाल ॥
निरमनि उनउनि तेज गुल अजुगुनि जुसे चीन गुनया अपाल ॥ २ ॥
ध्वज पण पुरुष फल क कंस मुख मतल भुमिस चीन भार ॥ सेवक

गोपि

यास्वसेडरव दयानंविहनेसुख ल्हाकल्लयायाहुनेउद्धार ॥ ३ ॥
 रागवेलावरी ॥ व ॥ जोपिवै ताकीवनि २ जाय मिथाहो मिथ्याहरना
 म् ॥ ५ ॥ मिथ्यानामपिवै शिवसेस धुनैपिवै नारदउपदेस ॥ १ ॥
 मिथ्यानामपिवै नरहरी सुधापटावतगणिकातारि ॥ २ ॥ ईजयवि
 जयसनेकादिक पिवै प्रल्हाद अग्निसोराधिलिये ॥ ३ ॥ नामनन्दक
 विरोहिदास पियाप्रेमपिवै एकसाथ ॥ ४ ॥
 रागवेलावरी ॥ प्र ॥ गोपालप्रभूसंसारसमदुखिविनानं ॥ ५ ॥
 सुन्दरस्वालयावानमफुसोलेचन्द्रमानन्हससकुंदलनंसुयान ॥ ६ ॥
 तयाल्वाकास्वानकलकि हससापान मनुकनंसिलसपुयानं ॥ ७ ॥
 भिन्हअतिह्लयावान वनमालानंकोवायानं पुरुषसमदुवसमान ॥
 कामकलावसयानं मिषापलेपतिवान मोह्यातगोपिनिस्वयानं ॥

गोपालप्रभु

अनाथयानाथ

॥ २ ॥ जगतविरवमानरगासअतिगुमान कंसकिसेआदिनंस्यानानं
 ॥ पुतनाव्रवखन्हानंकुटक डुडु नोनानंकुतकलअनेगमायानं ॥ ३ ॥
 कुवजाजिठिमिसानं चितनस्वाकतयानं तलयनवसयाकृपानं ॥ दोल
 दिह्लुतुथुलानमफट ल्हायदिध्यान लखलीपिल्हाकल्लअमान ॥ ४ ॥
 रागवेलावरी ॥ व ॥ अनाथयानाथपासामदुखिविनानं ॥ ५ ॥ व्रंलववा
 न पुरुषपुरान रतिपतिरूपसमान ॥ भगतिभावनं लायव्रह्मनिदान
 ॥ १ ॥ देवयासारयानावविचालफुटकलभूमियाभार ॥ सोगुलिलोकस
 वस नामयाआधार ॥ २ ॥ कंसयाकालनंदयाकमाल सुंदरवालगोपा
 ल ॥ गोकुलस वस पुसे जुलसाजबाल ॥ ३ ॥ देवकियाकायअपुरु
 वदाय संसारसायाकउपाय ॥ ल्हाकल्लयाविनाते धिपालिवमवाय
 ॥ ४ ॥

हरिपद

रागवेलावी ॥ प्र ॥ हरिपदभजो रेमान सहयतुम सबमुखदाये ॥ ध्रु ॥
 यकपलषादिनभोगकरे पिछे जिय उडि जाई ॥ मानजनकसुतप्रेमबन्धुको
 हि संगन भाई ॥ १ ॥ लंकाभूवनपति मानभरोदिन देहि जलाये ॥ मोहमंदि
 रपर मोजकरतुहे आबिरजमके दुहाई ॥ २ ॥ भुलतमुनिजनयहदेह
 मायापदलखाई ॥ खानकुकरगृह जम्बुकरेदेखो देहरीकाई ॥ ३ ॥ चरणा
 सरन गति दासकहे प्रभु परचितधारि ॥ मानसकलतेजि ध्यानधरोनिके
 हरिगुण गाई ॥ ४ ॥

श्रीरघुनाथ

रागवेलावी ॥ प्र ॥ श्रीरघुनाथसह्यालोविपतको ॥ क ॥ समतागरवहुरा
 वडिछारो ॥ मुगीजगतनिहारो ॥ १ ॥ हितसहोदरके हुनअफना ॥ भुलतजगत
 निहारो ॥ २ ॥ रविकुलचन्दसि रे सदमोह ॥ भिमलय उदिहारो ॥ ३ ॥

मेरे

रागवेलावी ॥ प्र ॥ मैदेखेरघुनाथ सरिबारी ॥ ध्रु ॥ जाकेरथपरकन

के

कसिंहासन विचक्षीजा फहरात ॥ १ ॥ वावकरधनुष दाहिनकरलक्ष्म
 मन ॥ जनकसितालियसाथ ॥ २ ॥ सरजूकेतिरअनुधानगरो ॥ कनकभू
 वनमोजात ॥ ३ ॥ मीराकेप्रभुतुमारिदरसको ॥ प्रभुकेचरणलयतानि ॥ ४ ॥

कहतनाहि

रागवेलावी ॥ प्र ॥ कहतनाहिवनिआगे उधोजि ॥ ध्रु ॥ गोकुलसेमथु
 राकेतेक दूरलेखि २ जोगवनाय ॥ १ ॥ गोपिनिसेकुबुजाकेतेक सुमरि
 रुचि २ अंगलगाय ॥ २ ॥ सुरदासकेप्रभु तुमारिदरसको ॥ नरणाकिआसा
 हमारे ॥ ३ ॥

रेनि २ मेरो

रागवेलावी ॥ प्र ॥ ऐनि २ मैतो रहि दारसोउं ॥ लिवानकन्हैआजगा
 ये ॥ ध्रु ॥ सबसरिवियानमिलि गयजमुनाजल ॥ स्पामसुंदर रुकिनाहि
 ये ॥ १ ॥ सुनदेवादासकि नहिगतिगावैतो ॥ कछदरसनहिपाये ॥ २ ॥

अजबवैकुंठ

रागवेलावी ॥ च ॥ अजबवैकुंठवनाया काव्यलिरंगा ॥ ध्रु ॥ पानिरंगा

पौनविंरंगा रंगा धर कासा ॥ चन्द्रसूर्यदोनो वहे रंगमिरंगलाया ॥ १ ॥
 काबलिमैकनकउपजे कस्तुरिअर्धंगा ॥ हरिवोलाके पारउतरे मगनभय
 वैरागि ॥ २ ॥ तनसुतनकि सारिपहेरे मनमोहनकिमाला ॥ सातकोस
 जाके वंछुअनन्तनपाया ॥ ३ ॥ इतकाब्येनि उदहैकोस विचमैसंग
 मिलाया ॥ चरणादासकि महिमाचरणा कमलवनिहारि ॥ ४ ॥
 राग नट ॥ नट ॥ प्र ॥ सरिजिमवना स्पामहे ॥ ५ ॥ स्पा
 मसुंदरथिन्ह मेवमडुवतिभिह ॥ जगतसमडुवसमान ॥ १ ॥
 पिरतियापासन केनकावतलमन ॥ कामकलारसवसमान ॥ २ ॥
 वसमदयक थनचोनै मछुकजिमन ॥ बिनानगधेतयपान ॥ ३ ॥
 ह्हाकह्यादिचरणा तोलनेमफुजिमन ॥ गथेभमलयजिलस्वान ॥ ४ ॥

अरिजिमने

राग नट ॥ प्र ॥ जय २ महेश्वरिसरगानुमारि ॥ ५ ॥ जननित्रिभु
 वन आदिभवानि ॥ सुरकुलरक्षक असुरसंहारे ॥ १ ॥ कवहुंवालरु
 प कवहुं वृधा ॥ कवहुं सांतन कवहुं भिम ॥ २ ॥ जलथलव्यापित
 त्वहेदेवदेवि ॥ कहतसेवक दुखदुखभवानि ॥ ३ ॥

जय २ प्रभु

राग नट ॥ प्र ॥ जय २ भैरवभूतगगासाथ ॥ ५ ॥ भैरवभयंकर
 भवभयतारन ॥ दिविनानमडुगति जगतयानाथ ॥ १ ॥ ब्रह्मायनिम
 हेश्वरि कोमारिवैभव ॥ यावद्विनंउधार भगत बनावन ॥ २ ॥ वारा
 हिनिईन्द्रायगोचामुन्दामाहालक्ष्मि ॥ भैरवसाहितनं विज्याकरसन ॥ ३ ॥
 ह्हाकह्याअज्ञानि सिसेखवकृपान ॥ तिहुयेदिपालिकोसवाससदान ॥ ४ ॥
 राम नट ॥ च ॥ राम मेरेपुजि राम मेरेधन ॥ ५ ॥ रेहपुजिहै
 अगम अर्या ॥ कोदियक वनिज न साहु माल ॥ १ ॥ साहुकेपुजिआवे

जय २ भैरव

राममेरेपुजि

लायनाहकदिनवैसगमाय ॥२॥ खेनिनकरीयवनिजनजाय^य रामवजा
 नावैधेवाय ॥३॥ यहपुनि अनिदहयनजाय राजनदारेचोरिनजा
 य ॥४॥ सुरदासप्रभु यहगुनगाय रामनामतेकराठ लगाय ॥५॥
 राग नट ॥ व ॥ कनउतवेग मोहिनगत हुं देनाउं मंतारमोरे
 कटयग्वला ॥ १ ॥ भांगनहिवतुवा रुसिवेसला फेरिजाई आनदे
 लाहसिउठला ॥ १ ॥ भागवाय २ बोरो रतिमोहि यकदिनकयवे
 आनवेमजोहि ॥ २ ॥ अकरकवरवद चन्दनमुसरा केनेदिनकन
 रामेअसारवधतुरा ॥ ३ ॥ हमदुरगोलिउमन वायिकिदेविबिहायि
 नाहुनि वापेमाथि ॥ ४ ॥ भनयविआपति वसाहकीसिंगान
 पोवनपेसैथि धतिडग ॥ ५ ॥

राग नट ॥ व ॥ कटडुखसाहेव वैसाहिज्जलउ मन्तामाहेवसमन

भेल ॥ १ ॥ वाघदलनाकांध मृगदलनाधोति अगने आगमै जोसायव हा
 थि स्वथि ॥ १ ॥ गलेरुद्रमानासिरजटाधारिवसाहाचठलरीव दमरुखा
 ई ॥ २ ॥ भनयविआपति अमननसेवा चंदनदोहिपतिवैदेनाथदेवा ॥ ३ ॥
 राग नट ॥ प्र ॥ फेरिफेरिजनम गमायके आवना गंभिदेहिजनमका
 करना ॥ १ ॥ आमात्रिछाकवडनमरना अपने करनिलियसाथ भाई
 चलना ॥ १ ॥ वेतावेनेकोहिसंगनाहिचलना मुठि यकलकरिसाथभाई
 चलना ॥ २ ॥ घरकापंछि पौनउडिचलना यहिसंसारसबभयरुना
 ॥ ३ ॥ पापपुंयवेपारकरना जमके आगे लेखाभरना ॥ ४ ॥ जोजोभक्तनिगुन
 गावना मरनकावेला सवरनपाउना ॥ ५ ॥

राग नट ॥ ५ ॥ केनेदिनफिरतउदासि रेभमरा ॥ १ ॥ सुखकेबाले
 च सबकोहिसाथि ॥ विपनपरेसबहुतिरे ॥ १ ॥ तुमपंछिहमव्याधावीचा

कटउग

कनदुर

श्रीरजनम

कनोदिन

रे ॥ केनेक उडि उडि जायो रे ॥ २ ॥ यहि फल मे हरि तुमहि वसतु है ॥ स्व
हि फल उडि उडि जाई है ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु तुमारि दरसको भवसागर
से उतारो है ॥ ४ ॥

अंघिया

राग नट ॥ ५ ॥ अंघिया हरि दरसन किमै भूषि ॥ ६ ॥ भूषि तारि
कमल कुमितायन ॥ जलविनु पुरयेन भूषि ॥ ७ ॥ नहि आवत जिन लोखिन
पगये ॥ वहिकागत मसि कुठि ॥ ८ ॥ वरे वरे अंघिया स्पाम सुंदर कि बहे
अंघिया सव भूषि ॥ ९ ॥ विद्रावन किमै कुंज गलिल मे बहे ज्वालिनि
सव थाडि ॥ १० ॥ सुरदास के प्रभु तुमारि दरसको कंउन सेना मे चुके

गति कथा

राग नट ॥ १ ॥ सुरलि बजाय जमुनातिर ॥ २ ॥
गहिरवन दियाना ॥ रेवत हे रघुविर प्रभु जि ॥ ३ ॥ विद्राव
न मे कुंज गलिल मे ॥ जावत नयरा धुमिर ॥ ४ ॥ जोवर धन
नत धेरा चठाय ॥ ग्रहन रासि मुख वसि वजाय ॥ ५ ॥ घरे २
कृष्ण खेल थि ॥ द्युधुरि २ कति सव माखन धुरि ॥ ६ ॥ सतन के
प्रभु तुमारि भरोसा ॥ तारो जम माहादारा प्रभु जि ॥ ७ ॥

तुमहि नहि नहि

राग नट ॥ ८ ॥ तुम विनु नहि नहि मेरि माता ॥ ९ ॥
तुम हो जलधर पवन अकासा ॥ पूरा करो मेरि आसा ॥ १० ॥
तुम हो अग्नि दिन कर चंदा ॥ काटो जम कि फेन्दा ॥ ११ ॥
तुम हो पूरन वंशरूपा ॥ चारो फल फल हू मे भूषा ॥ १२ ॥
विधि हीर हर कर जोरि मानि ॥ चोद भूषा तूं हिरानि ॥ १३ ॥

गावैय सेवक दृधमनलाये ॥ चरगासर रा मैआये ॥ ५ ॥
 रागनद्वेलावरि ॥ ५ ॥ संसारसतलहेलकावजननिमाई
 ॥ ६ ॥ होसेतलध्वसरि कोचलायामनयाना गुह्येसहिमुं
 नया ॥ ७ ॥ कामक्रोधपापलोभमोहमलुकफिसे किलसचिनातलत्वा
 नाव ॥ ८ ॥ दुयायपापनंजिकेन थुलिदुवदैई वनभातेपमफुध्वंधंन
 ॥ ९ ॥ वननिमदसे वल वैसजिधन ध्वजिवया दुंसुखमन ॥ १० ॥
 वनगनचोनगनजिअधमि म्वानाचोन तयमतेधिनंजिवोना ॥ जन
 निधिधकाचोना धिलिकोसवासयाना अवलान मडुमेवजो
 ना ॥ ११ ॥ टहाकलया आसाथी भईरव गरा पतिदिगदेव
 आदिभवानि ॥ लखलेपे जिअशानि नवदुगा हेभवानिकेने
 मने जमपुरी देस ॥ १२ ॥

रागविभास

१५०

नया

रागविभास ॥ अत्रि ॥ ययामसू कलनेफाया वय डगर ॥ हाय २
 आवजिन छायेन्हावपासा ॥ १ ॥ सदानंजिवदने नसा मनयावधम
 सोसेलयाव जुयासाजयाव ॥ २ ॥ नामदकावेसाखि चलसधोयाव ॥
 पिरतिदहलया दुगुनदयाव ॥ ३ ॥ गोकुलसलुयगथे थमनंलुयाव ॥
 श्रीयंडमहाक फनंलगनाव ॥ ४ ॥ पदपतिनेधु आरवतदिकायाव ॥
 लिथुसनससिह सेन लिवोनाव ॥ ५ ॥

रागविभास

रागविभास ॥ ज ॥ नि ॥ रामयानामकावजिव अथिरसोयावरे
 परउपकारजसलाडये सियावरे ॥ १ ॥ जमयाडवारवनेभालिवनग्याक
 रे ॥ थुलिभालपावथमपापवतायावरे ॥ २ ॥ मायाभोहतमरसमननं
 लिकावरे ॥ सत्यधरमतप जुगुनि नस्वावरे ॥ ३ ॥ टहाकलनेन्हासेतया

विद्यालयानावरे ॥ देवनंयाको जुल लोभनं दुचावरे ॥ ३ ॥

राग विभास ॥ ५ ॥ कपतिमायानं चिन्हा हेपासा ॥ ६ ॥ न्हेंवसजिदो
ना छिपालिमजोना सुखयारसतुलिना ॥ लोभसतुदुना थिरता सेचोना
जमयापासमखना ॥ १ ॥ हितनं जिं कना न्हससमदना आवनुगलमदि
ना ॥ अनारि मननलिमनं मखना मसुलपु सडुविना ॥ २ ॥ पुरानआ
दिनं तंत्रमंत्रजपतप दकोत्तिनं वाना ॥ न्हि न्हि दिय्यादिन जुसेवनदिन
दिनामकायमलाना ॥ ३ ॥ अनेगविधिर्न नरयापतिर्न मल्लमहिन्दर्न
ल्लहाना ॥ दुपायदासिर्न क्षमाजिपापिर्न कृलयादासर्न ल्लहाना ॥ ४ ॥
रागविभास ॥ ५ ॥ ईश्वरि गुह्येश्वरिमानाः करुणामिवातं सोव
अनाथसियाव ॥ ६ ॥ चन्द्रकिरणातिदिरूपयातेजजोति ॥ मोल
माला भिन आति चंरिड भगवति ॥ १ ॥ यायमफुद्धिभगति दोनधास

जिविनाति ॥ वियमतेडुखअति छिचरणासंगति ॥ २ ॥ महिक जिहम
आति सेहलपाचोनामति ॥ मभिन कुदिनअति कृपा यावमुगति ॥ ३ ॥
जगतसमडुछिती सदासिवछिपिरति ॥ ल्हकल्लयानिरगति लखलपि
भगति ॥ ४ ॥

रागविभास ॥ ५ ॥ मननं मनेना अति सुंदर पुरुषमनि ॥ ६ ॥ जि
पनि अवलाजाति मसियाछिपालिपति ॥ दरसनविव भति स्वगुलिहो
कयाधनि ॥ १ ॥ न्हि न्हि दिय्याभावाधिके करुणामडुलाजिके ॥ गुंसहोव
स्वानउति जुलप्रभू थमथनि ॥ २ ॥ गथेनं ध्वजिवहने गनवनेगनचोने
॥ गथेध्व पुरान हने जुगतिमानयोथनि ॥ ३ ॥ तिरियाविपति आति विध
मनेजडुपति ॥ ल्हकल्लयानिरगति लखलपे भगति ॥ ४ ॥
राग विभास ॥ ५ ॥ मोरागति होयजति केवजानवोलाः माई हेउमन्ता

उमापति ॥ १ ॥ जैयावदिगंवर वसतिमुसाने ॥ तैयावउमागिभिषि पोसथि
सजति ॥ १ ॥ जैयावदिगंवर फिरतिउदासि ॥ तैयाव पथमवह कासि
परिवासि ॥ २ ॥ तैयाववृषभचटिधरधिकवानि ॥ तैयावउमोरापति हसथि
भवानि ॥ ३ ॥ भनयविजापति सुनहोभवानि ॥ विहिनेर मायिद्विय
यकयपरानि ॥ ४ ॥

श्रीजयगारापति

राग विभास ॥ ५ ॥ श्रीजयगारापतिमेवमहुजिगति नेहु येसहश्रवि
नति ॥ १ ॥ मनुकलोवआति थुनावतयामोति नुयुव दन्तउतिउति
॥ वसयाव्वातजोति चन्द्रमाकोतिउति व्वातस ह्याउफरतिफरति ॥ १ ॥
प्रसुमोद कठि भिन लिन मालति थुतिन सुंदरलाहति ॥ ताहाकसोल
भति भिनावअजुगति न्हसपन सनफितिफिति ॥ २ ॥ लसिकवान्तुति
न्होनावदेदेषानि आसनह भिन्ह तिहुंति ॥ ३ ॥ लहाकलअना

थ मति विनतिकोटिकोटि विहुनेशुगति मुगति ॥ दुखजिजुलअति स्वह
नेमिरवांभति फरकीविघनभतिभति ॥ ४ ॥

नमोश्रीभैरव

रागविभास ॥ ५ ॥ नमोश्रीभैरव सरगादिपातिस ॥ १ ॥ विपतिअति
दुखरोगनंकेनधुति पापमोगजुयागुलितजिचोने ॥ १ ॥ मसियादिशान
ध्यान सेहलोपमुफजिन ॥ मभिनजिकुदिनअति लखलोपभगति ॥ २ ॥ लहाक
लसिंहकिया विनतिनेहुनेप्रश्र ॥ दरसनविवभति कृपायावमुगति ॥ ३ ॥

हानधने

रागविभास ॥ ५ ॥ हालघने २ छुछुरुवाजय माने २ हासिवोले रंगन
हे माताकैसे नाचय कारवयभसमशोले ॥ १ ॥ अहिमाहिमेरेमोहनसाग
र चन्द्रमानिकरु फोते ॥ दिमि २ दमरुवाजय नाचय संकरभोला ॥ २ ॥
भूतवेतालतालवजावे नन्दिभिंदिगितगाय ॥ सिरससिसोभे कसुममा ला
वाहान संकर गोदा ॥ ३ ॥ भनयविजापति सुनहोपार्वति स्वामिकेनवोशो

मंदा ॥ तोहरस्वामि जगत ईश्वर भुगतिमुगतिदाना ॥४॥

रागविभास ॥ ५ ॥ छुमि २ खसशिख माहादेवस्वामि उठि २ जोरि कि
चठिगंगावनि ॥ ६ ॥ किंनवनतुति शिवभागवधिलागि मुनसारिजरा
नयन उठिउठिआगी ॥ ७ ॥ वरनसखसशिख तुनलमुंदमाला फरि २
ज्पलदंमरु फाटनवाघछाला ॥ ८ ॥ यकशिवनंग्प धरथि कुवानि शिव
केचरितदेखि हसथिभवानि ॥ ९ ॥ भनयविजापतिमुनजगमाना ॥
वनहि उ मन्तात्रिभुवनदाना ॥ १० ॥
रागकौसिकुराग ॥

रागविभास ॥ ११ ॥ हालघने २ छुघराजय माने २ हासिवो
ले ॥ रंगनेहेमाता वकैसेनाचयकारवय भस्मजोले ॥ १२ ॥ अहि
महिमेरेमोहनसागर चंद्रमानिकरु फोते ॥ दिमि २ दमरुनाचय
यनाचय संकरभोला ॥ १३ ॥ भूतवेताल तालवजावय नंदिभिंदिगे
नगाये ॥ सिरससिमोभेकुमुममाला वाहनसंकरगोदा ॥ १४ ॥
भनयविजापतिमुनहोपार्वति स्वामिकेनवोलोमन्दा ॥ तोहरस्व
मिजगत ईश्वर भुगतिमुगतिदाना ॥ १५ ॥

~~राग विभास ॥ १६ ॥ छुमि २ खसशिख माहादेवस्वामि~~

रागविभास ॥ १७ ॥ सुनशनेश्वरि रसनेमानेय ॥ सुंदरिषवन
तोरेमधुरसुयाने ॥ १८ ॥ धनदेवोजनदिवो राजेविभागे ॥ भू
घनरत्ननदियो कहेअनुरागे ॥ १९ ॥ सत्यकैरो आनेहैरो जिवनउदा

से ॥ देसरभरतराजा रामवनवास ॥ २ ॥ नासेरोकारा नाहिकहे
 रानि वेदमानि ॥ देविकुमुदि निपति जगजयपानि ॥ ३ ॥
 रागविभास ॥ ३ ॥ इयप्रियमालिमनोभववेला ॥ नियतानेपही
 नाहितवेला ॥ १ ॥ सैलसुनेसिदभी संभो इरगते ॥ ४ ॥ कुत्रनभ
 वति मदनसरपिडा ॥ किंतुनविस्मति मनसिप्रिदा ॥ २ ॥ विरचय
 परहर नामसारन ॥ तेनपिनानि सि संकटतरन ॥ ३ ॥ किमितिबिषि
 दसि विलपनिदीन ॥ त्रिगागति सकल मपित्वदधिरं ॥ ४ ॥ कुपित
 भुजगफल भिरवनभासं ॥ मुंचासिदर्पणा मपिसत्रास ॥ ५ ॥ चरणो
 नुपुरमपिनदधासि ॥ मनसिग निगद भि येवलहासि ॥ ६ ॥ उर
 शिवहसिनव विस्ममपिष्ठीतं ॥ मनसिगभल्ल धि याकिमुभितं ॥ ७ ॥
 वदतिभानुरिति सुहृदपदेसं ॥ कुरुपतिरे व्यति विमृजन क्लेशं ॥ ८ ॥

रागविभास ॥ ३ ॥ पतिरुनपति वदतिपनुसतनं ॥ किमितर
 दपिषासुंदरिसुहृतं ॥ १ ॥ संकरमाकरु कोपंविनयपरे ॥ २ ॥
 भ्रियमवलोकय विरचयसकलं ॥ सुहजभुभगरुविलोचनयूगलं
 ॥ २ ॥ उदयतिपलक पतलमपिसतनं ॥ स्मरनीपरेवहसिध्वनि
 नियतं ॥ ३ ॥ जनुरषिदिनमपिलवमपिपिफलं ॥ यत्रप्रेमानि
 चेतोविकलं ॥ ४ ॥ त्वमपिविभ्रससरिविभ्रसामनसा ॥ अभिम
 तमेवभविष्यतिसहसा ॥ ५ ॥ सोनरुचिंनयविरचयवदने ॥
 किमपिनसिध्दतिवैरिणीमदने ॥ ६ ॥ किमीजिनपस्पतिनिजवर
 मल्लसं ॥ कर्मविधयंपरिणामिसुरसं ॥ ७ ॥ वदतिभानुकवि
 रितिमधुरजनि ॥ विहसतिमानव तिमदसमनि ॥ ८ ॥

हरे

रागविभास ॥ व ॥ हरहे सावहे निरधन जनम जन होयि ॥ १ ॥
 निरधन जन बोली सब उपहास या ॥ संग सो भेक दु युसरायि ॥ १ ॥
 जब धन धन वित पाडुना आवय नित्ये ॥ निरधन भेलानहि कोहि ॥ २ ॥
 भाई सहोदर मुख डन बोलाया ॥ डरपति हर सब कोहि ॥ ३ ॥
 भनय विआपति सुन हेम हे भर ॥ संपति तारा कि छाया ॥ ४ ॥
 रागविभास ॥ प्र ॥ वदन काहे मलिन को नुम ॥ ५ ॥ आश्रम निफ
 ट भूपति पुदन को मलवानि सहित ॥ यववन धन आयक तुम
 कारणा को न कभित ॥ १ ॥ बाधुं वर आदि विजोग ज डरव से सो कहवत
 व मुख ॥ यत्न वह करि कारज नहि पुरि विस्मय जह व डरव ॥ २ ॥
 यहि सबत पदे वड लक्षन डरित को तव चिन्ह ॥ भूपति की अति
 हित कि वचन सुनिक वदन किन्ह ॥ ३ ॥ प्रेम विनय से वाक्य निरवास

वदन काहे

से वज्रिज भर दिन्ह ॥ भावत सिंह विर गित मुंदर मंगल
 को नित किन्ह ॥ ४ ॥

आगम

रागविभास ॥ प्र ॥ आगमन मम हेतु योवन ॥ ५ ॥ नाम समा
 धि वनिज हमयक जन्म भय धनिगेह ॥ दुस्तर्वधु सुत नेधन
 कारण मै छुत जित जिनेह ॥ १ ॥ मै धन रत्न होत नया दिन मै सुत
 नारि सै हिन ॥ वंधु सुमित्र ने डरि करि जव वासवन तव किन्ह
 ॥ २ ॥ मुंदर गित कहत सिंह विर गान भजन को हित ॥ देत सदा
 रस कानन किरस पान करा ॥ यक चित ॥ ३ ॥

मधुरि वचन

रागविभास ॥ भु ॥ मधुरि वचन नेन कि व आव ॥ भाई हेत यमाल
 वचन्या परमान ॥ ५ ॥ तय मते थव माया स अति न भुल ल पावन
 ॥ हने गद्ये थव ससार सागर तारे ॥ १ ॥ धरिया पहरु से पहरया
 दिन आव ॥ वन थो जिवन या दिन आव ॥ २ ॥ सुमरना भै रवि

विवर्जितहरवर्ण ॥ न्हेवलिवकुंकाल दुरवभुक्तकाव ॥ २ ॥
 रागविभास ॥ प्र ॥ हा हा दे भवानिमाई त्रिभुलरूपधरनि
 ॥ र्क ॥ दईवकायाउथे दनावकायाविष ॥ निवधिगुक्पाक
 लकिर्ति ॥ १ ॥ अनायामनिगुसे त्रिभुलवर्द्धनिदेवि ॥ सिव
 सक्तिस्वरूप जुयाव ॥ २ ॥ मोहनकरुणामनि निविधनविष
 मनि ॥ भगतिजनलिनयासेथमन ॥ ३ ॥ दहतवालषयामन
 पुरेयावसुदृष्टिर्न ॥ विवधिगुनामदनकाव ननान ॥ ४ ॥
 रागविभास ॥ ग ॥ हाय २ प्राननाथ थमजुक

जननिद्वारकागिरा

रागविभास ॥ शु ॥ जननिद्वारकामिनिमाई ॥ विवर्जित २ आव
 धिगुलिदरसन ॥ र्क ॥ संयनसविलजित धिगुलिदरसन
 अतिभिनगुया २ चोसविज्याक थानकासे ॥ १ ॥ निलउनजोना
 थिक धिगुलिवदनजोनि ॥ सिसकपरा २ शेल न्हससकुंद
 लाधिक ॥ २ ॥ गलसनरयासिर अनिर्नलोयाव लस ॥ जवनरव
 त्वांडु जोसे खवनपात्रजोसे ॥ ३ ॥ संसारयामनिगुसे नरदेगुलि
 लासातासे ॥ विरथ माहाभासन धासे भक्त रक्षायासे ॥
 ४ ॥ धिगुलिपालिपाजोनि खनावजिमनस ॥ तेलोधिजित २
 विस्पेस्वगोलमिधानं स्वस्य ॥ ५ ॥ कांतिपुरनगरया श्रीराजेद्रविक्र
 म माहाराजा ॥ थवपराजापति २ पालयासेसदानंदिन ॥ ६ ॥
 रागविभास ॥ चौ ॥ हेजननिमाई क्वाछलकिया ॥ तुमारिपरन

हेजनमाई

कि सरनमे आया ॥ ५॥ हमको ये डरव कैसे भई आया ॥
 कर्म कि जो लेवा ई दिन भई आया ॥ १॥ तुमारी भक्ति हम क्या
 अपराध किया ॥ हमको देमा करि वरदान दिजे ॥ २॥ देव विप
 दे भई विपति किया ॥ हमारी को हिनहि तुमारी आसा ॥ ३॥
 डरको नास किजे द्वाका मिनि माई ॥ कोटि अभय वरदास
 को दिजे ॥ ४॥ देव देवि माता यहि पद सुनि लेहो ॥ दास कि
 कर जोरि विनति हमारा ॥ ५॥

॥ १६४ ॥

हमारे

राग कोला ॥ १॥ हे सखि ने हुने जिवन ति गथे नाय ज दुपाते विफल जन
 म वधिनान ॥ देवन घलकल निहनि ये फासे तल दुयाय उपाय अवला
 न ॥ १॥ सजनिया वध म उपाय ॥ ५॥ चर चद्र मागथे हीर पिरानि
 उठे आव फल पापि कु व जान ॥ स्वगुलि भुवन दले मुरज चद्र मारवने अप
 राधि म दुजि संमान ॥ २॥ मिजोग पास न केन डरव देहे न म उनः पिछोय म
 जिव जिव होयान ॥ ३॥ गो कल स द्रव नाव जिगुलि विधान द्वाव होन कि व पिरानि
 स्वानान ॥ ४॥ पर उपकार याव परलोक भिन कि व द्वाक ह्या वचन ने नान ॥ ४॥

हमारे

राग कोला ॥ ५॥ हे नगनान्दिने विनति सुनिय ॥ ५॥ कोने गानि
 अब हम रह्य भवानि ॥ कि दुवन भावै जग कि करव रानि ॥ १॥ कतय कह
 मै डरव मन के उदास ॥ द्योत वरकर देवि तो हरस ॥ २॥ मनुष्य जन म लेल

अरयतदिने ॥ नहि तु वदोहि अनदि यकेस ॥३॥ जत अह दुभित हुत मह
रुधाने ॥ नदिय गर्भवास तोहि रिनाने ॥४॥

राग कोला ॥ प्र ॥ कान्ह धुलिजिविनाते सदा ५० ॥ ध्रु ॥ बाल बलिने
रस जो भनवेलस तिरिवरतिरस याना ॥ भुललपावथम ममुगुमानन धर्म
मिवा नमसन ॥ १ ॥ ज्याथ वैसस लोयन कंवलस थथेन मायामतन ॥
अनेमलो भमोह दयावलोक दोह मफया विवेक दतान्ह ॥ २ ॥ न्हिनसनसे
चोना चानसदेसेचोना काल थथेन तु वना ॥ भालपेमफु मन सोयाव जनधन
प्रभु दिपालितु ममन्ह ॥ ३ ॥ न्हाकलुकमति मेवमदुगति अनेगदोन
देमायाव ॥ ममसेसनाथास पापया जालस जिह्ममतेतयवाना ॥ ४ ॥
राग कोला ॥ भु ॥ आठदसभुज सरससंजुक्त मेवा सुरसिर सरिजिनि
॥ ओदस हस्ता आध्र हरद ड मध्ये सोभित वैरिड ॥ १ ॥ जय २ चर
गा सरगा भवानि ॥ ध्रु ॥ रुधिरपानाहि विकसिलोचन अरुणा सवमुष

रागहे ॥ दमरुडिमिडिमि सवदमुनि कहु असुर मन वयरग ॥ २ ॥
कनकमनिमय अंगभूरवम स्तजोगिनि संगिनि ॥ सिंहवाहिनि सम
लविजयानि करतवहुविधी रंग ॥ ३ ॥ विष्णुवास विवसुचीधाता अरुन
दिगपति देवहे ॥ जोरि करजुग जगतजननि चरगा पंकजसेवा ॥ ४ ॥
भगति कृतमति नृपति जगजोति सरगा कयल तो हातरे ॥ सारनरक्षनि
पापमोचनि करन मोर उधार ॥ ५ ॥
राग कोला ॥ प्र ॥ भगवन सुनियवचनहे ॥ ध्रु ॥ यकसमयमार्क
दय आश्रमजैमिनि गमनकिन्हु ॥ कंज चरगा जुग सादर वंदित
पुछत प्रहसुदिन ॥ १ ॥ जन्म भये जुगमो मनुव हस मन्वतरा
राज ॥ काविधे देवि प्रसाद वर भई अखममनुकिकान ॥ २ ॥ प्र
सुनिमार्कदय भावत सुनिय अव दिनकाज ॥ मम अवकासन
हितनिकदिन हीन कर्मय हसाज ॥ ३ ॥ विंध्यागिरितुम जाउदिन

वर धर्मपदिरिहार ॥ जानतसो जह सकल विस्तार ॥ दुनतसै सयभा
 र ॥ ४ ॥ भावत सुंदर गिन माहार स भक्त हिन सिंह विर ॥ गायन के
 रस ईन्दिय किवस आनंद को पथ चिर ॥ ५ ॥

राग कोला ॥ प्र ॥ वचन मानि सिय माहा जानि ॥ १ ॥ मार्क देय के
 हित वचन मुनी जैमिनि विधमो धाय ॥ विहगने मुनि आवत देवत
 मुनि भेजल सुधि पाय ॥ २ ॥ जैमिनि ने जव देखि वह गको आय पछिसन
 मुख ॥ मान कर अति हित परसपर दुति गई जग दुख ॥ ३ ॥ जैमिनि
 पुछत प्रहम यवर धर्म पीछि सुनचार ॥ काविध देखि प्रसाद पर भार
 अहम मन को राज ॥ ४ ॥ प्रहम मुनि चनु विहग बोलत मुन मनु कि
 सब काज ॥ जो मुनि ने पद को सुकिके कहि सो मुनि विस्तार आज
 ॥ ५ ॥ भावत सिंह विर अभद पद गान भजन साज ॥ ईश्वर किज
 स उनम किरस नान न किरस एज ॥ ६ ॥

राग पज्ज ॥ चो ॥ मानन कारि हेरि स्याम सुंदर सो है जाके दशा
 देखा तिनै लोक मो है ॥ १ ॥ दाधिके लुन निहार संग लिय ज्वाल वाल मूद
 लिके धुनि मुनि अति सो भे ॥ २ ॥ नंद के कुवर लाल ज सो दा के अति प्यारे राधी
 का भे व्याहार ॥ ऐसे तुम को बाहिलाल मनमार सदिना बंधु क बडुवाल ब
 क वीवधाता कैलिके रत गौरा उ दो है ॥ ३ ॥

राग पज्ज ॥ व ॥ हरकानाम सदा सुख दायि ॥ १ ॥ जाके सुमिरन अजा
 मिनि उधरे ॥ गणिका हो गन पाई ॥ २ ॥ पंचातिके राज सभामै राम नाम
 सुधि आई ॥ ताको दुख हरु हे करुना मय अपने पंडु जं बटाई ॥ ३ ॥
 धन दौतत सुख अपने कर जानि दिन मो होत पराई ॥ राम नाम छोडि अ
 वरन जानि गाधे दिन किमितम् ॥ ४ ॥ जो नरज सकृ पानिधि गाय ताको
 भय हो सहाय ॥ कहनान क मोहि यहि भरोसा आनिगयो सर नाई ॥

लातन

राग पर्ज ॥ च ॥ लालन हमारि पाल वसिय ॥ १ ॥ हमारा वानिल
वन सुपारि ॥ मन माने तो चाखिये ॥ १ ॥ तुम तो मेरि थाकुर साँसे जो बाँहे
सो कीरिय ॥ २ ॥ कृपाराम अजो ध्या जिवन ॥ जो प्रागे सो दे उँगे ॥ ३ ॥

जये रवीवरी

राग पर्ज ॥ ब्र ॥ जय २ लम्बोदर मंगल सरस करन सरन गणेश ॥ १ ॥
तोहि ब्रंखानोहि हरीहर हरन सुधा कर तोहि ॥ भव जल निधि सुतरन ॥ १ ॥
स्थावर जंधम तोहि जल थल ॥ सकल सुधारन तोहि जग मग जोति वदन ॥
२ ॥ वदन नाग रिवर राज माहार सा ॥ दुरि वत उद्वारिणि वानि असरन लोक
सरन ॥ ३ ॥

देवो रि

राग पर्ज ॥ व ॥ देवो री नन्द नन्दान यरा भारी ॥ १ ॥ सव साखिया
नामिलि कान्हविराजे ॥ तारा न पुरन चन्द्रा ॥ १ ॥ नन्द दुलाल प्यारे जान
न दे उँगे ॥ दारों गि प्रेम कि फन्दा ॥ २ ॥ गंगा जमु ना विच सदायक संग ॥ नेरे

॥ १२० ॥

नयरा विच गंगा ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु तुमारे दरस को ॥ तुमारे दरस बिनु
अंधा ॥ ४ ॥

गर्भ कियो

राग पर्ज ॥ न ॥ गर्भ कियो जिन हारो सिनारा मंजि ॥ १ ॥ गर्भ
कियो लंका पति रावरा ॥ तो क २ करदारो ॥ १ ॥ गर्भ कियो लत नागर
सागर ॥ नील खान करदारो ॥ २ ॥ गर्भ कियो उन चखे वा चखे ॥ अँल यन वि
दुर करदारो ॥ ३ ॥ गर्भ कियो हिरं त्याक सराजा ॥ नख धरे उदारो विदारो ॥
४ ॥ कह नानक सव गर्भ करेया ॥ सरन आयो सँन धरो ॥ ५ ॥

नी अवन को

राग पर्ज ॥ दे ॥ त्रिभुवन को तुमहि न हो करुणामय ॥ १ ॥ जाको
बिभु कहत वैभव गरा ॥ सव कहत गिरी जैस ॥ साक कहत देवि
जग जननि सौरिक कहत दिनेस नाथ जि ॥ १ ॥ विप्र कहत प्रब्रल
निज न वोध कहत लोकेस ॥ मुनि जन कहत मधेन्द्र योगेभार अ
न्ये कहत करुनेस ॥ २ ॥ बाधित फल तुम देत भगत को तुम यक

किंवदुभेस ॥ सुरनरमुनिगनध्यानतनित्य तुमही ब्रह्ममेस ॥३॥
भक्तसुरेद्रविक्रमसाहव आयसरनरेस ॥ भावतसिंहवीरनिने मंगल
करियहमेस ॥४॥

रगपज ॥ त्रि ॥ नमोदेविगंग नमोमातुगंग हरनिधिलमघ
मरकनन्दे ॥ ५ ॥ मधुमथन मुत्तरीवार मिन्दुकरकामुरं बहुसि
वडुवारि सतरं कुं ॥ हरिचरणनख भिदुरजगद गु निर्गताब्रह्म
जल पात्रकृत सङ्के ॥ १ ॥ त्वमसिजलपाविनि चतुरदधिगावि
नि सकविसकृतकुल सार ॥ कनकगिरिरामिता सकलमुनि
बन्दिता हरमुकुट कुसुममारे ॥ २ ॥ ईहनिधिलमुनिगरो रिह
निधिलसुरगरो रिहनिधिल वेदरुदोरे ॥ ~~सुखसुख~~ मयसे
पीयसे गियसे जन्हुमुनिकन्यका संसारुतारे ॥ ३ ॥ शुभसावे
रनिधूत शूरिनवति कुर्वता नवनाम निमला स्नाय ॥ विशि
ताचिन्तिता पितावह गाहिता निर्जल प्रपारहसिपार ॥ ४ ॥

१५३
उरगुरवज रमिस्वि सतमेव तवजयनि करि मकर गंभिरतोये ॥ पर
लोक वन्धुरसि ततिनि मूलसिंधूरसि सुरसदन साधनपाये ॥ ५ ॥
तिथैवरकामिनि भुलगजधारिनि हिमसैल पारवानभेदे ॥ पाव
यसिनगर पूरयसिसागर संगताविधेगिरि पादे ॥ ६ ॥ सगरसु
तसंगमो रासदमरसुन्दरी दूतिके इकून दूराप ॥ निलयगति
वाधिके निर्वाण साधिके भक्तजनविहित संतापे ॥ ७ ॥
ईतिरामलक्ष्मणो कैशिकान्नया सुरसरितः कृतमन
स्थिर ॥ भक्तिमिदमादरं धीरजयदेवकीव रासयातिभव
जलाधि पार ॥ ८ ॥

॥ १२॥ १७६

रागधमात् ॥ १ ॥ हरसंकरासिसंकर मधुरिपुमहेसनरहरे
त्रिपुरा ॥ २ ॥ वावनप्रभू प्रभू मुकुंद मधुसुदनवनमालि ॥ १ ॥
निलकंठाठनागदावन वृषभवाहनद्वारा गौरिकेपतिगोदापदमईश्व
रिनरधारि ॥ २ ॥ सहस्रवदनरंगधारे त्रीभुलधारे ॐ कारि सुमिरो
दरपतिके प्रभू गिरिपतिगिरिधारि ॥ ३ ॥

रागधमात् ॥ ३ ॥ मधुकेरभमदिनिआयेहो ॥ मधुसुरगंजन
कैसारहे कमलनयरा कृपान कृष्णहरे ॥ ४ ॥ पदमनाभनिरजन
जगदिस जगतउधार ॥ महेकदेवराहनरसिंदरुपधरे ॥ १ ॥ वाव
नप्रसुरामरामहनधरे सुधरे ॥ बौधविधिजगदैत्यति डीन कलम
हरे ॥ २ ॥ यिमिभनन मुदीर कवि दसअवतार यहविधिहरे ॥ जो
मुनिचितदे संतानरहन सिद्धिरिद्धिहरे ॥ ३ ॥

दोहाकर

मधुकेरभ

रागधमा

राग धमा ॥ व ॥ राम कहत कया लागे बोलो मन ॥ १ ॥ जनम २
 लगे अवतारि सो वै तोरि कहत नहि जागे ॥ निनोपनविमयारस भुले
 अवहुनानिध्यात्मागे ॥ १ ॥ जगमग फूल रहि फूलवा नि कंचन सक
 ल दिवाले ॥ मधुकजनमज त्रास कथिनहे अवहुनचेत अभाग्य
 ॥ २ ॥

काहकोरी

राग धमा ॥ व ॥ काहकोरी माई अवमै ॥ १ ॥ सकल जनम
 विषियानसंगयोयो सुमरोनाहिक नाहि ॥ कालपास जव गलेवि
 चदारे सुधिबधिसवविसराई ॥ १ ॥ जैसंपद अपने कर जानत दि
 नमो होत पराई ॥ नानक के दिल सोच रहि है हरिरसक वहुन गार
 ॥ २ ॥

वावा

राग धमा ॥ च ॥ वावा जगदिस काहा सैं आई काहको नै
 न डलाई ॥ १ ॥ आफू माहामद आफू माहो देव ब्रह्मा आदमक

हिये ॥ कोहिं डको तुरुक क हाये ऐसे चरमो रहिये ॥ १ ॥ यद्नामे
 कनक कनकी के गहनायिन मो भेदन डजा ॥ १ ॥ कह्ये सुनन के
 दोकीरामो बहिने मजाव हियूजा ॥ २ ॥ वेद कुरान पुरान पठतु है
 कोडं मुरना कोडं पाडे ॥ यक कुखान गधा बहुतेरा यक मितिके भादे
 ॥ २ ॥ जोयिह पडित सोयिह सानि सोयिह करिय विचारे ॥ कह
 यक विर सुनो भाई साधु आफतरे मोहितारे ॥ ४ ॥

राग धमा ॥ भजो मन श्री गननायक मंगल मंता ॥ १ ॥ अंगुनोक्ष
 गजावरोवर सोभित है कहु दन्ता ॥ परसु मोदकरु दक्षमाला चार
 भुजाहि धरंता ॥ १ ॥ जोगिरिजा सुत नाम पुकारे सोनर कोदुरवहंता
 ॥ १ ॥ सुरनर सुनि सव ध्यान धरतु है सिद्धि गरोश निरंता ॥ २ ॥

॥ १५॥

सगंधमाल ॥ ॥

५

५

१५०

१०१
 ७ एगईमरु ॥ ॥ मेवमडुजित दिसएण जीववा ॥
 तवगानसिमा सना वनसजी डुवीनावरे ॥ बीभालया
 कीपा दवथ्ये दयादयेमाल ॥ १ ॥ थवम समीदना
 व सुसिसजी डुवीनावरे ॥ लषन धेन नूसे फसि
 लहवान ॥ २ ॥ वीनताया वीषूनी ध्ये वानावा
 जीततल प्रभुरे ॥ गुचोका धेन नीभाल ध्ये वुवु
 सेजिवन ॥ ३ ॥ गन वणे गन चोने वने थाशम
 डुप्रभुरे ॥ मही दु मध्वनी हास्पेनया वीषति
 हवान ॥ ४ ॥

॥१८६॥

संसार

राग तोरि ॥ चौ ॥ संसार भावने गुनजना यहो विधिते निजरूप भाई
रुचिकारे ॥ १ ॥ सरसवरा भय लिये जनायि ॥ त्रिनयन आधेतन
लाये ॥ १ ॥ भनत शिव गुन प्रेम जनायि ॥ निपवर मार्ये कर लायि
॥ २ ॥

अवधि

राग तोरि ॥ प्र ॥ अवहिका हृदयो रि नन्दनन्दन प्यारे ॥ १ ॥ वंसि
कोवजै ज्या बैर वृजको वसैया बैर गृहको खेलैया बैर जमुना मै वै
थे कालिनाग को मथै या बैर देखोरि ॥ १ ॥

चरणा

राग तोरि ॥ च ॥ चरणा गुह मिथे यलि मायि वडे २ भाग्य मै देव
परमेश्वर कोटि फल दरसन ॥ १ ॥ गुन गावत आज चित अविनाशि
काम क्रोध विद्रु मस्य वद दिध्य ॥ १ ॥ विनु हरि भजन रंग सजिते
॥ संत दया लजाने सब जुठे ॥ २ ॥ नाम रत्न पायो जन नानक नाम पिडये
वैर सब जुठे ॥ ३ ॥

प्रेतसाभ्यां राग तोलि ॥ चौ ॥ मेरे तो सरावति घट २ भये परे राखो अति नाम धराई
 देवि वागवादिनि ॥ १ ॥ जल थल मध्ये पाति ज्वाल पाभवानि ॥ वाको चा
 हे अंत को तुम पायो नहि ॥ १ ॥ कोटान को त्या निमिदा भवनि ॥ चारो
 जुग मानि दया करो रानि ॥ तान सेन को परसा द दिजे भवनि करा
 पतिक हनु ववसानि ॥ २ ॥

देवि साभ्यां राग तोनि ॥ वं ॥ देवि साभ्यां त्रिभुवन रानि ॥ १ ॥ त्रिपराजननि
 तारा चन्दिनि ॥ चन्दिना सिनि त्वं जय २ मानि ॥ १ ॥ दुर्गा देवि दुर्ग
 तिहारिनि ॥ असुर संहारिणि त्वं जगत वसानि ॥ २ ॥ भक्त विज्ञानि
 सकल रानि ॥ जय थ करानि त्वं निपवरदानि ॥ ३ ॥

राग तोलि ॥ च ॥ राम राज नवनिध मेरे सर्व हेत कर धन तेरे ॥ १ ॥
 नांगे आवना नांगे जाना ॥ कवन रहे रे मेरा जा रहना ॥ १ ॥ आवन
 संगन जात संचाति ॥ काहा भया दरवार हाभि ॥ २ ॥ लंका गढ

सोने का भया ॥ मुख रावराक्षरे गया ॥ ३ ॥ कहत कावेर कहु गुन
 विचारे ॥ चल जुवारे दोकर जाने ॥ ४ ॥

नंदन साभ्यां राग तोलि ॥ प्र ॥ नंदन नंद भारिस कहि आज चरतहि ॥ १ ॥ भा
 व सेरि कैया अवर गुन को धरैया और सेव के बुझैया अठ ॥ मुनि
 मानन अहनि सि के सिम धैया अव देवोरि ॥ १ ॥ निमि को धरैया उन
 वितय करैया उर रस सेवै रैया उन ॥ अन राज जै प्रकास गुन सेरि
 कैया उर ॥ २ ॥

संतसदा

राग गद ॥ संतसदाक्षपाल पंचालिं गे ससिभारं दराडपानिन
 मो भैरव ॥ १ ॥ करसोभितकपालजटासोहे मुराडमालं ॥ तकधर्ती २
 धूमकिरिथैयाथो तालिकिरितकरधा थैयाथो ताकधर्ती धिरिके
 ति थुंथुं नान्दपहे ॥ १ ॥ व्यालमालत्रिनेत्रं सिरमकुट विचित्रं ॥
 तक ॥ २ ॥ भनतन्पलातिन मंगल सुखदगिर् ॥ तक ॥ ३ ॥

देवनाथेभार

राग गद ॥ देवनाथेभारसोभा संकटदुखहर भोलानाथ अनाथ
 गतिदेहो ॥ १ ॥ चंद्रकलासि धारि मंगल अर्चतनुनारि ॥ तक
 धर्ती २ दिग २ थैयाथो धूमकट २ थैयाथो नित्यकरत ताताथैअ्या
 हो ॥ १ ॥ गंगातरंगाविराज भस्मवर्धवर साजे ॥ तकधर्ती २ ॥ अरि
 नयरसपरचारि भूपतिगावैतोभारि ॥ तकधर्ती ३ ॥

राजनक्षि

राग ॥ प्र ॥ राजनक्षिनिहैया कौनदिगंवरि हेमाहारानिदिगं
 वरि गोमाहाराज ॥ १ ॥ त्रिभुवनपुजितापति संकरविकारि हेमा

संकरविकासिनि ॥ १ ॥ हरिहरआदिप्रह्ला नजानेतुमारिमहिमा
 कतुकनभुनिजनहरी देत्यकोमार्गुन हरी हर पंचनयनाः अमे
 नर त्रिभुहितपाय ॥ २ ॥ सिरससि अय्यकलागलसोभे मुराडमा
 ला घोररूपआतिभयंकरि ॥ करवनकरपान सिसवनदिवोभान
 भनससिपति उपदेस ॥ ३ ॥

नाथसरन

राग ॥ प्र ॥ नाथसरनहैया कौनेभोलानाथ वृषबाहन
 गौरिपति ॥ १ ॥ वाजतदमरुदिमि नाचतदिगंवर सुरमुनिमोह
 भये ॥ सरन साथलिय प्रमथ गनहे ॥ १ ॥ सिरसोभेजगर्ग
 गा करसोहे त्रिभूल पृष्ठमे वर्धवरशेलि ॥ करोकृपा २ जनधन
 यामोक्ष पद कहतसेवक गुनगाय ॥ २ ॥

संतोही

राग ॥ वी ॥ संतोहीरभजो बोलोराभा ॥ १ ॥ लोकरस
 मोक्ष मायापरभुलत सबसंकट दुखतारे रामा ॥ १ ॥ मक्षकमेशु

करनरहीरवामनभृगुरघुजदुकलधारे ॥२॥ बुधकलीकिरुप दसहीर
सेवर ॥ गाधपरत दिनतारे ॥३॥ अंतकालजाल मायासवरुंदन ॥ हीर
पदसेवक गावैरामागुरा ॥४॥

राग मालव ॥ ॥ एतौ दूनी वपीरुव नन्दन रसन हवा
सविष्णुपाक ॥ १ ॥ हिमालय कृष्ण पाथान पान मध पातर
इनलीकरे ॥ एतौ स्वजीक बाल हे एतौ मीषा कृष्ण कोचक
सुगुप्त नरुपाक ॥ २ ॥ दुष्ट दुःसासन कृष्ण कोर्ध आते पोका
स्य संयाम पाकरे ॥ इतौ ना भालजान दे तुष्टु मना वदुषाते वाम
न पुरे पाक ॥ ३ ॥ गदा पातु वं कुमाति तुष्टु वन रण स वै पात्वा
कृष्ण करे ॥ वयलि वना वं कुमाति तुष्टु वन रण स वै पात्वा
धामा पाकरे ॥ ४ ॥ सुदरी आते रन व दे व आति नारय
सगुल नायक ॥ ५ ॥ हि एतौ महि ना कृष्ण मल जाल रंष्टक
स्य वामन पुरे पाकरे ॥ ६ ॥

राग मालव ॥ शु ॥ न्येह ने श्री भैरव विनतिरवन्हाय मेवमड
जिन गति छिह सहाय ॥ १ ॥ मयानाहु जिन सेवा जनत नउपा
य ॥ याना २ जनन मजिव दोकाय ॥ २ ॥ याय मफु थनिजिन
कुलयाये वार ॥ मया सेमजु सेवोने लोक सकोयाल ॥ ३ ॥ ६
यिव धका वजिन तया आसा अनेक ॥ सिवाल पाचो हान मयाक
विचाल ॥ ४ ॥ थ्वजुग सनिधन ह म्वावलेन सिक ॥ उख हान
समुद्र छोडु येनि पार ॥ ५ ॥ न्हक स अनाथ सिसेया हु ये उडार
॥ दाहा वने छे स सोय जमया डबाल ॥ ६ ॥

राग मालव ॥ प्र ॥ सोवन नन्द्या कुमल गोष्ठ भाल पान सुषदधि
व भुपाल ॥ १ ॥ गोष्ठ लपा आदिस मेवमड सुन ॥ संसार सजु से
जुल स्वगुलिया गुन ॥ २ ॥ वाल व भाल पान तल देवा किर्न ॥ वसुदेव

नंगतिलान विनतिन ॥ २ ॥ ल्यासेयारससलासिकचतुर ॥ जोगिया
जोगस जुनवल्लमूल ॥ ३ ॥ ईद्रादिदेवयाडुष फटकन ॥ त्रिभुवन
सवसजुन चडामूल ॥ ४ ॥ भक्तजननंवन संसारयासार ॥ कंसया
मनसजुन वल्लकाल ॥ ५ ॥ ल्हकल्लअनाथयाविनति न्येडुन्ये ॥ दि
पालि पलेंस जिभमलयाडुन्ये ॥ ६ ॥

राग मालव ॥ भुत्रि ॥ ह्रीरगथेतयथुगुलि पणन स्यामविनान
॥ ७ ॥ साजयावहितावचोनवल्ल गोहन यनवोनान ॥ आवदर
सनलायगथेन यानान ॥ ८ ॥ खालचंदमाथेभिन पलेह्लमिधान
स्वईव न्हिताव ॥ चितचियमफुजिन वसलु मनान ॥ ९ ॥ मोनिमा
निकथुनाव तयलंपायलन पालिसन्हानान ॥ वनसजुईवल्लम
मनि वसुनान ॥ १० ॥ ल्हकल्लयाप्रभू गोपालमुंदर संसारसारखान
॥ ह्मिसभावन नापलायिवननान ॥ ११ ॥

राग मालव ॥ वी ॥ जयभैरवभुवनया भयफुतकू मैवआदिनअ
नेगमोवुक ॥ १ ॥ जगतस जिवडू फिसेजनमजुयकू ॥ संसार
असार तरेयातकू ॥ २ ॥ दिपालिनिपान पेतापदजायकू ॥ सर
सन दिन सिवारसनायकू ॥ ३ ॥ जातेसतिसेवक सदान ॥ दिनधुयकू ॥
सियावअनाथ ल्हकल्लयाडुखतनकू ॥ ४ ॥

राग मालव ॥ दो ॥ सोचति पति सुरथमाहमतिवैस्प
समाधि सहित ॥ दुनजनमिलिआये मुनिततआसन मैयकचित
॥ १ ॥ यहविधुतिनमिलिगई मुनो कोस्तिक चितदिये ॥ २ ॥ मानक
रे मुनिजिने इनजन जोपासन को दिन्हि ॥ न्यायनकी अतिहीननेसे
दुनु सुविधि पुजन किन्हु ॥ ३ ॥ आसननिकवैठे इनुजन मुनिकहत
कोहियाता ॥ भावतमिहिवर जसवर्णन आवत जनकि आता ॥ ४ ॥

राग मालव ॥ सु ५ ॥ किं भवामि भेषामि वामुतादि तामदनेन ॥ कत्र
 यामि करोमिवा किमु श्रीलिनाकदनेन ॥ १ ॥ शिव २ मया कपितयानिर्दितापी
 गिरिसोपि ॥ २ ॥ किं क्षीतं किमुवाहितं नीर्वे चितं हृदयेन ॥ सिक्षितं न च वारि
 तं न च वाम रिव निचयेन ॥ ३ ॥ भावयामि न दाम्य मुत्र मकांति ह्यसभरेणा ॥
 चंद्रवैवपिचो ज्वलन कचन्द्रिका निकरेन ॥ ४ ॥ पानिपद्मयतो गतो मणि
 रेख किं रचयामि ॥ देवदैतमवाधते किमितीपि वाकथयामि ॥ ५ ॥ वा
 रितो दयितो वचो न कृतं सरिणि वहस्य ॥ युक्तमेव ततो यनो मम यत
 ना हृदयस्य ॥ ६ ॥ कानने भवने महिधर मंदले विचरामि ॥ तस्मिन् विख
 विलक्षणा स्मन साम्यमी कलयामि ॥ ७ ॥ नारकियति चंद्रसेखर पार
 नेत्र युगस्य ॥ कोन कियति संकरि भमभाप्य भूमिम् हस्य ॥ ८ ॥ भानु
 कोविद रेख गोचर माजनोति चिराय ॥ सेलराज सुतानि वेदन
 मस्तु लोक हिताय ॥ ९ ॥

राग श्री ॥ वं ॥ मानिभूरनिवासिनी श्रीवज्रजोगिनि ॥ सिंधिनि
 रूपिनि धरि देवि व्याधिनि रूपिनि ॥ १ ॥ त्रिनयरा मुंदरी गलमुराड
 मालिनि ॥ खड्ग निरूपिनि मैसा मुरफालनासे ॥ २ ॥ पंचकपातनात
 क नागअस्तुभ्योनि ॥ हलं अभलनं सूर्यकोटि रक्तवर्णा ॥ ३ ॥
 त्रैलोक्यजननि ईश्वरि तोहे उग्रतारा ॥ भैरवमात्रिका गरुडकुमार
 कानिका ॥ ४ ॥ तोहे देवि सुमरन कोहिनाहजानि ॥ संकस्तनारनि
 कृपाकरो श्रीभवानि ॥ ५ ॥ श्रीप्रतापमल्ल सैसारकिसार ॥ निपु
 कुनामिनि करो हृदये उमासे ॥ ६ ॥
 राग श्री ॥ वं ॥ कैलासपिवासे ईश्वर तोहे देवकिदेव ॥ जोतिस्वरूपी
 राविकोमि तेजस्वजे ॥ १ ॥ सिरगुव त्रिनयरा त्रिभुरासुरनासे ॥ समुसा
 नवासि काल कुटविषयासे ॥ २ ॥ पंच ३ मुख उमापति अव्यय सुरपानि ॥

रतिपतिनासे दक्षकिजगपविध्वंसानि ॥३॥ सिरसोहै चंद्रकला गले रुद्रमा
ला ॥ भैरवरूपि अस्त्रविधि रूपधारे ॥४॥ तोह देवसुमरन भवसागर
तारनि ॥ करजोरि राजिंद्र करो कृपासे वक जानि ॥५॥

रग श्री ॥ त्रि ॥ कंपालि रमेता जोगिसरन छिपालि ^{नाथ} ॥ १ ॥ निर
जे ३ नं निराकार आदिया छि नाथ ॥ कानकुट नुसे नलनिल कंराठनाथ
॥१॥ परं वंछु पुरुष यापि नाकी छि ध्यान ॥ दमरु त्रिभुल जो सा स्वयं गुणा
धीनि ॥२॥ मफुर सोये सुरजनं छि गुते जेबोनि ॥ दोल छि नाथ वलन
लहाय मफुर गुन ॥३॥

रग श्री ॥ त्रिताल ॥ कंकालिका देवि सरन छिपालि ॥ १ ॥ भयंकर
बाल लया निरउतिउन ॥ मोल माता गलस छि न्येसे छुं देउलि ॥
॥१॥ जोगिनि दागिनि गनलिन के छीवानि ॥ ईसे २ फटकल असुर

गुमानि ॥२॥ बालव अनाथ सिमे लहाक ल अशानि ॥ जनम २ छिके आला
जि भवानि ॥३॥

रग श्री ॥ प्र ॥ जोगिजिवन हमारा केव जानु वो राजा माई हे माला
त्रिभुमोरा ॥ १ ॥ जाहिवागि तप कैलो रे हो निमि जाग्य ॥ पुरुष मुकत
फल सैंहां अनुग्राहि ॥१॥ चंदन तिलक सोभे उर फनिमानि ॥ कैसे सोहैं नंगे
माई हे केव जग जोति ॥२॥ मागि चाहि आन शिव दमरु बजाई ॥ हर्ष
भोज नांगे माई हे धनुरंग जाय ॥३॥ हार माला कंठ सोभे परवटाई
॥ केव धन नांगे माई हे वाग दला वंधा ॥४॥ भनय विजापति जुग सेवा ॥
चंदन देहि पति वैदेनाथ देवा ॥५॥

रग ॥ त्रि ॥ माता रानि हे २ नमो देवि नमो नाटेश्वरी ॥ १ ॥ बाल
उन कपुर या तेज चंद्र सुरजया ॥ बहस सकंदल भिना विद्या ॥ सिरस मटु

कलुषा हेलमनिमोतिकया चल २ खेल कवनया ॥ १ ॥ कुलिसंफरन
 तया हालजभितननीया नरसिरनागनकोवाया ॥ विज्याकरसनगया
 मोल दोसकवनया गनसहितनंजुया ॥ २ ॥ सद्रुषपरभुल जोनाव
 दमरुथाया फटकलगनवरिया ॥ अभयवरविसेरसनप्यावनहुया
 मोहलप्रमनसंकरया ॥ ३ ॥ लहायमफु वसया माहिमाअपालयाअ
 नगुनगोखलया ॥ अनेगदेतधेमा याडने श्रीमाहांमायाल्हाकल
 अनाथसिया ॥ ४ ॥

राग — ॥ प्र ॥ गौरावलिदेवालीके सिव वरभोला कौनेविधिसमु
 दर गौरा ॥ १ ॥ वसाहावधलाशिव भसमविअंग ॥ भारविसालल
 जयमध्वगंगा ॥ १ ॥ नयनकाजल स्वने सिरसोभे मोरि ॥ इनहुका
 साथ विवाहैकिगोरि ॥ २ ॥ पारपरोसिनि अपजसलेहो ॥ गोरिमना
 यके कोहैवरदेहो ॥ ३ ॥ भनयाविज्यापति सुनहोभवानि ॥ गिरिभु

॥ १५८ ॥

वनके यहवरदानि ॥ ४ ॥

राग श्रीअस्तुति ॥ ॥ जय २ गिरिराजकिसोरि जयशिवअ
 नुपम जोरि ॥ १ ॥ जोरिवनिअरधंगमंगसरंगवदनभूषिते ॥
 जराजुक्ततरंगगंग अभयकरिमलश्रुति ॥ मुखचंदआनंदकेदर
 मदहसनिरस निसिवमोहनि ॥ विप्रभालवालविसालतिलकफदा
 ल मुलतिसोहनि ॥ १ ॥ रुलरुलित अनुपम चिरननकस्मिरले
 पनकोकिये ॥ जगसागब्याल विभूतिभूषित सदाहाल हलपिये
 ॥ संगसमिसवभृंगारसाजतिराजति आनंदरहिये उदमराजमाल
 कृपालब्यालवेताल विदनिमंगलिये ॥ २ ॥ करवलेपद मंजिक
 टिकिकिनि मधुरधनि वाजहि मुखपंज्व रागप्रकास करिदम
 रुघटकर काजहि ॥ ससगगपप धधनि धधपपधध

निधध पप पम गम गादिदि नागिनि २ धा तिनि थारि
 कुकट किटि २ धाधा किटि २ थारिकथा ॥ ३ ॥ करजोरिगि
 वजई सजुपेनि न्यविननि कोकिये मुनि थैत थैतत थैत थैदिग २
 ततथै गतिकीलिये ॥ आनंदउमगि अथाह प्रेमप्रवाह सग
 र रह्यावहे ताहाआदि रूपसमाधि दि जुटजुग राज आनंद
 मोरह्या ॥ ४ ॥

राग श्री अमृति ॥ अंबे त्रिभुवन सार कि सारा अंबे वागमात को धारा
 ॥ क ॥ पुंन्यमय जल रूप सुधारम संकरवाक ज धारा ॥ प्रगत भरतिन
 लोकजुननि पापकतन कि आरा ॥ १ ॥ अद्भुत तव जल महि
 मानि रजत सकल लोक कि सारा ॥ दर्सन से पुंन्यमय भाये
 देखत स्वर्ग बहाए ॥ २ ॥ पर्सन से उरित जातक लिमल भाजन

२००

जैम किंकरा ॥ विषय ताप हृत मार्जन से निर्मल होत अनिरा
 ॥ ३ ॥ आचमन जिनकर त भक्ति से पुंन्य उत्त कि अपारा ॥ यह भव
 सगर पार होय के संकर कि सोहि प्यारा ॥ ४ ॥ मुरन मुनि जन
 करन सेवन वैधिस भातव तिरा ॥ गावत ललित त्रिपुर सुंदरी
 तारो जगमहानिरा ॥ ५ ॥

राग श्री ॥ प्र ॥ जननि मेरि संकट कातो ॥ क ॥ संकर कर कहा
 भुम कर नि ॥ दुस्त के पर काल रूपिने ॥ १ ॥ सकल मुस मु ये
 मंरूप से वित पद पैक जको ॥ निन हिलोक कि है थ करानि
 सेवक आय चरण जानिमा ॥ २ ॥

राग श्री ॥ प्र ॥ लोके श्वर करुणायामय सुवर्णाया भुमिस
 रसन विज्या क थिर ॥ क ॥ दिनया दिनानाथ रात्रियाव

द्रमादिप ॥ धर्मयासाधिजुल सत्यनंसहितस्प ॥ १ ॥ स्हामु
 चियाभगवान् धर्मयाराजजुल ॥ वर्जविलमाहाकालभैरव
 साथ ॥ २ ॥ विस्वरूपअवतार सहस्रभुजनाम दन ॥ सैसा
 रयाभाराकासे विलमुगुति ॥ ३ ॥ सायसिधमुनिजुसे कवत
 आसनयासे ॥ फलविलधर्मया चरणासवास ॥ ४ ॥ अरुना
 यामनिजुसे आर्यनारा जननिन ॥ नरयामनतसे विवर
 दान ॥ ५ ॥ माहामायाद्वारकामिनि देवलोकमुनकाव ॥ अ
 निलिलोकयात रक्षायासेथमन ॥ ६ ॥ भगतयामनजुल
 सम्पकिन दानमन ॥ वरविवरत्नमुपरादान ॥ ७ ॥ गरुडा
 केवाप्रभू स्हाकलयासाथजुसे ॥ भावयाधिरपिसे सिद्धि
 परममनिविसे ॥ ८ ॥ कीर्तिपरनगरिया श्रीरामेन्द्रविक्रमसहाय ॥
 गुसलपियचासे श्रावणाकृष्णत्रीयोदसि ॥ ९ ॥

धनाश्री ॥ ॥ जये जये नानगदप हसन्दा हातीति ॥ ६ ॥
 पालीति जोनाजुन माधेजप माशा ॥ कितिया शेन दुस्य छ
 छे छ पुदंति ॥ १ ॥ कीगलनति दु गम्पे जुन वो हसदा गप ॥
 सिवया काये धावा हरा काये धाल मेना प्राये माल ॥ २ ॥
 जो गन नुन म ह्ये न्हा ना धो न दन ॥ उजन मनु धो व सोनो
 बी वे कन ॥ ३ ॥

रागधनाश्री ॥ व ॥ धगरानि चलो तुमको नंदवो लाय जसो मति
 जाय पुरना भयो री ॥ ध्र ॥ धगरानि गहरे मै हर अति राजित जाचा
 जो जनमको ॥ १ ॥ अहिरन चले हांते हसुवा ले गोपिवाल जगेरि ॥
 किनो धगरानि नाल जनन करि मुक्ता माला पहरायो ॥ २ ॥ भाद्रवमा
 सकल पदे तिथि भयो भुमि मे वाल मजोरे ॥ सुरदास प्रभू अवका देखो
 जंगनाथ अवतायो ॥ ३ ॥

रागधनाश्री ॥ व ॥ आजु माहा प्रभु जनम भयो मुनि हम दरसन को आ
 ई ॥ सुंदर वदन कमल यान न्दित देखत नयन अघाय जसो दा ॥ ध्र ॥
 जिनके दरसन सो सब जग मोचार्ह पदारथ पाई ॥ भाग देखो त्रिभुवन
 पालक नंद महल रघु जाय ॥ १ ॥ सुमरत नाम लय निसि दिन जि
 नके भगत न पाप गमाय ॥ चौदह भुवन उदर जाके वस सो अवगोद

धुपराति

आजु माहा प्रभु

समाय ॥२॥ राजेनस्मिपिया पाधिपिंद्रमलभूपति हरिगुणगाय ॥ देवो
परमपुरुष के लिलागोकुलगोपक हाय ॥३॥

राग धनाश्री ॥ प्र ॥ जये रकुल हरे मुरारे ॥ ध्रु ॥ मक्षकर्म वाराहनर
सिंह वेदविहित प्रल्हाद उवारे ॥ वामन परसुराम राम बलि धलन पकन
रावणामारे ॥ १ ॥ बलभद्रवोधकृपाकरमोको कलंकिरूपपर वेस उवारे
॥ चारुपदारथ हरिपरसारे गावै कृष्ण मनदस अवतारे ॥ २ ॥

राग धनाश्री ॥ प्र ॥ भवभय भंजिनि मानधरे ॥ ध्रु ॥ माई तरे पद
जुग भावरिये ॥ आज थिर मन लाये ॥ १ ॥ सिंह चंदे तुम साजवनि
हैं हेमगिरिवाल वरूप ॥ देवि लिजे सरगा उमारी भनय कल
भुवन के रूप ॥ २ ॥

राग ॥ प्र ॥ शिव के चरण पर ध्यान मेरो ॥ ध्रु ॥ कोहि चढावत
गंगाजल पानि कोहि चढावत बेलकि पाति ॥ तुम हो पार्वति जगत

किमाता विजापति के विभाने ॥ १ ॥

राग धनाश्री ॥ ध्रु ॥ सुदामा मंदिर देखि भुक्तो ॥ ध्रु ॥ तिरिया पठाव
ल चिठी रंग नंदन बाधि गयोरे ॥ १ ॥ नंदन देखित बंड मन हरवित ॥
जो मन भावै सो मागो ॥ २ ॥ यहि थान होने राम हमारी ॥ जो परिया अंतर
कोरवनाय ॥ ३ ॥ यहि सुदामा ऊरुवा मोचै थो ॥ चौदिस चर देला
य ॥ ४ ॥ सुरदास के प्रभु नुमारि दरस को ॥ गरिब निहाल कियो ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ॥ व ॥ अक्षय पुरुष निरवानि रजे ॥ न जोगि आपधरे
॥ ध्रु ॥ माहासमुद्र विच मथयक श्रीजल कमल फुले कमल फुले बहु
भाति ॥ ब्रह्म कमल विच अमर रहत हैं प्राण पुरुष मत धारि ॥ १ ॥
हस्ति सिंह विच वाहन बलिये गावै पैय मनारि ॥ घर के बाल खवाना
वन चाहें माया लोक पकारे ॥ २ ॥ चुनिके पग हस्ति समावै ल तिनिलोक
परचारिनी ॥ गंगाजमुना विच अंतर हैं सखि देखन मन उठि आय ॥ ३ ॥

दासकविरयकनिर्युनगावै सुनो हो संतविचारै ॥ अंतकाल प्रभु निक
लगयिहैं कह्यकविरपरचारि ॥४॥

नाना

राग धनाश्री ॥ प्र ॥ नाचतमगनभयरि नयनघुमे यारिहैं भाअ
पनोरिहैं ॥ १ ॥ साधियानसंग सरसकरिहाथ कुसुमतोरिहैं
॥ नेत्रचंचलमृगादिगदोलतमजै नखेलनकी ॥ कदलियजंघन
जोरि ॥ १ ॥ मानोअसमा वानदीधै रैसिवाधे मदसै रसजानि
॥ देखिनयनि रमनितरूपव कोसुकपंदिकि ॥ नृपवरइहभानेरी
॥ २ ॥

भजोभाई

राग ॥ च ॥ भजोभाई सुंदरगौरिके वाला ॥ १ ॥ परसुमोद
क मुलिलिये हाथे ॥ अवरलियजपमाला ॥ १ ॥ आपुवाहनगजा
आनंदसोहै ॥ गलेसोभेपुष्पकिमाला ॥ १ ॥ कहतधनजित दासतु
मारि ॥ सोभितदसविचारि ॥ ३ ॥

जयश्याम

राग धनाश्री ॥ च ॥ जयश्याम रूपछ सनाहातिन ॥ १ ॥
॥ पालिनजोनातल मधिजपमाला ॥ किसिथे सोल सोसे छवेछपुद
त ॥ १ ॥ गमनसतिदुगसे जुल ध्वलवाज्व ॥ श्रीवर्न कायधान सेवा
यायेमाहा ॥ २ ॥ जोगनरीन्द्रमल्लो हाना ॥ ध्ववचन उजुन मरुध्व
स्विविवेकन ॥ ३ ॥

भयहरी

राग धनाश्री ॥ प्र ॥ भयहरनितारनिदेवि ॥ १ ॥ आनंददया
करनि जगमो जसभरनि सदानंद निस्तारनि ॥ १ ॥ जगतज्वालपा
दुखहरन कालिका आपसआपदिमाननि ॥ तनयभक्तकि विनाति
सुनिये अंतकाल निस्तारनि ॥ २ ॥

आरातिभिरुचि

राग धनाश्री ॥ व ॥ आरातिभिरुचिभावभक्तिमोचितधीरि ॥ १ ॥
॥ निवाकरजोतितेहारि चन्दमुन्दरहारि ॥ १ ॥ सिरसुकटविचित्रवि
राजे भारनिसाकरहाजे ॥ भुजंगराजउरमालसोवै सुरनरमुनिसव

धाये ॥१॥ भक्तनको भव आगरतारे इस्तनको सिरफारे ॥ करत हो सि
भंजन ने हो रा चरणा सरणा है तेरा ॥२॥

राग धनात्री ॥ त्रि ॥ नित्य आरति जगन ॥ नाथ जोतिरूप मनसि भा
वना ॥ १ ॥ मकुट चन्द्र खर्ग चरम विन्दु पात्र धारि है ॥ नाग
चर्म वसन अंग प्रेम आसना ॥ १ ॥ गगन रूप बटुक नाथ क्षेत्र पा
ल भै रव ॥ भूत नाथ गौरी अंग सहित सोभना ॥ २ ॥ चरणा आस भन
त भूप वंध पास मोचे है ॥ नृपति दासीर पुभंजन आये सरना ॥ ३ ॥
राग धनात्री ॥ च ॥ मानस मूल कट रूप कन्दैया प्रभू ॥ १ ॥ प्र
थम सकल जंजाल जाल की ॥ अंध को नासन हंस की आरति ॥ १ ॥
गोपि नित्य मृदंग रंग करि रंजन मदन गोपाल ॥ सहस्र दिप घृत क
पुर के सीरे तंदवन अवललित की ॥ २ ॥ ईंद्र कोटि रविकाम कोटि छ
वि हरि मुख सुंदर होत ॥ सुरनख निज करन ध्यान को जाप कगो

विंदनाम कि ॥ ३ ॥

राग धनात्री ॥ त्री ॥ नौ मेव बटुक नाथ परम ब्रह्म रूप कि मै आरति क
रि ॥ १ ॥ अमल राज चंद्र भाल भावन गराज कि ॥ आदि नाथ जो
तिरूप जग दिश्वर कि ॥ १ ॥ श्री गिर्वाण युद्ध वित्रम की सिद्धि वर दि
जिये ॥ वैजनाथ सुत वद सिद्धि मुख की ॥ २ ॥

राग धनात्री ॥ च ॥ आरति भाव भक्ति नं या यजन म २ जिदास गो
पाल या ॥ अनंत अपारया आदिया पुरुष अनेग अवतार का प्रह
या ॥ १ ॥ वेद उद्घा पुया व तल मंदल धरनि धारन धरल पु ल्या ॥ नरसि
ह सिंह दान व लु सित पे थपिका वा व ल्या ॥ १ ॥ वावन वां ल्या वेद
विचारन बलिराजा दल या क ल्या ॥ राम २ बल राम सोल्ल लु से
द्वित्रिय रावरा परम फट क ल्या ॥ २ ॥ करुणा कर्म कया वतल कतक
केनक लिया काल कल किल्या ॥ सुल्ल क क सी की से कपति पुतना

आरति

रागधनाश्री ॥ व ॥ आरति करूं वंसगोपाल पतिजनमजनकाल
 ॥ ध्रु ॥ वेदविधितनयनाहिजाने ॥ तनुमनुराख तुवपदजाना ॥
 १ ॥ सुरनरमुनिजन जके किंनर ॥ फतिजन पकिन्द सिद्धकधिरा ॥ २ ॥
 पेसरतुवपद मनहुनधाना ॥ मैअनाथ प्रभू भजनतजाना ॥ ३ ॥

जयबोली

रागधनाश्री ॥ च ॥ जयबोली आरति श्रीनारायणकि ॥ ध्रु ॥ गोकुल
 मैगोपालविराजे ॥ गोपिनिसंगखेलेया ॥ १ ॥ कह्यकविर सुनोभाई
 साधु ॥ श्रीकेभजनगुनगाई ॥ २ ॥

दिव्यआरति

रागधनाश्री ॥ त्रि ॥ दिव्यआरति ३ भक्तीभावकरजोरि रूपसाध
 ना ॥ ध्रु ॥ रचरचर कोटिरुचिर चरननखवि वासहे ॥ देवदैत्य
 मनुजहारि सिवभावना ॥ १ ॥ अमनकमलपदविराज्ये अचलवा
 स श्रीनिवान ॥ जयप्रकाससुर्यवैसि जोगभावना ॥ २ ॥

का प्रग

रागधनाश्री ॥ च ॥ का ४ मतआदियादयकसे यितालया चिकन
 सिनेहे तया ॥ १ ॥ मीयामोहअहंकार फुटकि पापयाभार ॥ कोनिसुर्ज
 याजोगि आवजिनं यायआरति ॥ ध्रु ॥ १ ॥ दयालाक्ष्मियाधनि नेपा
 लया अधिपति जयपरकास नवहाय ॥ भगतिभावनं वसचरन कमल
 रसरसिकल नातेश्वर ॥ २ ॥

हुगड

रागधनाश्री ॥ त्रिताल ॥ हेगुरुधगमना हेभक्तेनमः ॥ ध्रु ॥ असरन
 सरन चरणासरन रुह ॥ सुरमुनिकुल रमना ॥ १ ॥ करिपरमोचनकमल
 विलोचन ॥ कमला ॥ रतिरसना ॥ २ ॥ गोवर्धनधारन कंसकिसिर
 रुह ॥ कालिफनिरमना ॥ ३ ॥ गोकुलबालख गोप्रातेपालक ॥ गोपि
 जनरमना ॥ ४ ॥ गावैउमापति हृदयनारायणा ॥ नरकासुरसना ॥ ५ ॥

जयकपरायण

रागधनाश्री ॥ त्रि ॥ आरति करे मै द्वारिकानाथ श्रीपति विस्वरूपकि
 ॥ ध्रु ॥ जगतगुरुपद मैनेत्रचक्रसुदर्शन जानहे ॥ कोमोदकिगदा

पद्मसंस्कारिकि ॥ १ ॥ चरणा आसकरन कृष्णधरकरजोरिकि ॥ जना २
नेरिद्वान नामकलकि ॥ २ ॥

रागधनाश्री ॥ प्र ॥ पेयुनिपदारथलायस्यामया आरनियाय ॥ कं
श्रीमंडकेसरिकस्तुरिनयाय ॥ फलमुलराजारापनैविज्जदाय ॥ १ ॥ नुय
लदिवाकरमानमतयाय ॥ भक्तिनपुरनयाय ॥ २ ॥ यकचिन्ननंहरिनाम
काय ॥ धनजनमायामोहनाय ॥ ३ ॥ लहाकल्यामनसधिपालिवमवाय ॥
ध्वनिनानंमदुजिउपाय ॥ ४ ॥

रागधनाश्री ॥ च ॥ तुलसिनारायणारूपभजोरेभाई द्वादसनामपटे
स्तुतिआरति ॥ कं ॥ आपसनापआमृतजलकिभारतिलकश्रीवंड
कि ॥ १ ॥ नानाफलफलधपमुवासकिबौदिगबौदिसदिपकि ॥ २ ॥
वज्ररितालमंदग शरुनिवाजतसंरवधुनिकर ॥ ३ ॥ चरणाकमन
किदासतुमारि ॥ सिबक हरियुराणाय ॥ ४ ॥

॥ २० ॥
रागधनाश्री ॥ च ॥ किजदासमदनगोविंदकिआरति ॥ कं ॥ हस्त
सकलसंतापजनकि ॥ निने चितरामरुमकारकि ॥ १ ॥ गोघनरुबित
कपुरकिवाति रुमकटकचनथाल ॥ चंडकोटिद्वितिभानुकोटिद्वि
मुखसोभानंदलालकि ॥ २ ॥ संखचक्रगदापत्रविराजेउचवयजयनिके
माल ॥ मोरमकुटपिनांवरसोहै वाजतकेसुरसायनकि ॥ ३ ॥ सुंदरलो
लफपोलकेद्विनिरखतमदनगोपाल ॥ सुरनरमुनिजनकरतआरति
भक्तवत्सलप्रतिपालकि ॥ ४ ॥ चंरातालमंदग शरुनिअंजनकुशु
मः भूदान ॥ मैयारियारिरघुनाथदासकिमोहनशोकलपालकि ॥ ५ ॥
रागधनाश्री ॥ च ॥ भोलानाथकी आरति किजे तनमन बनयहो
साप्रविजे ॥ कं ॥ करिठ ॥ कि भृंगिभुनिवाजे तिनैलोकमुनि
संग फिरयभवानि ॥ १ ॥ पंचरदनासिर वाहिरिगंगा हातधनुरफे
र धोजनभंगा ॥ २ ॥ अंशुविशुत ग लोरुद्रमाला करविभूल

पेयुनिपदार

तुलसिनारायण

किजदास

भोलानाथ

सोभानगतउज्जाला ॥ रामकृष्णभनगुग २ सेवादेहो अभयवरसंकरदेवा ॥ ४ ॥

जयेश्वर

रागधनाश्री ॥ च ॥ जय २ आरति नन्दनन्दनकि ॥ क ॥ गोघृतकण्ठ
दिपवनाय मुरलित सोभित भावलागई ॥ पितवसन वनमाल विराजित
कमलनयरा मुरव वंसिकजई ॥ १ ॥ स्पाम सुंदरतनु चन्दन भूपिनमद
न मुरति छवि कह्यनजई ॥ गोपियन नायक गोप्रतिपालक मुरमुनि
मोहित तनमन धाई ॥ २ ॥ कह्य भगतजन आरतिगाय पायम
नोरथ आनंद होई ॥ ३ ॥

गौरिनंदन

रागधनाश्री ॥ वि ॥ गौरिनन्दन मंगलदायक अहतरूपकि मे आरति
करि ॥ क ॥ यकदन्तधुर्मानेन नाग जल मुत्रकी परमुपानिचक्र धारि
मकरचंद्रकि ॥ १ ॥ वदनस्वेत अग्निजोति सूर्यकोति तेजन ॥ रिद्धि
सिद्धि अष्ट सिद्धी व्यदयेभकि ॥ २ ॥ विश्वरूप विश्वकर्म विश्वभयतारन
॥ भनत मंजुवदासराजे ५ आयसरनकि ॥ ३ ॥

वेदविमल

रागधनाश्री ॥ वेदविमलजसगाय प्रभूजे आरति नरसिंहकठारकि ॥ क ॥
पहिले आरति प्रह्लाद उधारे ॥ हिरंमयकस उदारविदारे ॥ १ ॥ दोसरि आरति
वामनसेवा ॥ वलिके द्वारपचायेन देवा ॥ २ ॥ तेसा आरति ब्रह्मगंडधारे सह
बाहुकि काज सुधारे ॥ ३ ॥ चौथिम आरति असुरसंहारे ॥ भक्त भविष्यन
लंकागतदारे ॥ ४ ॥ पंचम आरति कंसपधारे ॥ गोपबाल बद्धपतियारे
॥ ५ ॥ तुहासिके पत्रकराठमनिहिरा ॥ हरि वि २ गावै दासकविरा ॥ ६ ॥

हरिजिके

रागधनाश्री ॥ च ॥ हरिजिके आरतिगाया ॥ धुपदिपनै विअचढाया
॥ क ॥ लाखनोरासि परजनमभयो ॥ पिछे नर देहि जनमपाया ॥ १ ॥
कोटिसयानि सहस्र बुधिकिया ॥ अपने करनि उतरे पाया ॥ २ ॥ भावदासकि
भनपहुताय ॥ रामनाम गावनेन पाया ॥ ३ ॥

हरि

रागधनाश्री ॥ च ॥ हरि हरिकामरमन पाया ॥ जनिय जोदा अजववना
या ॥ क ॥ पानिके सिय पौनकि धागा आठमास दस सिवन लागा ॥

॥ १ ॥ पावनं त्रकिगुदलिवनाय चंद्रसूर्यदोनोधिकरिवनाया ॥ २ ॥
 आपहिरिय आपवनाय प्राणापुरुषसोरे पहिलाय ॥ ३ ॥ कोटिजनन
 करमुकटवनाय विचर हिरामो गिलालगाय ॥ ४ ॥
 रागधनाश्री ॥ च ॥ हेवृषभगमनाय संश्वेनमो ॥ ५ ॥ भवभयतार
 न भोगविश्रुषन भालेभनस्वधनाय ॥ ६ ॥ वांसुकिकराठ धरवाममहेश्वर
 वामोउमासहिताय ॥ ७ ॥ निलकराठ धरनिर्मलसुंदर निर्भयकृतस्वजना
 य ॥ ८ ॥ पसु ० अधर्ममोचन पप्रविलोचन पापजनितस्वजनाय ॥ ९ ॥
 रागधनाश्री ॥ च ॥ देवोमाईवनडंसे आयगवपाला आरति साधुचलेवृज
 वाला ॥ १० ॥ धुनिके धुनिस व अंगनाय धाय गोलोचन कि गिलक
 चढे ॥ ११ ॥ मोरमकट मुरलिसोहे नखवररूपधरे जगमोह ॥ १२ ॥ नंद
 जसोदादेवन आया काहुकरसपर मंगलगाय ॥ १३ ॥

हेवृषभ

देवोमाई

रागधनाश्री ॥ च ॥ सयन करो नारायण देवा तुमवडो हम करिय सेवा
 ॥ १ ॥ सयन करो प्रभु अंतर्यामि मनसाचा चाह करो होगवसाई ॥ २ ॥
 दितमवोज किय दरसायि रुक्मीनी परगोविंदाय न जायि ॥ ३ ॥ माता
 जसोदा सयराकर योराधारुक्मनिचवरदोलाय ॥ ४ ॥ सिरगरुवागज
 मुकुटाहारो निरखत मंगानाम देवसोहे ॥ ५ ॥
 रागधनाश्री ॥ च ॥ आरति जे हनुमान नलागि दुस्तदलन रछनाथकि
 लागी ॥ ६ ॥ लंकारे से कोट समुद्र खाव जात पौन मुन पारने लागि ॥ ७ ॥
 लंका विधोस कियो रघुनाथे तुलसिदास प्रभु आरति गाये ॥ ८ ॥ अज
 निप्रव माहावलिदाय साधुन सेवक सदा मुखदायी ॥ ९ ॥ पृथिपाताल
 तोरे जव कामे मायारावणा उदार विदायि ॥ १० ॥ जो हनुमान जिके आरति
 गाये वसत वेकंठ बहरनहि आयी ॥ ११ ॥

सयन करो नारायण

आरति जे हनुमान

आ. गणि

रागधनात्री ॥ न ॥ आरति करिय गरीशनु मारि सकल जगत मो मंगल कारि
ये ॥ १ ॥ हस्तिवदन मिरचंद्र विराजे लम्बोदरयक दन सुधारि ॥ १ ॥ नाग
राज अंग भूषण राजे हात पर सुजप माला विराजे ॥ २ ॥ भनन सन जन गुण पद
गावे ॥ धन जन ग्यान ध्यान सुधा कर देवा ॥ ३ ॥

से अश

रागधनात्री ॥ च ॥ सैज्या हो मै होरी खेल नरंग ॥ १ ॥ मोर पिपा परिस
गमन किनो हम को हेयारो दीयो वयागारि ॥ १ ॥ चुवा चंदन अभि अर्ग
जा अवि रति वावा के हाठरी ॥ २ ॥ सुरस्याम प्रभु मारि दरस को चरन क
मल ध्यानारि ॥ ३ ॥

वचन कि पा

रागधनात्री ॥ प्र ॥ वचन कि पाप हनि जननि ॥ १ ॥ सत्य वचन कहु
जाने रुठि रुठि वचन भयि मिथि ॥ सत्य वचन कि नहि है मिथि सव घट
वैठे रुठि ॥ १ ॥ रुठि वचन भयि दाता मेरि कलि मल दिये भरि पारि ॥ २ ॥
कलह सकल मिनि मंगल भारि ताल दसन मे अवन सुधारि ॥ २ ॥

रुठि वचन मुनि अंत घन भाजि वसन दिसा भयि साहि ॥ नित्य कलह हिन
मेवा वाई नित्य सकल अपने घर धाई ॥ ३ ॥ जो दिन सत्य वचन मै धाउं
नि सुदिन स मिलन पिउं ॥ रुठि वचन वधान मै करु ना दिन पाप स भोजन
पाउं ॥ ४ ॥ सत्य त्रेता द्वापर निगूगई कलि माहाराज हि आई ॥ विनतिक
रे सेवक कर जोरि हम को राखो पारुतारि ॥ ५ ॥

आ. हेजान

रागधनात्री ॥ च ॥ आरति यह जननिक वधाउं सफ सति उन मुन
गाउ ॥ १ ॥ कर्म सकल भाहादि पवनाउ ॥ इन्द्रिय दसरथ घृत भिजाउं
॥ १ ॥ ईश्वर चरण मे मन को मिजाउं ॥ आशे सिंहा विरतन को जलाउं ॥ २ ॥
आरति करु मै करु दया जये स्याम महामाया निर्मल करुं यहु काया ॥ ३ ॥
रागधनात्री ॥ ४ ॥ देवत यम सया सेवा अविसेवन आरति दान वि
दान ॥ १ ॥ गुन रूप सिरस लिल चीरत वर वर भरण धन धौन
वित ॥ फन परमानह हम परसेवक ब्रह्मादि देवन मासे व परस्प वन ॥ १ ॥

देवन यम सया

परिपंचनदेवकिवसुदेवकपतिपननाकंसमयन ॥ सनेहनगोपिनंदजसोदा
 सेवानं नाम आजामिनि कुब्जासयान ॥ २ ॥ उग्रसेनप्रल्हादक्रिपानंनारद
 जोगनमुधाम्पस्पयान ॥ गोहृयानिस्तारनंजुलअनुसारनं सिद्धिनसिद्ध
 यास्वामिगोपिनाथभाव ॥ ३ ॥

रागधनाश्री ॥ च ॥ श्रीनिगकंठजिकेआरगिकरिय ॥ र्क ॥ कोनिसुय
 किआरगिचढाया ॥ भावनदिपकेमनकोमिलाया ॥ १ ॥ त्रिभूलदमरु
 कंकनशुभ्रिभांगधतुरवसाहाचढाया ॥ २ ॥ कहतभाजुनाराभाव
 वनाया ॥ अंतकालतुमलिनदयाकर ॥ ३ ॥
 रागधनाश्री ॥ ज ॥ दोम ॥

रागधनाश्री ॥ श्र ॥ आरतिश्रीनरनारायणाकि ॥ र्क ॥ नील
 रूपगरुडासुन कि ॥ वनमालागले सोहकि ॥ १ ॥ सैखच
 क्रगदापप्रविरागे ॥ हृदयश्रीवा ॥ सोहे ॥ भनमनिनारायण
 दासंतुमारि ॥ दिहोअभयवरदानि ॥ २ ॥

रागधनाश्री ॥ च ॥ रतिचितलाये अगमअपारपरजोनि
 मनाय ॥ परमानंदकि करआरति ॥ र्क ॥ मनवचकर
 मन हितचितगाये ॥ ज्ञानध्यानमनलाये ॥ हेमगिरिनंदिनि
 हितगणगाये ॥ राजराजजसगाये ॥ २ ॥

रागधनाश्री ॥ ज ॥ दोम ॥ हांदे श्रीजयध्वकं ग्गारु सरनदि
 पालि प्रभु महुदिविनान ॥ र्क ॥ अतिनकरतयुजुल

हृदयाव्यथा ॥ सरनादिपालिप्रभु मडदिविनार्न ॥ १ ॥
 सुयाकेभलसायाय मनसअंदोल ॥ अजगतिजलथनि
 गधिनविलास ॥ २ ॥ थिरमनमजयाप्र अनेगधंदान ॥ सुयाके
 विनानियाय न्येनिसुनार्न ॥ ३ ॥ दयादयमाल आव गमन
 यादिन ॥ छोवजिनरसयासे गृहहरसन ॥ ४ ॥ ब्रह्मकस्यामन
 सजा छिगतिनु ध्यान ॥ पुरेयासेसकविधि वियाप्रपुर्णा ॥ ५ ॥

+ राग आरति ॥ ॥ श्रीनीनेनाथयाआलीयाये ॥ रसनवीजाक
 पलआतिसोभाजाकयानीये ॥ १ ॥ रंगनवनवसरसनवीजा
 क ॥ प्रथमगनसहितदकोमुनकाव ॥ श्रीनीये ॥ २ ॥ जोगिनी
 यागनदकोसेनमेहावाव ॥ भूतपनिसेननाथमृदंगथानाव
 ॥ श्रीनीये ॥ ३ ॥ श्रीभुलदम्यजोसेआतिहरसन ॥ यमन
 प्यसनहुतेरसनवीजाक ॥ श्रीनीये ॥ ४ ॥ धीगलया
 यानजाकसलागुनेनाव ॥ नुरनरमुणगनमोहजुयाव ॥
 श्रीनीये ॥ ५ ॥ ब्रह्मकस्यामीनातेचरननिपाव ॥ अ
 परधलेमायसेयाहुनेउधार ॥ श्रीनीये ॥ ६ ॥

एग आली ॥ ॥ नौ सकोट देव थाक रस मे नाच माहा देव
 भोला रंग ॥ १ ॥ फनी मनि हाल गंगे रुद्र ना ना ॥ अंग व भूत
 बोढे वाग छला ॥ १ ॥ श्री धन वागी गङ्ग मन्त्र लोहे हाथे ॥ चन्द्र
 कलाज हस्ति माथे ॥ २ ॥ नौ सकोट देव आरति गाये ॥
 लंजा बाए वाते चक्र दोहाये ॥ ३ ॥ देवी भवानी मंगल गा
 ये ॥ भोला नाच पासे वाही नु नवनि धो पाये ॥ ४ ॥
 भनय विजा पाति आरति गाये ॥ सब दुख हर ले गोह मा
 ना ॥ ५ ॥

जयजय

॥२३७॥
 राग राजविज् ॥ प्र ॥ जयजयवरदेहयुसावरी अतिवर भगवतिचं
 रिड ॥ दानवदरदहुदिसपरायल मेहीवामुरासिरवंडिहेमा ॥ कं ॥
 कटयकहाकुडुकेउदिआयलकटवसमहुरवका ॥ सिंहचटेरनफि
 र हेयुसावरीमारलदैत्यअन्तोने ॥ १ ॥ कट ३ कुडुहरजनिउकेलगद २
 गिरितनुकांचे ॥ रुड ३ जनिरिह्यापिप्रय मातरीजोगिनिनाचे ॥ २ ॥
 सिंहचटेरनफिरकुयुसावरीकतियकरअसिहाथे ॥ चौसधिजोगिनि
 भोगपरायल मातरीजोगिनिनाचे ॥ ३ ॥ पयोधरेवाधितभुडिरीजा
 वत विकरभयंकरदन्ता ॥ दिनअरु रूपयोह्येआकापेशुंभनिसुंभमन
 संवा ॥ ४ ॥ दानववसनिवंडिनिकारिनिदेतोअभयवरदाने ॥ जनम २
 चरनगुवआराधे विद्यापतिकविभाने ॥ ५ ॥

हरे

राग राजविज् ॥ वी ॥ हरिजुसोडनेकरुनादयान ॥ कं ॥ मायामोह
 लोलस केनधोजिजालस ॥ पासफेनिमड द्विविनान ॥ १ ॥

नातोलेमनभालपाधानानैतिमलाक ॥ वेरथजिजनमजुयान ॥ २ ॥ का
 यमफुरामयानामअधर्मअलसिथम ॥ यायमफुरैश्वरिभजन ॥ ३ ॥ हरी २
 सुमरयाघरि २ तिबमन ॥ पुनजनममुम्बालेनिदान ॥ ४ ॥

रागराजविज ॥ व ॥ संसारयागतिमति नामवागमनिखसिजुसेधुमु
 हुनह्याक ॥ ५ ॥ हरयाहुनुनंलोकपरवतनंकोद्याक ॥ निर्मलजलफुटि
 नोहसलाक ॥ ६ ॥ गंगायानेजनैतिकलोकनंसनानयाक ॥ जगगर्न
 गुनल्लाक फुटकुपाटक ॥ ७ ॥ सिववअतिनंजाकजलयारुपनंदिक
 ॥ मुनावदेवि मुकभकरक्षायक ॥ ८ ॥ देवमुनिनरलोकदयानंदका
 नसोक ॥ ल्लाकल्लगारिवधककरुनादयक ॥ ९ ॥ मोचकुपापयाभा
 क सरिरपवित्रयाक ॥ होयाभजनयाक पेतापदलाक ॥ १० ॥
 रागराजविज ॥ च ॥ वयरिस्मफुटकावफको थर्महितोनाव

वयारि

त्रिमसेन ॥ रसनंविज्याक ॥ १ ॥ ब्रलजवमजिक उजाफयलि
 मलाक ॥ गुंगुलिधुंपायकुंनं दकोभुंनस्याक ॥ २ ॥ अनेगवाजनथा
 क नेनावनेनेमधुकवाह्यावरनसडुवाक ॥ ३ ॥ किसिकलनंकाक
 सिंधल्लवेकुंभ्याक ॥ मलचतावासेसनअनुमुमग्पाक ॥ ४ ॥ व्रतिमडुवल
 लाक हितोनानी ॥ अनिद्धाक ल्यायथासफुधिनमिभ्याक ॥ ५ ॥ हेगुलि
 मिरवानं स्वक तमनंउलिनंभ्याक ॥ आताप्रतिपिकायावधुमासनस्याक
 ॥ ६ ॥ पुंनयल्लपुसलिक पापयाकल्लमदिक ॥ भक्तजनवअतिजाक
 ॥ भाकिजुसोहनं ॥ ल्लाक फुयार्थेविनतियाक ॥ छिपालिनिपाया
 कोस तिडनेजिगाक ॥ ७ ॥

रागः राजविज ॥ प्र ॥ जय २ भैरव नेपालस तसेपति विज्याकरसनं
 तेखुदिस ॥ आदिपुरुषपति नेपालस जुसेधाने ॥ १ ॥ कोवामोल
 मालया नेसाकिसिद्धेगुलि थास २ नागयातिसा ॥ सिरसमनुक

जयगर्भभैरव

लुंया हेरामनिथुसेनया वसरूपसुरजयातेज ॥१॥ खाल वरिषा
 सुर्यभू नेजजुलपर ॥ स्वगोलमिषाअतिथिक ॥ विकटदंनपि
 कामे कुलिसफदनतसे वसरूपस्वयफुसुनान ॥२॥ संसारयागतिमनि
 वसयापालिनिपाम हहाकलभीजयपरकाम ॥३॥ फुतकोवधु ॥
 रागराजविज ॥ ३ ॥ भवानिहे थुगुदुरवफुटकि ननान ॥ ५ ॥ याल
 व याजनमस डविकजि पापसरे ॥ स्वयतेनकरुणामिवान ॥१॥
 यायमफुधिभजन हि २ दियार्धंदान ॥ वनध्वजिसरिरगनाव
 ॥२॥ चरनसरनविधपानियाकोसतिन ॥ मनेतयताकालवानाव
 ॥३॥ धनजनगोलताव उपधुनअधमस ॥ अज्ञानियामनपरेयाव
 ॥४॥ हहाकलधिवालवया आसागुलादिहलसिया ॥ जनम
 दिसरन ॥५॥

भवानिहे

वयली पा पां व काल वी के तय नीमा रा सत माय

रागराजविज ॥ ३ ॥ जननिमाता त्वहेजगदिश्वरि आसा ॥ ५ ॥
 तुवपदवंकज ध्यानजपतप ॥ मोहियअनाथ उद्धारकरो ॥१॥ तुवदया
 विनति नाहि आनगतिमोरे ॥ देवि पद भावभगतिश्वरेमोरे ॥२॥
 जत २ देवन डरनहिआने ॥ ईहदेविसेवकराखोमोरे ॥३॥ निरदि
 सभे २ मोरे दुरितविसारे ॥ सबविधुरनको देहोपदमचारि ॥४॥
 श्रीजयजोगनारिन्द्रनृपतिनगावै ॥ नित्य २ दरसनदेहोभवानि ॥५॥
 रागराजविज ॥ ५ ॥ नारायणगु गुंयासिसरसनविज्याक ॥ ५ ॥
 न्हिदिदियास्वताउन अमिन सुंदरखाल ॥ जवनचक्रजोसे धवन
 संवपुसे ॥१॥ सिरसनागवामनि हससनागवाफनि ॥ गलस
 कोयासेतयातुलसियामाला ॥२॥ निरउनखानहया मिषापलेपनि
 वान ॥ न्हिलावदरसन विवजित ॥३॥ हहाकलयाविनति रं व दया
 दयमालप्रभू ॥ दनावदरसन विवजित ॥४॥ नेपालयाधनपनि श्री

जननिमाता

नारायणगु

जयभास्करप्रसाद ॥ चौखंड राजलायफलयकाव ॥ ५ ॥

रागराजविज ॥ श्री ॥ भैरवहेत्रीभुवननाथ सरन ॥ भवभयभंजिनि
नामनिर्जन ॥ १ ॥ तुवध्यान अर्चनविधिनाहिजानत ॥ कैसेवि
धिहोयउद्धारहमारे ॥ १ ॥ मायामोहभुल मनभजनकिन्हो ॥ अपरा
धद्वेमाकरो मै अजाने ॥ २ ॥ विषयसुखरस वसमनचंचल ॥ ताते
तुवसेवा मै नहीजाने ॥ ३ ॥ श्रीगिरिवानयुद्ध विक्रमसाहनृप ॥
भनारीपुभंजन होउसहाय ॥ ४ ॥
रागराजविज ॥ ५ ॥ कैसेतुववर्ननकरुमां सकयनहिपरेमेश्वरि
॥ ६ ॥ ऐसेसकल अर्चित्य अनुपमविविध रूपजवधारे ॥ अतिसही
ततव विर्यअद्भुत दुस्नदानवक्षयकरि ॥ १ ॥ सकलरत्नविच-विरिच
अनुपम कर्मअचरज जोकरि ॥ देवदनुजकि समरकारन मूलानुप
परमेश्वरि ॥ २ ॥ भासेसिंहविरजननिपदजुग सुमिरन सरसभरि ॥
~~भक्तजनकलासा~~

भक्तजनकलपारादायक रसिकमन आनंदकरि ॥ ३ ॥

रागराजविज ॥ ४ ॥ जयदेविस्वामा कमलाभारति जगजननि ॥ १ ॥
प्रलयसमयमधुकेटमोहिनि स्तुतिविशीचि वन्दिनि ॥ मैहीवकी सकल
सेना विनासिनि सुरमुनिजन रंजिनि ॥ १ ॥ सवासहित मैवाद्येडिनि
मैगलत्रिभुवनकि गति ॥ मुनपनिसहित सुरमुनिगुते भक्तजनवर
दिनि ॥ २ ॥ विपतसमयसुमिरन किगोवल सकलविषयवन्दिनि ॥ सैन्य
सहित धूम्रलोचननासिनिः भवभयतारभंजनि ॥ ३ ॥ समरसवरचंद
मुंद निपातिनि सकलसुर अल्हादिनि ॥ ~~अमिवलगुनि मुनि~~
~~कारिनि स्वमनिमय~~ असुररुधिर विजमय धुरपिवनि अखिलजगत्सं
पारिनि ॥ ४ ॥ अतिवलजुत नि भुम्रविदारनि रत्नमनिमय भाविनि
॥ सकलअसुरपति भुम्रसंहारिनि विश्वआखिल संपालिनि ॥ ५ ॥ सक
लअमरमुनिअस्तुतिवन्दिनि तुमैनाएयाणि रूपिनि ॥ सुरनमुनिउपकार

शैवदे

कैसे नव

जयदेविस्वामा

करागानिजगुराज्ञानभाविनि ॥६॥ सुरथसजराविमुतवरदानिसावर्निमनु
किन्हि ॥ परमज्ञानवरवैरुपकिदनि मुजसमिंहविरभाविनि ॥७॥
रागराजविज ॥ व ॥ गरुडनारायण हहिनश्रीसरस्वति ॥ क ॥ वैकुण्ठनायक
अभिमतदायक तुहि ॥ जुग २ अवतार फटकन असुरयापति ॥ १ ॥ गोवर्द्धन
धारक गोप्बालरक्षक हरी ॥ संसारपालनायामे जगतयाजुल उपकारि
॥ २ ॥ चरगासरगातमे सुरमुनिनरलोकपनि ॥ भगतिविनानंमदुगति
लायधानि ॥ ३ ॥

आशि
जयमा
रागराजविज ॥ प्र ॥ आदिचरिमुनि रंनितुनिकरे मधुकेरभसंहाणि
॥ मध्येचरित्रमैनेजजरूपसे सबलमहिषविदारिनि ॥ १ ॥ हेमाजय २ मा
हाकालि जयमाहालक्ष्मि जयमाहासरस्वतिदेवि ॥ क ॥ चरनकमल
तर तनमनकेवल नोमिसदासुरसेवि ॥ धी ॥ उत्रवल्लभ देवमुनिके
गिरिजारूपसुधारि ॥ धर्मन यनचन्दमुन्द रक्तविज भुभानिसुंमसंहा

रिनि ॥ २ ॥ ताहिसमयसुरमुनि मुनिकेवांछितकोफलदानि ॥ सोजगज
ननि यहमुनिकोफल विसारके पुरनभानि ॥ ३ ॥ भूपसुरथ समाधिबनि
जके ईछितको वरदानि ॥ भगतसिंहविर सरसगिन सकलकलुष वहानि
॥ ४ ॥

रागराजविज ॥ प्र ॥ हेमाजय २ माहाकालिजयमाहालक्ष्मि जयमाहास
रस्वतिदेवि ॥ क ॥

रागराजविज ॥ प्र ॥ हेमाजननि चई ... सरनवयाचनि छिपाहिनि
पायाकोसंवास ॥ स्वप्रजितदयादसे २ करुणातयाव स्वगोतरद्विनि
स्वसे हेमा ॥ क ॥ हेमांसिरसमतुक लुपारत्नमनिधुंसेतया हेतयाज्वाला
धिक ॥ कानकुंदललोव २ तेजगुलसुरगया गलसकरिठयासोभा
॥ १ ॥ हेमाजयस सरस्वज यवसरत्नभाज पुरनकलसतयाव ॥ जभि
तहालभोगिया २ निरर्न लोस्यतया लरित आसनयासे ॥ २ ॥ हेमा

भिमसेनजोपवर बुधभगवान सिद्धीतगनसहितन ॥ चोदिगराजा २
 श्रुतवेतालपनि मुनकावधमरसयाक ॥ ३ ॥ हेमांविजितहरवर्नदनावर
 सन विडुनेमनयाकामना ॥ भगतियामननसे २ वियावसुवर्णपुन सिद्धी
 वरदान ॥ ४ ॥ हेमांनेपालयाअधिपति श्रीगजेन्द्रविक्रमसाह देवपरापि
 ॥ गुसलन्येयधि संनभान वतना अलुतिमंगल याना ॥ ५ ॥
 रागराजविज ॥ ६ ॥ सुंदरविभूतिउसा गौरिवल्लभे सा सदानवस
 योगमधुमा ॥ नदिभृदिनिह्लासा त्रिभुलदमरुजोसा सिरसमधुक
 लयापुसा ॥ ७ ॥ अतिरसयसनसा जतलतपोलहिमा ॥ हालयाजभिन
 जसविमा ॥ धुयाद्येगुलियालासा बालवचंद्रमाडुसा धाम २ भिनविया
 तिसा ॥ ८ ॥ वसनहिगुलिदिमा जगतयावहलउसा तरुनमैवमदु
 धासा ॥ भवभक्तिनंधासा ससारयानामकासा मोलमाला गलस
 कोषासा ॥ ९ ॥ हाकलयाभनतसा वविनानमदुजोसा पुरेयावजि
 मनआसा ॥ १० ॥

रागमालात्री ॥ १ ॥ मात्रिका गनदीपकरधर ॥ जंत्रवजा
 वल्लरे ॥ जोगितिगनतरवने हरधितनित्यसाजहारे ॥ १ ॥ मुदितभुत
 वेताल तालदेव माहाभैव मृदङ्गसाजलारे ॥ सवहसंगम अंगअनू
 पम रंगकाजलारे ॥ २ ॥ तखनेधुनिसुनि असुरमोहिनि देवमनसंगि
 त मोहलारे ॥ सकलछलवलकरहकरुनक असुरमाललारे ॥ ३ ॥ तकरे
 रुधिरक पालपलल मधुरसवविधि तेजफललारे ॥ अस्त्रहासविका
 दहृदिस हरषवाधारे ॥ ४ ॥ रक्तविजकरुधिरवहिगेनकोरि २ असुर
 जिवलेलारे ॥ तरवनेईधरि जिहप्रसारल सकलसोवरारे ॥ ५ ॥
 भगतिमुरपति आदिदेवगण प्रनतिविनति कयलमुनिजनारे ॥ कि
 रतिकीनर सरसभयंकर गितगात्रलारे ॥ ६ ॥ अपनेपदगुगकमल
 सेवा सकलखनमोही मानदेवारे ॥ ज्ञानध्यानसमाधिसंगमकिहु

नहिअबरे ॥ ७ ॥ आनमोहिअवरंस्व किछु नहिबिरव म यहिसंसारज
ल निधिरे ॥ जोरि करजुगनृपतिजजोनि विनतिगोचले ॥ ८ ॥

रागमालश्री ॥ प्र ॥ कं कालनिभैरेवेयावनमुण्डमालपिराजिनि
॥ कं ॥ अक्षदलकेकमलभितरआपमस्तपिराजिनि ॥ सिरमकुटसोभि
त दिवैरुलकन मनोर विडनितारनि ॥ १ ॥ हातात्रीशूलनिषडुधार
नि मारतअमुरपधारिनि ॥ धावतघातक घाटदानव कथिनदारकर
नासिनि ॥ २ ॥ तुमहिकालिअमुरसंहारि जुगकोप्रतिपालनि ॥ गीरणा
वाहाडुरसाहनृपको सदाहोतुमदाहिनि ॥ ३ ॥

रागमालश्री ॥ प्र ॥ भूपपानिचन्द्रिकेजय ॥ कं ॥ दिंदिमदिन २ दमह
वादिनि विकट कट २ हांसिके ॥ मर्मत तम २ मैष मारिनि जगतचरिड
निकालिके ॥ १ ॥ चर्चक चक २ चरननुपर ऊँ म ऊँ म ऊँ विक ॥

धंघकधक २ वसनवासिनि दुरितनारिनि तारिके ॥ २ ॥ समलधोसि २
धनुजदारिनि त्रिदसलामिनि व्रंछाविछुविमोहिके ॥ ३ ॥ विनतिगो
चरजननिपुनु २ श्रीजीतामृत भूपति कुर्मातदम्भ कुसंगजिकहु
होवतुवपदमर्मतो ॥ ४ ॥

रागमालश्री ॥ व ॥ राजतेहिमसेलजा उद्विजयंतिजय २ अंकलाल
ये राजिताजि पदम्बजा ॥ कं ॥ जघनविवसनजागिभीखन ऊँ चिना
टट मूधजा ॥ तुमतिनिरवधिदैत्यगनअधि भीमभैरव नदिनि ॥ १ ॥
अमुरवासिर हारसडुर अहंताशुर साधिनि ॥ किरातेकति २ हति
चादिनि संततिराति कोपिनि ॥ २ ॥ दुरिततम २ सामयाकृत तालका
पति रूपिनि ॥ कालिकाभूतरूपिनि जुधिकालिकाभूतरूपिनि ॥ ३ ॥
भूपजगजयआहसविनयमर्म सोभवनेपते ॥ विलसनाजदिअविर

नैहदिके मुखतं मुखसंपति ॥४॥

मुराडमालिनी

रागमालत्री ॥ व ॥ मुराडमालिनीचरिडके जय ॥ र्क ॥ प्रकटकट
विकटवादिनि ऊं ऊम २ ऊं विनि ॥ विभुर्विंदति विबोधदायीनि ता
रिनि तनुधारिनि ॥ १ ॥ रक्तविजसमद सभनेत च चत २ च विनि ॥
पुनतलोक प्रमोदकारिणि कालिकाकिनिकालिनि ॥ २ ॥ इंद्रचंद्रक
वैरजलपति सकलसुरगन वंदिते ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशसंकीर्योगि
निगनपूजिते ॥ ३ ॥ विनयनमतिविनतिगोचलजननि नुवपद अं
विके ॥ नृपजितामृ शुभावभाविन भारतिपद चरिडके ॥ ४ ॥
रागमालत्री ॥ शु ॥ माई भगवति जगतजननि भक्तकोप्रति
पालनि ॥ र्क ॥ मधुत असुरसंहारिनि माई महिषासुरपदा
रिनि ॥ तुमहीमाता वक्रधारिनि तुमहि सिंहवाहिनि ॥ १ ॥ धूम

माई भगवति

लोचननासिनि माई चंद्रमुंद विनासिनि ॥ दैत्यरक्तविज शुभनि शुभ
असुरगणसंधारिनि ॥ २ ॥ सकलरिपुभयनामकरदेवि सकलसु
खदायिनि ॥ भगवत अनाथ यहगुणावात सदाकरो कल्पा
नि ॥ ३ ॥

कालिकेनग

रागमालत्री ॥ शु ॥ कालिकानगवालिकादल पोल जगतआधारि
॥ र्क ॥ वसुमुपायसमानसरिया वसत धुंदेगुलिसाज गहिलयारे
॥ मोलयामनुकस कवनधेलसमोतिन मूलक नयानरे ॥ १ ॥ गलस
नरधेल गजलव सकोस हालतलमतिविनरे ॥ वक्रधर सतिनंदवू २
धन लपडे कालाहातिनरे ॥ २ ॥ नुगलकरि २ थयानं आनिपति
लोल पेनक नुतिनरे ॥ रक्तविज हस नुलिदैत्यया जुभन हया

नित्यनवम्

हिफुतिनरे ॥ ३ ॥ अतिनभयंकर मुरतिवसह्या तयानंकलिस
 फहनरे ॥ भुपतिन्द्रयामनमतनमन भावभगनिधिध्यानरे ॥ ४ ॥
 रागमालात्री ॥ ५ ॥ निलजलधरसमकलेवर ससधरवदनमंदि
 तिहे ॥ महिषमार्दिनिभुवनरंजिनि संभुपाहिनिहे ॥ १ ॥ जयमहिष
 मर्दिनिहे ॥ २ ॥ षड्गुणपरपासधारिनि धनुषवानत्रिशूलचारिनि
 हे ॥ सिंहवाहिनिरुधिरपायानेतिउरदाहिनिहे ॥ ३ ॥ मस्तकारि
 गमनगंजिनि भक्तगनपति हृदयरंजिनिहे ॥ चन्दहासिनिडुरितनासि
 नि विन्दुवासिनिहे ॥ ४ ॥ सदामयिकुहदेविलालिते विविधधन
 जन सकलमुदि तेहे ॥ कुमुदिनपति रासिकगिन सुरवपिनि
 तेहे ॥ ५ ॥
 रागमालात्री ॥ वं ॥ अम्बिकेजगदम्बिके जय सभूरजिनिभक्त

नित्यनवम्

पातिनि भवेकारिनि चन्द्रिकेजय ॥ १ ॥ निरदयसमरुचिरस
 भारचन्द्र सुसोभिने ॥ कनकमनिमय मुकुटसोभापुराडमालविणजि
 ने ॥ १ ॥ अनिविरसेदासे धारसागत दनुजजि वन खंदिते ॥
 सुरमुनिगननिधि मुरिगन चरनपंकज वंदिते ॥ २ ॥ अननजयपर
 कास त्रिपुषार पायत्रिशूवनपायिके ॥ अभयदायिनिडुरितनारिनि
 जननिहिमगिरि वासिनि ॥ ३ ॥

जयकाल

रागमालात्री ॥ ५ ॥ जयकालिकातुल्यचरणसेना भक्तकेसुवदा
 यनि ॥ १ ॥ रक्तविजनिभुभभुभ मेवासुरसंहारिनि ॥ २ ॥ कन
 कमनिमय मुकुटसेनाविकटदन्तप्रकासिनि ॥ अवनडरगुग आनन्द
 लोचन षड्गुणकधारिनि ॥ १ ॥ प्रनतिमुरगुनिविमलदजुगअगम
 भवजल तारिनि ॥ नामसुमरन पापमोचन देतअभयवादायिनि ॥ २ ॥

कोटिरविससिवदनसेवा कालिकासर्ववाहिनि ॥ भुवनवर्दिनिअसुर
 वंदिनि सवकेमुखदायिनि ॥ ३ ॥ अणानिमधुकरविविधसेवा त्राहिर्मा
 तोहेसंपदे ॥ सुमनेजयपरकासगावतविनानितुवचरांभजे ॥ ४ ॥

रागमालत्री ॥ व ॥ नागनरचर्मधारनितुव जयतु जय २ दराउपानि
 तुव मुराउमान आनेसोभिते जय ॥ ध्रु ॥ दिमिकि २ दमरुवाजिन
 नाचतमाधियातालालि ॥ नाचतनदिभैदिमृदंगधोलकभररी
 त मुरासांणे ॥ १ ॥ करकीरितकपालकुंदलव्यालजस्तप्रविमुनि
 नि ॥ जयंतिभैरवचराजुगपदकरतसेवक ध्यानहे ॥ २ ॥
 राग मालत्री ॥ भु ॥ जयदायिनि विनिविरासिनि देवनाथसु
 प्रजिते ॥ ध्रु ॥ हंसवाहिनिकमललोचन उरार्चन्दनिभनने ॥ पञ्च
 माना करविधानि देवनाथसुप्रजिते ॥ १ ॥ चारु कुंदलकुसुमश्लित
 विंदुपात्र विराजिते ॥ भक्तलोक विनोददायनि मुनिगनकेसुसो

भिते ॥ २ ॥ दितिचविरविनासकारिनि विविधमनिमय मादिते ॥ रत्न
 कुंदल कनकभूषणा रंमेहाल सुसोभिते ॥ ३ ॥ विस्वलक्ष्मिननयवि
 लं पायबराजिनश्रुमिते ॥ पावराविकर वंसदिपाने दिताभिर
 धननिर्प ॥ ४ ॥

रागमालत्री ॥ भु ॥ दैविभगवतिसहस्रजिविनगिनेहुनेदयादयका
 वरे ॥ ध्रु ॥ छिपालिपलेख्यानरसरनजिडगजिनचोताजिछितुभाल
 पात्रे ॥ ध्रु ॥ जिथवकदिननंसतुरिपनिसेनंधलिनदुरवसियकाव
 रे ॥ मननं वचननं यानाछिसुमरनस्वगलिभूवनस्वयावरे ॥ १ ॥
 चानदिहसद्धिधकाजुयाजिन आसाभरसातयावरे ॥ देस २ नैहि
 लावरे ॥ जुया जिन छिछल्लजिनमदयावरे ॥ २ ॥ रोजेधरीदेवितनया
 भूषतिजगतजन नि सियावरे ॥ ३ ॥ देस २ नैहिलाकजुय
 राग मालत्री ॥ भु ॥ जयदैविजनानेअसुरनासिनि भुवनलोक

उधारिनि ॥ ६ ॥ चन्द्रपुराडरुक्मिजशुभा मैवासुर संहारिनि
 ॥ विस्वभयसवस्रंदितुवत्राहिश्चरणांभजे ॥ १ ॥ दुस्सनासिनि
 भक्तपालिनि कालिकासिंहवाहिनि ॥ सुसुनितुव जयशावत
 तोहेत्रिशुवनराणिहे ॥ २ ॥ भावभावित गुमारिसेवक चरणांपंकज
 पायाणि ॥ सङ्ग षप्परत्रिशुलधारनिदमस्त्वजतदिनिदिनि
 ॥ ३ ॥

राग मालव्री ॥ प्र ॥ विजयकाजदेविपेरजे प्रनतलोकसु
 धारे ॥ सुसुनिसेवा मानकरे जोगिनिनाचततारे ॥ १ ॥ केस
 रिवाहिनि शुवनपालिनि संकरमोहनकरे ॥ प्रवनतमैवासुर
 के सिंकातिप्रानहरे ॥ २ ॥ समलदेवय असुरमोह्य रवर्ग
 षप्पर धरे ॥ रुधिरपानकरंगसमि रिरोडुररसभरे ॥ ३ ॥ हल
 दोल पडरा साह्यकनकरसधारे ॥ चरणाजुगपरमहनिमंगुल

नूपुरधरे ॥ ४ ॥ मुराडमालिनिदुरितहारिनि सकलभूपतिचरे
 ॥ सुमतिजयपरकासकेकर जोरिभावकरे ॥ ५ ॥

रागमालव्री ॥ शु ॥ जयभिमभैरव जगतलखलपिसेवकदि
 नं धनकावरे ॥ ६ ॥ विज्याक पचिलि छिभैरविआदिनं जोगिनि
 गनमुनकावरे ॥ अभयवरपितरे फटकिपापमति द्रोहमेभिन
 युलपसरे ॥ १ ॥ भैरवनामकासे चरणानिगुलिस भावभक्तितयान
 रे ॥ ल्हकल्लअनाथया मनसननमन अथेनीद्विचरणालायेरे ॥ २ ॥

रागमालव्री ॥ प्र ॥ घोरगुर्जिनिविकटतारिनि करतरनगिरिनान्दि
 नि ॥ ६ ॥ चंपरहंकिनिफिरतदंकिनिकरतअरनिरवन्दिनि ॥ मुराड
 मालिनिस्वभितहे दीपे विकनदहनप्रकासिनि ॥ १ ॥ कालनादिगसोर
 चौदिगसुनिनमयभयकंपिनि ॥ वाजवाजिनीभैरिसंखिनिधाकधो

विजय

जयभिम
भैरव

घोरगुर्जि

लक मृदंगिनि ॥ २ ॥ नागकिंकिनि नागफनिमनि नागके उरही
 नि ॥ नागवंसमहिपति श्रीपुपनाथकरेपतिपालनि ॥ ३ ॥
 राग मालत्री ॥ ४ ॥ कालिकाजगदिश्वरिदेवि गलसमोल
 माता नृससकंदल हलमनिकयावेसरि जये ॥ ५ ॥ खर
 ग सरिं जोसे मिपितियालेन असुरफटकल ईश्वरि ॥ भूतवे
 तागन जोगिनि दकोअन आनन्दजुलपरमेश्वरि ॥ १ ॥ मनुक
 लोवअनि त्रिनाथ अजगति जननिविकटभयंकरि ॥ हाक
 धनरपतिविहुले भुभगति चरनसरनगुह्येश्वरि ॥ २ ॥
 राग मालत्री ॥ ३ ॥ जयरजराजेश्वरिभवानि सुन्दरीजगदामि
 के ॥ ४ ॥ कोटिचंद्रसमानरूपिनि कमलनयनवितालके ॥
 पासुधरस वागवादिनि दुस्तमैसासुरविदारके ॥ १ ॥ षड्

कालिकाजगदिश्वरि

जयरजराजेश्वरि

खपाधनु वसरवर मुन्दमालविधारके ॥ हाकरभुभनि सुंभमात
 रुधिरपावन कालिके ॥ २ ॥ भूतिनिमृगराजसहितपिताचगनपरि
 चारिके ॥ तारनिमहेश्वरि देहोविजावर सदा महि नाथके ॥ ३ ॥
 राग मालत्री ॥ ४ ॥ जयरामलधुमन दुनुजोधाविरहगमानसाधरी
 ॥ ५ ॥ खरदुखर त्रिसिरानासिनि मायारात्राभंजिनि ॥ विरमेघनाद
 सिरधंडिनि कहिय सारंगपानि ॥ १ ॥ रावणके दसमस्तक देदिय कुंभ
 कर्षा रिउमारिणि ॥ भक्तविभिषनसेवक जाननलंकापतिपारिनि ॥ २ ॥
 राग मालत्री ॥ ३ ॥ जयभीमरूपभयासुंदर अरुननेजमाहाव
 लि ॥ वामेराजिन वागवादिनि दुर्पतिवर सुन्दरी ॥ ४ ॥ वसतविन
 विविन भूषणाअरुगानेज माहावलि ॥ कमलमाल सुवर्णामनिमय
 भुवनसोभितभिम्बलि ॥ १ ॥ विकटलोचनदंतरांजितपद्मजोगिमानि

जयरामलधुमन

जयभीमरूप

भीर ॥ चतुरसि मगनमारत सिरपरउद्धवाहुगदाधारे ॥२॥
पवननन्दन दुरितघडन भक्तजनसर्वकिंकरि ॥ सरननुपदकह
नमाधव दुरवनामसदाकरि ॥३॥

हाहादेवि

रागमालत्री ॥ ५ ॥ हाहादेविकनककुंदलसिलसवहैवावन ॥ ६ ॥
दामजोजनधारिनिमयदिहिदेवियायरे ॥ ममानजोनिविलास
मंगल नागनाचनगावरे ॥ १ ॥ सूर्यसिंधुतालकरधारविकटदंत
हसरे ॥ खप्परदमरुनिभुलकरधारदत्तभयननासरे ॥ २ ॥ भूतभुव
नमंदलभुवनजगतजननिअंविक्के ॥ रत्नधारापिबंनिदेविअसुरमारनि
चरिउके ॥ ३ ॥ जोगिभोगिनिसनिसुत्पजोगिनिमोकेकालिकालिका
कुसुमभयनाकमलनयनाकानिसूर्यजोतिके ॥ ४ ॥ दामसिद्धीनरसि
हकहन सिद्धिनवनिद्विपायके ॥ चरणसेवक श्रीवास सहितदेवि

पदगावरे ॥ ५ ॥

॥२५४॥

प्रगन

रागमालत्री ॥ ६ ॥ प्रगतजननिअतिविकलालि रिपकुल मारनि
भवभयभंजनि ॥ नाचय तिनअम्बे नाचयतिनमिलि भैरवभिस
म चन्दिकुमारि ॥ १ ॥

त्रिभुवन

रागमालत्री ॥ ७ ॥ त्रिभुवनजननि आदिभवानि चन्दमुन्दमारि
नि मैयासुरघातिनि ॥ रक्तविजय मधुपानकरायनि शुभनिदेनोत्रार
देदिनि ॥ १ ॥

कैरातवर्णी

रागमालत्री ॥ ८ ॥ कैसेतववर्णनकरुमां सकयनहिपरमेश्वरि ॥ १ ॥
रैसीसकलअचिन्त्यअनुपमविविधरूपजवधरि ॥ अतिसिद्धिजनतव
विर्युअद्भुत दुस्तदानवक्षयकरि ॥ १ ॥ सकलरामविचचरित्रअनुपम
कर्मअचरज जोकरि ॥ देविदनुजकिसमरकारन मूलजमपरमेश्वरि ॥ २ ॥

भाषेसिंहविरजननिपदजुगमुमिरनसरसभरि ॥ भक्तजनकल्पाणादा
यक रसिकमनआनंदकरि ॥३॥

मात्ररूपिनि

रागमालात्री ॥ ५ ॥ मात्ररूपिनि समरकोपिनि सकल सैन्ये विनासि
नि ॥ ६ ॥ मात्रकागणा सम आगन करत दात वसराडन ॥ विविधय
नकीरक मारति सैन्ये भई है अहसन ॥ ७ ॥ मात्रगणा से पि दित दा
नव भागि दिसि दिसि ॥ देविरनरक्त विजभादा मुर आगे धाये रिसि
॥ ८ ॥ जब रुधिर वन्द पतति भुलतरक्त विजसरि रसे ॥ नृत्यवलतत्स
मपराक्रम युगत होत धरनि से ॥ ९ ॥ भनत सिंह विर सुललित गित
जनमंगल करे ॥ जननि किजम भजन किर स भक्त भव संकट हरे ॥ १० ॥
रागमालासिरी ॥ ६ ॥ दैत्य दल यह विध विनासिनि मात्रकागणा
रूपिनि ॥ ७ ॥ कपतिकरक जल असुर पर विजै ज संहारिनि ॥

दैत्यदल

जोजो धावत दनुजसन मुख ब्रह्मा निस ॥ भनासिनि ॥ ना विध वैध
वि विमल चक्रने दनुज दल संहारिनि ॥ १ ॥ कोपन से को मारि भगव
ति सक्रि से रिपु भीजिनि ॥ जननि ईद्रायणी कुलिस सै दैत्य गणा सत व
दिनि ॥ २ ॥ दानव दल यह विध पतन भई भुमिल सो नित भरि ॥ भन
त सिंह विर एण ज स भक्त चित आनंद करि ॥ ३ ॥

दैवि भगवति

रागमालात्री ॥ ५ ॥ दैवि भगवति विविध रूपिनि दैत्य दल मल नासिनि
॥ ६ ॥ वहवतुं दप्रहारिणी रूप भुकर धारिनि ॥ दसन भुंगने हृदिविदारिनि
चक्र से रिपु मारिनि ॥ ७ ॥ चरति नर हारि सक्री रूपिनि ना द सै दिग शोभि
नि ॥ भुल असुर न घेन नासिनि विर दानव भक्षिनि ॥ ८ ॥ समर सिव दुजि
चंद हासिनि ना द से रिपु शोभिनि ॥ पतिन भुवितल असुर गन जब
सर से स भक्षिनि ॥ ९ ॥ समर ज सन स भाषे सिंह विर भुवन मन
आनंद करे ॥ सकल रिगन डर भागत रसिक मन आपद हरे ॥ १० ॥

आदिसती

रागमालात्री ॥ प्र ॥ आदिसती अनादिकारीणी चिन्तयानन्दरूपिनि
 ॥ १ ॥ तुमहि वैभविसक्ति भगवति विजैव जअमानकि ॥ विस्वसकल
 कि विजकारण परममाया अमानकि ॥ १ ॥ तुमहि मोहिनि अखिलत्रि
 भुवन विस्वयसेवंधनकरी ॥ जवतुमकुपुसन्तकरतवंधमोचनतपक
 रि ॥ २ ॥ अनतसिंहविर रुविरसभक्तमन आनन्दकि ॥ गानसमरस
 पानमधुरस तानलतिनमुकानकि ॥ ३ ॥

अमृषुडिने

रागमालात्री ॥ भु ॥ असुरखरिडिनि चरिडि केनिनलोककि उपकार के
 ॥ १ ॥ दानवराजनि भुम्भके हृदि भिन्न करि जव भुलने ॥ तरवनताको
 सरिसैयकनिकलि पुरुष गच्छने ॥ १ ॥ महनि विरअति पराक्रमिसह
 वरकर धारिके ॥ बोलत सोरन विच पुरुष वडी नदुरन जानिके ॥ २ ॥
 तनिकनादसै देवि हासिकनिकलि जो विरकि सिर ॥ निक्षन बहने छिद्रक
 रिजव गीर परिधर निविर ॥ ३ ॥ अनतसिंहविर समरस रजसभुम्भ

रजगदीविने

दायके ॥ भजननि मुदिन करुंडत वमन तानय हभवचारके ॥ ४ ॥
 रागमालात्री ॥ ज ॥ हेनगदीविनि आदितिथिनुमहंस्वाहिनि महेश्व
 रि नुवाराहिनि ॥ तजदिनको मारिजोगिनि सक्ति खप्पारधारिनि ॥ १ ॥
 चौधिदिन देवि गरुडवाहिनि पंचमवाराहिवाधनि ॥ षष्ठमईद्राय
 णि तारिनि सप्तमकालिकादेवि ॥ २ ॥ अस्ति दीनमाहालस्मिदेवी
 भयहरनि सिंहवाहिनि ॥ नवमिरंजनि चके श्वरि भैरव सहित भु
 लीनि ॥ ३ ॥

माईहेतिनिलोक

रागमालात्री ॥ चो ॥ माई हेतिनिलोकयादेवि उत्रापठसहित
 यानाव रसनंविजाक देवि हेमाई ॥ १ ॥ न्हिलावमुमुहुनगो
 वर्णात्रिनेत्रधारिनि ॥ लोयावासेलस रतनमकुट जाजोत्पथिक
 हेदेवी ॥ १ ॥ कुंदलन्हसपोत गलरकोयासे कुंठियासोभा

जैसे हे ॥ डकभुजदा हिन्ये सरध्वज वापेर नभंजन देवि ॥ २ ॥ तिया
 वसण्या ॥ या अनेग आभर्न हया सोभालाक अतिनं ॥ हवयासे अन
 हेमगिरिचोम ललित आसन यासे हे देवि ॥ २ ॥ भावतसे मन देवि
 द्यासकामिनि अहंनिसिद्धिं पुनमापि ॥ लहाकल अतिदुषि विया
 वसपतनिधि पुरनविडुन्ये सिद्धि हे देवि ॥ ४ ॥

राग मालागी ॥ ॥ जये देवि भगवति घोराजनि प्रकल ह्ये त्या सुदमद
 नि ॥ कुं ॥ चमलाचाल सुचंद वावारे तुषतनाचतताये या ॥ वगतख
 त २ हासिनी देवि वगत वत २ हासुनी ॥ १ ॥ कोटे सुर्जे तेज भगवति मु
 ती उरवा इये गारवपद् भदि २ ह्वा रे करि दुं घत घट घट पीवनि
 ॥ २ ॥ सिंधुचाटि के वल्लेके धुगुद घन २ वाजोनी ॥ सेवाम
 दनि अचुर नासिनी तीन भुवन के एनि हे ॥ ३ ॥

राग ललित ॥

॥२६०॥

॥ प्र ॥ आदिभवानि हेमाता चरिड भवानि हेमाता कृपावरदानि
 ॥ १ ॥ सिंहचाटिरानिदमरुवा जयनाचत वेतालजोगिनि ॥ १ ॥
 हेमगिरिवालकुमारि विराजे ॥ त्रिभुलखत्वांगधारि ॥ २ ॥ कुंद
 लहारनि मोतिके मालारि नि ॥ मारियमैधादिनासिनि ॥ ३ ॥
 मेरामनसुमरन दुखनारिनि ॥ पाथिये कस्यारा रूपिनि ॥ ४ ॥

राग ललित ॥ ५ ॥ पदमकररुष नाथ प्रभु नमसंयुचक गदाधर
 ॥ ६ ॥ मोरमकुटसिर मकरकराडल अंगसोभित भूषन ॥ १ ॥ कम
 लनेत्रविमालसुंदर ॥ श्रीपतिगरुडासन ॥ २ ॥ चरणार्पक करतसेक ॥
 मैअनाथनिरंजन ॥ ३ ॥

राग ललित ॥ ४ ॥ मनकामुनामाहा मायामाना कल्याणि ॥ १ ॥

आदिभवानि

पदमकर

मनकामुना

मनके कामना मनके भावना मनके पूरन देहि ॥ १ ॥ डुरव भंजनि डुरमनि
नासिनि डुरा जगत के रानि ॥ २ ॥ पतिन उद्धारिनि पदम परमेश्वरि
पुंन मृगत के रानि ॥ ३ ॥

राग ललित ॥ शु ॥ तो हे गत हनुमान कि माई सोच है हर जान कि
॥ १ ॥ वज्र अंगुन गुन सो भित्तुराति अधिक प्रमान कि ॥ १ ॥ अरुन
नख फल जिय जान वाय सिस वसं गरभान कि ॥ २ ॥ दास नुला सिकर
त असुनि दे हो उधि वरदान कि ॥ ३ ॥
राग ललित ॥ शु ॥ देवि नमो २ जगदम्बिके दक्षिको टि रिस सि दानन
॥ १ ॥ सिव सक्ति गुन उपायिये ॥ गिरि गगन भूतल गारन ॥ १ ॥ तुष जो
नि जाहा ताहा देविये ॥ विधि विष्णु हर पंचानन ॥ २ ॥ देवि हे मति व
गुन गायियो अमृत के रिघम सं सानन ॥ ३ ॥ देवि हे मां जगन उद्धारनी
जग जय मस्त गु वसरन ॥ ४ ॥

गोहे जग हनुमान

देवि नमो २

राग ललित ॥ व ॥ भजन कव करि हो जनम सिरानि ॥ १ ॥ जव जन
मेतव भजन कवुला वाहिर सुधिवि सरानि ॥ १ ॥ बाल धन जप खेल
न भूलो तरु रापै थि गुमाना ॥ २ ॥ वृधा भय जव आलस उपजे सिर
धनि २ पछुताना ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु तुमारी हर सको जम के हात वि
काल ॥ ४ ॥

राग ललित ॥ व ॥ जिव वल हे पासा सोयाव जायाव ॥ अरवत नं सने
मने हना सचायाव ॥ १ ॥ पित ना ववने स्वव सार कुवयावरे सदान
नं याय माल कुल जो नाव ॥ १ ॥ साफ ना वयन निह्र थास थेन कावरे
॥ हरि सं रिजो जल पा भिन क सावाव ॥ २ ॥ तिथि गु सिं हनं ल्हाय वव
नने सावरे ॥ जिव से नं नेने माल स्रव भाल पाव ॥ ३ ॥

राग ललित ॥ शु ॥ जय भिम रूप भयानं सुंदर अरु राने जमाहा
वलि ॥ वसत वित्र विवित्र शुवन ॥ १ ॥ कमल माल सुवर्ण म

भजन

जिव वल हे पासा

जय भिम रूप

निमय भुवनसोभित त्रिवलि ॥ वामेराजितवागवादिनिदुर्पतिवर
सुंदरी ॥ १ ॥ विकतलोचनदत्तारजित पद्मजोतिमानिभारे ॥ चतुरारिपु
गरा मात सिरार उद्धवाङ्गदाधारे ॥ २ ॥ पवननन्दन दुरितघ्न
भक्तजनसर्वकिंकरि ॥ सरनगुणपद करतमाधव उद्यनामसदा
कारे ॥ ३ ॥

रागललित ॥ ४ ॥ सिंहयाधुंसंजोनाब्धानयाभ्याल ॥ ५ ॥ अङ्गु
तिजुलथनि संसारयाभ्यालारे ॥ न्मावेसेनेधाल ॥ नेनामदुसार
॥ १ ॥ सुमेरूयात्वापोलस गुंमिचायावासरे ॥ चलानेन्दुयकलावि
चानिलहाल ॥ २ ॥ हेलयासिंजादेकन नायवनमुली कोठनैवोय
कल किसिनिहहाल ॥ ३ ॥ फयकेधकावपना सपानिमुनाव ॥
उत्तकनलिवयाव तलअपमान ॥ ४ ॥ पाथि पिन्द मस्तीहाल
जुगुतिविहाल ॥ थवनिनि थर्म सोसेयाव वेवहार ॥ ५ ॥

रागललित ॥ शु ॥ देविदायकसंकरितुम इस्तदलमलदुरकर
॥ १ ॥ सिंहचदितुमद्वत्रविराजे करत्रिभूलभयंकरि ॥ १ ॥ वंछा
वेदपथेदेविद्वारे थादेजपतमहेश्वर ॥ २ ॥ अष्टभुजानुमद्वत्रसिंह
सन पुजामे आदिमहेश्वरि ॥ ३ ॥ नारानित्पपदेनेरिद्वारे कृष्णवजा
वैवागुरि ॥ ४ ॥ अष्टभुजानुमद्वत्रसिंहासन पुजामे आदिमहेश्वरि
॥ ५ ॥ सोभाचदिदेवि अंगविराजे ध्यानधारतस्त्रिसंकरं ॥ ५ ॥ भक्त
जनकोकरोकृपादेवि आदिरूपमहेश्वरि ॥ ६ ॥

रागललित ॥ शु ॥ जयलोकिनाथदयाकरी ॥ भक्तकेदुरवहृक
रोनुम ॥ १ ॥ भुचरजलचरवेचरको कारनहे सुखदुरवको ॥ १ ॥
तिनहिलोक कोपालनिहारो हमकोकैसेभुलिपरे ॥ २ ॥ गावनसेवक
प्रभु विचारो जोचाहे सोहिअवकरो ॥ ३ ॥

रागललित ॥ दे ॥ हरिधिविस्वरूपभरसा छिपालिनिपा संसारया

भारधरलपा ॥ १ ॥ ब्रह्मादिदेवैः साया जुलं ध्वज भजलपा ज्वना जुलसंरंग
 लिया ॥ गोवरधनधरलपा गोकुलसलधलपा फटकलकंसा सुरभूपा ॥ १ ॥
 गोपिनं नल वृषारोधिकाया धिधिंदापा जयावजुह्वदोहसापा ॥ मनुकस
 हसवापा वसन सखासुकापा स्नानपनना याडुडभोपा ॥ २ ॥ तक्षि
 मिमचोन कृपान सयार्चवलआपा जिपा छिन्न धितुसुमरपा ॥ वसया
 खल्लायअपा जिडुरवफटाकि कृपा फटाकि वलोभ मोहअपा ॥ ३ ॥
 रागजलि ॥ ४ ॥ स्वयंभूनाथमहेश्वरसिव दमरुकरधनभारलोच
 न ॥ १ ॥ प्रथमगंगापति बालजयगिरि नन्दिनिपति संकर ॥ १ ॥ आ
 सगंगा तरंगाससधा ज्योतिरूप दिगंबर ॥ २ ॥ मुन्दमाला भुजगभूष
 णा ॥ भस्मशोले वर्धवर ॥ ३ ॥ भक्तजनपतिकरीकृपा महेनाथ जगदिश्वर ॥ ४ ॥
 रागजलि ॥ ५ ॥ जयगजानन गिरिजामुत यकदन्त जलकट
 लोभित ॥ १ ॥ तुवरूपअनंत अपारन ॥ जगगकि तुम होअधारन ॥ २ ॥
 जगदिस त्रिभुवनपालित ॥ सुरनरमुनिसय सेवित ॥ १ ॥ गनराजभूष
 णासे ॥ २ ॥ सेवक जसगंगा भावित ॥ ३ ॥

हे आज

मनसा

मेरे आज्ञा

मारे हे मेरे विनति

रागईमन् ॥ चौ ॥ हे : आज हो नन्द उमंगचलो रिसा वि संवधने ॥ १ ॥
 मंगलगावत चौक पुरावन वाजनवाजे जैसे मेघघने ॥ १ ॥
 रागईमन् ॥ च ॥ मनसा पूरन करिय भवानि ॥ १ ॥ मनका मुनादेवि
 तुमारि दरसको आये ॥ जो जोवरमागे सो सो फल पाये ॥ १ ॥ चरणाक
 मलपरदासके विनति ॥ मुनियारि मायि त्रिभुवनरानि ॥ २ ॥
 रागईमन् ॥ चौ ॥ मेरे आयला तरे सै तुम रसिकर सिरसयाप
 ना ॥ १ ॥ रसवासनयनि बोलत मधुर वचन रसवास कि मेहेन आवना
 ॥ १ ॥
 रागईमन् ॥ प्र ॥ माई हे मेरो विनति मुनिये ॥ भवभंजिनि मुखवादाय
 नि ॥ १ ॥ कनककि भूषणी कुंदललागिनि नरमुदमालिनि तोहे गग
 तारिनि ॥ १ ॥ मनोरथ पुराने जयभद्रकालिनि गिरिके नंदिनि सुरनरपालि
 नि ॥ २ ॥ संकष्ट तारिनि पाउतारिनि माई के भजन मोकरो चितलायनि ॥ ३ ॥

करप्रवृत्ति

रागईमन् ॥ चौ ॥ करमुडलिया धरनैर भुजकिचलिये कैसे आपना पार
कोकोतक छविन्यारिती ॥ ध्रु ॥ लोकलाज कुलकाज भुलिगई सबसा
ज मकुटकिन छपर कैसे आपना ॥ १ ॥

ब्रह्मायणी

रागईमन् ॥ व ॥ ब्रह्मायनि २ माहां मायादेवि ॥ ध्रु ॥ ब्रह्मायणिमहे
श्रिकौमार वैष्णवि ॥ वाराहि इन्द्रायणि च मंडामाहा लक्ष्मि देवि ॥ १ ॥
वटुकगनपातिद्वारे थारे ॥ भैरव भैरविराजे ॥ २ ॥

पुरन

रागईमन् ॥ चौ ॥ पुरनकारन मनई छा सावरी सुरत दिल परतन
॥ ध्रु ॥ जो नयना देखत अलसा परसा हिय ॥ आंख लगायत परतन ॥ १ ॥
लिफि २ देवत मोह मन भुलिगई सुराहि २ वर परतन ॥ २ ॥

उपनि

रागईमन् ॥ प्र ॥ तुमविनु नाथ सरने कौमेरि ॥ अंतन जानि आधा
र मोहे पाय २ सरनागत तोरि ॥ ध्रु ॥ थकुरायन श्री कवर राधिका तहल
मयरा जिन देर समेरि ॥ शिवसनकादि आदि प्रसादिन रहत आस

ब्रह्मिनि

चितलावला तोरि ॥ १ ॥ कामक्रोधमदलोभमोहसव निमुदिन रहत
विषयेर सवरी ॥ सोनादास भगत वढाई जेकर डू कटाक्षरसलाव
तो तोरि ॥ २ ॥

रागईमन् ॥ चौ ॥ वहे दिन कथन गयिही के सुमरन विनु पायो ना
हि कहु भेद मरम ॥ ध्रु ॥ जो कहु किजे स्वकृत सोच अस्वचन ॥ निर्म
लजन मयोयो भरभनम ॥ १ ॥ जोगिजंगम संग पुजाने म धरम ॥ ता
नसेन के प्रभू मोपर मोया किजे ॥ दिजे दरसन मोहे करम करन ॥ २ ॥

नमिभय

रागईमन् ॥ ५ ॥ ताति भय भंजने भवानि हे दयानि दया कर जम
पाउ अनंत मंगल पारा किराते सुखमनि स्वहे दिगानि पमनि मा भंजने
॥ ध्रु ॥ त्रिपुर त्रिसुल स्वप्न कर धरलिये ॥ असुर संहारने भगत उद्धार
नि ॥ १ ॥ कंकालिका लीने कामोक्षादेवि ॥ सरस्वति वागवादिनि पारा
वर नजानि मी ॥ २ ॥

रासि

रागईमन् ॥ चौ ॥ रासिसि मुरजमुखि अर्घदेनुभरे गलावजि शरीर करनासि
करजोरी थादिनो ॥ **क** ॥ चंपाविधि चंपाघाट केटक कवल भयी बेलिनारि
जा रहि जोहि सोतन मिलपियारि तुरी ॥ १ ॥ धूपहर हेशान मुन २ श्रीव
दकि दाव दिकि दरदमुनि भई हीसादासि ॥ ध्वरासाविलनतपतातु केसरी
अंगसमान क्यों लाल अकबर नारि तुहिवसकि नु ॥ २ ॥

रासि
माधो

रागईमन् ॥ च ॥ माधोजि चरणा चितलायि ॥ **क** ॥ संखचक्रगदाप
प्रविराजे मुरवमुहारे मनमोहै ॥ १ ॥ तुमनो है प्रभु गुणके सागर तुवद
पंकज पावारे ॥ २ ॥

सरा
आपन

राग ईमन् ॥ प्र ॥ सरन आवमन औसेगुरु केसरन ॥ **क** ॥ नामनिंजन
होइस भंजन विद्यानगर गुणज्ञान भावरे ॥ १ ॥ जोसुमरे डरव डरहोन है
कवहुन लागे तानि भावरे ॥ २ ॥ नानकदास आयसरन प्रभु के जिनकोरा

यो मानभावरे ॥ ३ ॥

सरा
गहर

रागईमन् ॥ व ॥ सावरक दैयामोरे लालहरि ॥ **क** ॥ सावरसुखमोह
न मुरत विसरनहि एकधरि ॥ १ ॥ विन्दारि बनकि मै कुंजगलिलमै
मुडनि अधरसधारे ॥ २ ॥ चंद्रसरि विहितवाल कलछवि वरनाकमलचित
धरि ॥ ३ ॥

जोक
दुरे

रागईमन् ॥ प्र ॥ जोकहुदेव कोसो हिसाचा ॥ **क** ॥ उचितगमन
निप अपनेनिपासा जीवनको भई हे तरासा ॥ अवतोकथिन मोरे छुतत
पासा ॥ १ ॥ बोलत जय परकास विनासा संकरमुभिरन होई जग आसा ॥
हीके बरन कमलचितपासा ॥ २ ॥

होगी
वि

रागईमन् ॥ ॥ हेगोविन्द परमनुवाला अबनारहो दोषियारे मुरमन्द
॥ **क** ॥ निसिदिन सुमरन सुमरहि मनुवा ॥ लाजिरो तोरे ध्याना ॥ १ ॥

रागईमन् ॥ प्र ॥ तुमसोकोनेकहायप्रभुजि ॥ धर् ॥ कंसराजकिमकु
 टवढायनोक २ करदारोप्रभू ॥ १ ॥ जोनरधावतचितदे उनकोपदम
 पदारथपाय ॥ २ ॥ चन्द्रसारिबिहितवालकृष्णद्वयि ॥ प्रेमपदारथपाय ॥ ३ ॥
 रागईमन् ॥ प्र ॥ नमोदेविनमोमाहामायाः सेवकजानियतुमकरो
 मोकोदया ॥ धर् ॥ मनूअनुपवनजलधरेसा ॥ बिकटवदनसिर
 सुरलितकेसा ॥ १ ॥ अवनजुगसवनदसनविकलाला ॥ सिवसंग
 रंगफरू लियकतार ॥ २ ॥ उवनतउरजुगहृदमाला ॥ अधरअधि
 क सोभेलिधकरधारा ॥ ३ ॥ रवडू अभयवर मुराडलिकरे ॥ रवर
 हसिहासि करेडखहरे ॥ ४ ॥ प्रेमपृथि आसनवसनदहनदिमा
 ॥ पुजावसिलेवेको चलिलोमाहानिसा ॥ ५ ॥ फेरुफकोरतिम
 ग्प दाकर दाकिनि ॥ सबहककाटि २ बाधिरोकि किनि ॥ ६ ॥ किरु

॥२१२॥
 प कहिवोदे वि तुमेरोभवानि ॥ करोअवधाने माताजयानन्दवानि ॥ ७ ॥
 रागईमन् ॥ चो ॥ सुरनरंगभरिकीअधियामैनबहिराखोलाल
 ॥ धर् ॥ अधरनअंजनतनमध्येचंदनजावनरागे हभार ॥ १ ॥ अतयनि
 चलातरतपनिपेचन आवतदगमगगावनचलनचाल ॥ नान
 सेनकेप्रभुरसवसभईनिकेआरेतिदखनभईनिहार ॥ २ ॥
 रागईमन् ॥ भु ॥ नगरमैमंगलभईजननकरिजे ॥ धर् ॥ धरनिक
 मध्ये कनकविधानेअनुपमसुंदरजाने ॥ पावनकैसेभक्तिवटाईदे
 सिभयोआनन्दजाने ॥ १ ॥

रागपुरियाश्मन् ॥ ४ ॥ पुनर्जनमविषयमनेकछवारंवारं ॥ ५ ॥ चर
नसलिनया ॥ तयमनेआव ॥ कलिसमभिन गतिभाव ॥ १ ॥ मो
हअंधकार ननोकपुल ध्वमन ॥ मुगतियाथासराममधन ॥ २ ॥ म
फकल रूपकेने विनतिनेन ॥ गोविंदगोपालडुरपफेने ॥ ३ ॥
केनेमनेजन्मशरी हीरे फेनकिवजुल ॥ ल्हाकलयाविनतिथुगलि
जि ॥ ४ ॥

राग पुरियाश्मन् ॥ ५ ॥ वसकियानिरमोसो काहे कान्हराधे
॥ ५ ॥ दामिनिहसन सन अधरनकि ॥ नयनन करहिविधा
य ॥ १ ॥ भूलिलि आलि दंग भवरनगर मे ॥ चीतमेरालियो
ह चोशय ॥ २ ॥ चंद्रसविहित वालकलधवि ॥ चितचंचल
जाहाजाय ॥ ३ ॥

रागगौरी

रागगौरी ॥ ५ ॥ नित्यनाथतेहारिमय आरतिकरि ॥ ५ ॥ मुरनर
मुनि गुरु नित्यविराजे ॥ दरसनदिजे मोकोउपापतिनाथ ॥ १ ॥ प्रथ
मगलकेपतिनादिभृदिसाथ ॥ भनगिरवान मुद्रविक्रमसाह ॥ २ ॥

रागगौरी ॥ ५ ॥ सिवसंकरतेहारिमय आरतिकरि ॥ ५ ॥
तेजकिभारी २ जोहेभारी ॥ भावतभनत लयभनय विचारि ॥ १ ॥ दया
लाक्ष्म पतिविचारि ॥ भूपकिदारी ॥ जयपरकासमल्लभनयविचा
रि ॥ २ ॥

रागगौरी ॥ ५ ॥ जयजय आरति नन्दनन्दनकि ॥ ५ ॥ गोचरतकपु
नदिपवनाय मुरतसोभितभावलगाई ॥ पितवसनवनमालविराजित
कमलनयन मुखवसिंजजाई ॥ १ ॥ स्पामसुंदरतनु चन्दनभूषित
मदन मुरति छवि कह्यनजाई ॥ गोपिगननायक गोप्रतिपालक

सुरमनिमोहितननमनधाई ॥२॥ कह्यभक्तजनआरनिगायपाय
मनोरथआनन्ददाई ॥३॥

रागगौरी ॥ व ॥ जयजयआरनिश्रीभीमसेतकि ॥ १ ॥ भिममा
हाबलिछत्रविराजे डोपदिसंगरवडे ॥ पंचपांडवदरसनदिजेभक्त
जनकिपालकरिये ॥ १ ॥ कह्यकविरजनमुनोभाईसाधुचरणाकी
आसतुमारि ॥ २ ॥ माहाभारथमो कौरवसंहारे ॥ ३ ॥ उपतिकीमनो
रथतारे ॥ ३ ॥

रागगौरी ॥ चौ ॥ चलोजायसुनिमुरलिधुन्दनकान्हवजावैनोरेनु
॥ १ ॥ मोरमकुटमाथेगिलकविराजेआसपासगोधेनु ॥ १ ॥

रागगौरी ॥ प्र ॥ हेमायिमोहननन्दकि सोरलि काहाचलोजा
तकि ॥ १ ॥ होवसकि रि स्पामरोजोगवारेया वस ॥ धोक राड ल
हलनचलननहिलतकि लीजे प्रानहत्पारि ॥ १ ॥

रागगौरी ॥ प्र ॥ जनमयासारथधाय मते रामयानामसोवधन
थवतउपाय ॥ चोनेमदुधोसंसार अधिरनथमंसिसे कावमन
रामयानामकाव ॥ १ ॥ कावमनरामयानामकाव रामहेलाकाय
॥ १ ॥ अचेतनमतेमन चेतनगियाव धन कालवयिब दुदोका
य ॥ मनुमनेमतेमनुदुखसुख मायादाय रिरीहिक बानाताथे
हाय ॥ २ ॥ धनअर्जनयायगुलितऊकराकायल्यावनदवनमचाव
॥ चोनेधनयितुयिसयेनिबजजननचिसेअनजनधननंदुचाव
॥ ३ ॥ शकह्ययाविनतिपालिकोसतिव वासकरुणा मिथानभति
स्वव ॥ श्रीरामचंद्रयामजननि याव धन परलोकधर्मसलोव ॥ ४ ॥

रागगौरी ॥ व ॥ अंबिकेदिगुराल्हायमफया ॥ १ ॥ ख्यालउन
हेगुलिया सिरसचन्द्रमातया मोलमातागलसकोवाया ॥ कोटि
सुरजया तेजजलप्रसह्यया भयंकररूपधर वया ॥ १ ॥ हेखल

मनिमानिकया मनुकसथसेनया न्हससकुंदलजुलविया मोतिया
 हालननिया नोसचोन वेतालया धुंयागभितनजसाचिया ॥२॥ हटदन
 न्हिहाया सवदनं न्याया वपिसेजुलयक्षवयलिया ॥ देवमुनि साधकया
 भगतिनया कल्याकृपादतवहजननिया ॥३॥ नगनसा ध्वजया द्वेमा
 याव दोन ह्या लोभनं धिपालिसमहेया ॥ मायामोहपापया अघा
 हासमुदया दोगागुल धिपालिपरेया ॥४॥
 राग गौरी ॥ व ॥ जैसा केाहीरतैसाहे नजाने हीरजुकेसाहे ॥
 ॥ नगाहोयकर जरा ठावै नापपवनसों फिरताहे ॥ उबिहाथ
 धरे सिरउपर अँ छ्यासाहेव दरताहे ॥ १ ॥ मुरनाहोयकर वानउका
 रि अँ छ्यासाहेव बहराहे ॥ चोतिकेपगरो पुरवाजैसाभी साहेव
 सुनताहे ॥ २ ॥ कपटक ध्यानधरे घटभितर अँ छ्यासाहेव मिलताहैं ॥

जैसा केाहीरतैसा

वावहोयकर मालाराखे भक्तिभावसो चलताहे ॥३॥ कहयकविरमुनो
 भाईसाधु भवसागरमोतरताहे ॥४॥

राग गौरी ॥ ॥ आरतिमानसिदिपकेदजत निचरणजुगारिके
 ध्यान ॥ ॥ कनकटफुल मनिवनिराजा पुरासकलमन घृतदृषभा
 जनु ॥ १ ॥ जलितसकलदृष बहुदिसदिपू ॥ मूलकटकदनबरनादि
 तमु ॥ २ ॥ दिसि २ पंचठि सतिनरुदिफ ॥ अनयसिंधविरकरपरादिपू ॥ ३ ॥

राग गौरी ॥ ॥ आरतियह जननिकेचठाउं सकसतिउतम रसगाउं
 ॥ ॥ कर्मसकलमाहादिषवनाउं ॥ इन्द्रियदसरस घृतभीजाउं ॥ १ ॥
 ईश्वरिरागामे मनकोमिलाउं ॥ भाषेसिंधविरननकोजलाउं ॥ २ ॥

राग गौरी ॥ व ॥ जय २ आरति गोविंदनामकि ॥ ॥ कामको
 धलोभ इमनित्यागो विषविकाला ॥ राधामाधव जगतकि थाकर

आरतिमानसि

आरतिजननि

जय २ आरति

ननमनभजनुम कन्हैयालासकि ॥ १ ॥ भवदुखहारननिर्मलभनन
 धीरजनरभारे ॥ वेदनजानेभेदनजाने जानेजसोदानन्दकि ॥ २ ॥
 रागगोरी ॥ व ॥ आरतिकरिगुरुगणपतिजिके ॥ ३ ॥ भाव
 करतुव दरसन दिजे ॥ चंदनधुपदिप नेविप्रचंदाया ॥ १ ॥ देखन
 नरदेहि करजमाया ॥ अपनेचरणकि लिनगुमाए ॥ २ ॥ अघेसिद्धि
 फल बलगुणादिजे ॥ अपनेरत्नदानदासकोदिजे ॥ ३ ॥

रागभैरव ॥ च ॥ आरतिश्रीजगन्नाथ मंगलकरि प्रसनेचरनारवि
 दू आपदाहरे ॥ १ ॥ कोटिदेवद्वारेधारे ब्रह्मावेदउतारि ॥ कनकसिंह
~~का~~ रत्नदिपमालजगमगाकरि ॥ १ ॥ इन्द्रदमनसिंहजगरोहिमावीर
 ॥ मार्कण्डेयस्वेतगंगा आनन्दाभारि ॥ २ ॥ घनन २ घंटावाजे वासुकि
 दि ॥ वाजेतोमृदंगतालनाचेकिन्नारि ॥ ३ ॥ कंचनमनदिपदानजगमगा
 करि ॥ नवनिनिअस्तु सुत्रवातिकजरि ॥ ४ ॥ मुरनरद्वारेधारे ब्रह्मावे
 दउचारी ॥ धंस २ रा द्रव मुर आजुकिधारि ॥ ५ ॥
 रागभैरव ॥ व ॥ आरतिश्रीभैरवकी मंगलाकरि ॥ प्रातकालभैरवकी
 आरतिकारि ॥ १ ॥ धुपदिपनेविप्रफल फलकि ॥ वेदपाठध्यानपुजा
 निरञ्जनकि ॥ १ ॥ धाकधोलकमृदंगवाजे सैखधुनिकि ॥ रागताल
 नृत्यगित आदिनाथकि ॥ २ ॥ निरञ्जन निराकार निबृथवकि ॥ स
 तजन द्वारेधारे करजोरिकी ॥ ३ ॥

श्रीनिम्नगाथ

रागभैरव ॥ प्र ॥ श्रीनिम्ननाथमहेश्वरदेवा विकसितराजमान रंगभू
मिसेवा ॥ कं ॥ नालमृदंगध्वनि रससेविराजे ॥ सिरभूषनविन्दुसा
भितसाजे ॥ १ ॥ भुजंगफनिमनिभूषनदाजे ॥ भनरगावहादुरकवि
कुलराजे ॥ २ ॥

चरणगाथा

रागभैरव ॥ त्रि ॥ चरगायासेवायाय श्रीभैरवयागरायादधूस
भैरवनाथ जोगिनिगराया ॥ कं ॥ भुक्तिमुक्तिपदवि यनिम्नगिद
वाज्या ॥ जपतपध्यानयावनिर्जनदेवया ॥ १ ॥ दुषदीप्रहरनया
क नामकामब्रह्मयानिवा ॥ जितपालिकोसजोपचर देवया ॥ २ ॥ अ
नाथज ॥ नन भजलपाप्रथमगननाथया ॥ सेवकया गतिमनि
जोगिलिङ्गदेवया ॥ ३ ॥

भावभाक्ति

रागभैरव ॥ त्रि ॥ आवभक्तियायजिन निलकराठनामयानिल
यादधूसगोरिनाथनन्दिभिन्दिया ॥ कं ॥ मेस्तमालसोभमान

भुतसंगगोहया ॥ सिरयाजटासचन्द्रमान भिन अनिवसया ॥ १ ॥
वुद्धितानध्यानहिनसोवजिअनाथया ॥ जन्मरयाजिआसनिगुलि
धिपालिया ॥ २ ॥

सुंदरसंगम

रागभैरव ॥ भु ॥ सुंदरस्याममनोरु काहानुमआई ॥ कं ॥ युह्यतो
राअगमपंथ भोजनहितुमआई ॥ कौनेनेरिमाईवाषकौनेपठाई ॥
१ ॥ तुमसुंदरदेविहृदयजोदायि ॥ भागो २ भाई मेरेफेरि डवारजा
ई ॥ २ ॥ भागोतहिजावो रे सुंदरजिसोदालाल ॥ कालिनागसिरनाडे
फररेनआई ॥ ३ ॥ जागो २ कालिनागकालपुरुषआई ॥ जलल
पलेलफुल सहस्रभारिचाहि ॥ ४ ॥ कौनेअपराधमेरिकालजोग
आई ॥ सहस्रफनिगुफ समुहवापमाई ॥ ५ ॥

सुंदर

समभैरव ॥ कं ॥ समुह २ गुरुड मित्र समुह सुंदरआई ॥ यक
सारिगरुड मित्रकालिनागआई ॥ कं ॥ हितचित्त यकमनभाशिथिजो

दाई ॥ कृष्णमन आनन्द भई गोपाल गित गाई ॥ ६ ॥

रुद्रकमल

राग भैरव ॥ भु ॥ दह कमल को दो बाल यस्वामि हमारे जगिय
॥ धर ॥ कित हुं बाल यवाट भुले कित हुं गुगति वनाईये ॥ कित हुं बाल
य काल कुरे काल काहे जगायिये ॥ १ ॥ नहमना गिनि वात भुले
नहम गुगति वनायीये ॥ २ ॥ नागकासिर गुंत घेरे कंसकासिर
हानिये ॥ २ ॥ देखिय बल गहने रोयतन गर्भन किजिये ॥ अपने
स्वामि जगावने काहे लाजमानिये ॥ ३ ॥ हाथ बरि पाव मोरि नागिनि
कर हुं विन गिय ॥ उठ हुं देव नर न जोधा द्वार बाल य आईये ॥ ४ ॥
विन लागी डहु जोधा हस्ती हाथ छुआईये ॥ सुर अमला अकला
कुस कृष्ण कालि नाग नायिये ॥ ५ ॥

गोपाल

राग भैरव ॥ मु ॥ गनपति गननाथ तुम प्रानपति हमारे ॥ सि
द्धिसरणा हस्ति वदन कंठ ललित हारे ॥ धर ॥ फटि करु विवि साव

विलसत करज पमाला ॥ सकल विध न डरित जात हरत जग सुधारे
॥ १ ॥ कमल नयना रुचि वीसाल कवल देख दहासे ॥ सतत नमन
जय प्रकास भूपति लकसार ॥ २ ॥

सुकर

राग भैरव ॥ त्रि ॥ संकरं भज गिरिसं संभू चन्द्र सेखरी ॥ धर ॥
दिन के दयाल भाल भवे भस्म भूषन ॥ ब्याल हाल सो भेमान पाप
भार डुखन ॥ १ ॥ प्रनति भूप जय प्रकास देव विनु नायक ॥ भक्ति
भाव गुक्ति चेन अन्न मोक्ष दायक ॥ २ ॥

असि

राग भैरव ॥ ५ ॥ अैसे संभू नाथ को पाव परि जायिये ॥ धर ॥
उ परसे वनागल ललित सो हायिये ॥ गोरि अर्ध ग अंग सि सहुन चा
हिये ॥ १ ॥ जोगिनि जमान साथ रूप निचायिये ॥ देवता गंधर्व
लोक ताल हुं वजायिये ॥ २ ॥ हाथ मै त्रिभुल साथ वसा हा विराजि
ये ॥ राजा २ जय प्रकास भैरव पद गायिये ॥ ३ ॥

पुष्पनि

आपहिनेन

तुमदेवे

राग भैरव ॥ १ ॥ पसुपति संभु भवसागरतारे तुमहि संसारे ॥ १ ॥
 ईद्र कलानं गंगासिंधारं ॥ अंजंग वर्यं नन्दिवाहनवृक्षधार उरहारं
 ॥ १ ॥ सैलसुताजिन प्राणावियारे ॥ विभुतिधवलै रूपतिको तुमदे होवर
 आरि ॥ २ ॥

राग भैरव ॥ १ ॥ आपहिरेलखेलाय सतगुरु आपधरमधारी
 ॥ १ ॥ तुम तो असमान समाना जिमि दोले चावनि ॥ चंद्रसूर्य दोनो
 मसल बनाया ॥ ऐसे कदर धवनि ॥ १ ॥ रामनाम का चौपद मागे
 बिजे सोहन रूपामा ॥ कह्य कविर सुनो भाई साधु हम जिन तुमहा
 रा ॥ २ ॥

राग भैरव ॥ ५ ॥ तुम देवि जय २ असुरनासिनि भव भय दुर्गनि
 तारिनि ॥ दिव्यस्वरूपिनि गुणाप्रकाशिनि जगतजनसब मोहिनि
 ॥ १ ॥ सिद्धिनि व्याधिनि दाहिनि बाहिनि षड् षण्णधारिनि ॥
 परबतवासिनि सिंह बाहिनि रक्तवदन त्रिलोचनि ॥ २ ॥ कनक

देवि जय

मनिमय मकट सुंदर अवगा कंदल भूषिनि ॥ अनंत जय परकास
 भूपति जगतजन प्रतिपालिनि ॥ ३ ॥

राग भैरव ॥ ५ ॥ देवि जय जय चरण सरसा दि ॥ जिपनि खडने
 दयादसे ॥ १ ॥ नितमनिसम जुलल या उन धलल पु अयंकर
 छालो ॥ चंद्रवाकटि कवन जोवन सिरसवान तयमालो ॥ १ ॥
 प्रेत आसन अंग सुरगन गोख स माहिमा अपार पारे ॥ चंद्रमं
 ड या मुण्ड लेन भल यायल सिक उवालो ॥ २ ॥ खड्ग खपारला
 सम तोलतु दैत्य स्पायतु विचालो ॥ भेस हेसन दैगुलि वसत
 न नित्य क धाधब उवालो ॥ ३ ॥ मुण्डमाल नगर सहावन नया
 हाल नहलो ॥ बालक कुराडल अतिन सुंदर थाथेन मंगल
 धालो ॥ ४ ॥ लहाल जग जय मत्त नृपति थवुल भुवन संसारो
 ॥ गोधूया चरण स भाव भगतिन भव जल निधि पालो ॥ ५ ॥

रागभैरव ॥ शु ॥ जय चरीडके जगदम्बिके सुर सेवित नगनंदि
 नि ॥ क ॥ मकरमानिक यचितसोभित विजुलिजोगि प्रकासिनि
 ॥ श्रवणकंदल विविधअंवर सिंहके असुवारिनि ॥ १ ॥ जघनकिं
 किनि सवदीर्घिनि सुनिर्देयप्रकंषिनि ॥ हसितभूतकर्बध
 र्जक मुदितनाचतजोगिनि ॥ २ ॥ असुरमारत मांस पर्वत साह
 संकरि मेदिनि ॥ अगमसौनिन जलधिपूरित तरंगहस्ति प्रदादि
 नि ॥ ३ ॥ जुवनवीदित सुमनचिंतित चरणा पंकज पावनि ॥
 कहतसेवक साराआये राखिये हर गेहिनि ॥ ४ ॥

राग भैरव ॥ शु ॥ जय भैरव जगदिश्वर भक्तजनसंकयार
 न प्रातसुमरन पापनासन विस्वभयसव भजन ॥ क ॥ भिम
 गतसव तालदेत नित्यकरन मनोहर साकि संगम मुक्तिधारन

निर्विकाल निरंजन ॥ १ ॥ वदनधारक चर्मधारक कोरि मुख्य समजो
 ल ॥ देव २ अस्तुतिकरन प्रेतरासंग नायक ॥ २ ॥ अंगपरतन सर्पशू
 यन व्याघ्रचर्म परिवासक ॥ गिर्वाराजुड विक्रम साहको बाँधिन
 फलवलदायक ॥ ३ ॥

रागभैरव ॥ शु ॥ संसारननामकायू शिव २ धायू ॥ क ॥ जतान
 सपोलप्यायू मरुकरन पूयू ॥ सिरसचंद्रमातयू धतुरि नंदुयू ॥ १ ॥
 जोगिनियाभेसनैजुयू ॥ देगुलिनंन्येयू ॥ सुंदरसुरजितयू विश्रुति
 नैवयू ॥ २ ॥ धुसागसेविप्यायू भुतगननैलियू ॥ गजिरेस नोनेगायू
 मसानसदियू ॥ ३ ॥ नंदिदिपासाजायू पंचतालथायू ॥ रसन
 प्यावनहुयू गवारि खवसतयू ॥ ४ ॥ नागपाक राडलसूयू तिसा
 वामुकिनायू ॥ त्रिभुलदरुथायू दिमि २ दिन्यायू ॥ ५ ॥ असुरगन
 स्यायू देवशायायू ॥ भगतनैवयाचोने ॥ हेतु २ वायू ॥ ६ ॥ महिमा

रामेश्वर

रामेश्वर

रामेश्वर

सुं आनिदयुल्लायमुनानं फल्लाकलुनंदुरवसिह्य सुववनलायु ॥६॥
 रागभैरव ॥ भु ॥ नमोशिवहरनाथ जगतप्रनमामहे ॥ धर्क ॥ नि
 त्यकेईससिसचंद्रमा सोहतहैरंगसर्वे सवनि आनन्दकाजहै ॥१॥
 भुतवेताल तालधरतगनजवहे आफु भरेहनि नृपतिगावतहै ॥२॥
 रागभैरव ॥ भु ॥ नमोशिवपारब्रह्मनिलकंठविराजे ॥ धर्क ॥ ना
 गादिचर्मअम्बरं नमोपिनाकपानिकपालमालाजापितं असंखेजोग
 ध्यान ॥१॥ भुवनं भुजंगईसविषल आहारकामक्रोधदग्धभ्रंजन
 विषांचकाल ॥२॥ जयतु २ महेश्वर हेमसैलवासिनाम सुमरनुदय
 हरन कालकरासि ॥३॥ हैसेसभुभोलानाथ किदासजग २
 किजिये कहतसेवकयाहिभरोसा प्रनमेशुलपानि ॥४॥
 रागभैरव ॥ भु ॥ देविजननिअसुरनासिनि भुवनलोक उद्धारनि ॥
 ॥ धर्क ॥ सिंहवाहिनिगिरिधारिनि मोतिमनिमय भूषिनि ॥ सुख

विष्णुराज

दायनि पाप हा रि अगनकेप्रतिपालिनि ॥१॥ नग नन्दिनि
 ज्ञानसाप्तिनि तेजप्रवण मोहिनि ॥ भोगभोगीत्रिजोगजोगिनि
 भावसंगविलासिनि ॥२॥ नागनागिनिरूपकामिनि मकुटमनि
 मयसोभिनि ॥ अभयदायिनि त्रिभुवनरानि जगतजनप्रतिपालिनि
 ॥३॥ भावभाविननुभारिसेवक चरणपंकजपायनि ॥ त्रिभुवनहाथनि
 वषट्कारनि दमरुवाजतदिनि ॥४॥
 राग भैरव ॥ वी ॥ विष्णुराज नृदिभजे महेशनन्दन ॥ रिदिसिद्धि
 दामदक्ष दिव्यलासकिधर ॥ धर्क ॥ बृहेतोभानुभानमेक नेत्रमेक
 दन्तीन ॥ खर्वसर्व वेदगुह मंत्रजंत्ररूपिनि ॥१॥ नागहारनाग
 चन्द्र नागराजमालिन ॥ नागवधे नागसंगनागवैद्वि वंजन ॥२॥
 मोदकारेभुजपासुंदरिधरान ॥ चारिपुष्पकेसपासवालचंद्र

सोभिनं ॥३॥ भूमिनाथवासिनोस्ति तुंदारहारनं ॥ आद्यकेतुगितुकु
कंतिपुरिसारनं ॥४॥

रागभैरव ॥ भु ॥ वनेजिअनवनमनसतनमनभजलपे श्रीभगवा
न ॥ र्क ॥ गुंचोसदेवलोकविज्याकअतिरसदेवयासा भादयकाव ॥
कहनं पेलजुसेपेगुलिदिगसोसेविज्याकरसनं दनाव ॥१॥ संसारया
वलआसा सेगुचोनामकासे स्वर्गशुवनयनाव ॥ मडुजिगतिस्व
से करुणादयादसे स्वहुनेअनाथसियाव ॥२॥ महिनागुनिहाया
पहरनसवास अनेगवाजनथाना ॥ देवलउतउसे तुतलयोनाजुसे
रसनंनेकलिपुयाव ॥३॥ मडुजिमेवयाआसा छिछलभरसानंअ
नेगदोनधेमा याव ॥ पहरकविसिसे पुंनेयालपलिसे यनजि
छिदासयानाव ॥४॥

रागभैरव ॥ भु ॥ मननंमलुवज्ञाननंमवन वलभवावाप्यानाम ॥ न
सनिन्देलंचाधि प्रायानंतोकपुष्ट जिनबुभनेरघुनाथ ॥१॥ गुनसं
सारस विदेकयाकअसमुमलपे श्रीरघुनाथ ॥ र्क ॥ मोहिनिबुम
नाव सरमतोलनाव चोनिबपापसडुविनाव ॥ दालवअनारिखा
मसलिमलाक ज्याथजुयाविधुयाव ॥२॥ अधिरथसरिरज्या
जिधिरनासे ॥ भालपेथः मसयाव ॥ लानलेमभालपाद्यानान
लिमलाक स्वर्गजिकरुणामिधानं ॥३॥

रागभैरव ॥ भु ॥ देवमहेश्वरसंगलकालि ॥ र्क ॥ जय२संकीर्तव
रसचारी चंद्रकहासिर अष्टचंद्रनारि ॥१॥ भूपजयपकासवि
चारि नागविभूषणा भवभयहारि ॥२॥

रागभैरव ॥ वी ॥ अवमैक्यास्वयेजागोमनमै हरीसुप्रनकिवेता ॥ र्क ॥

वनेजिअन

मननं मलुव

देवमहेश्वर

अवमैक्यास्वये

औसैऔसरभूलिजा गा बडतवायगा ॥ हेराचेत २६२ नाम सुनो सत
गुरुहोगा तेरा ॥ १ ॥ सिरपरनेरा कालवडा दे ॥ यिस्काकरो हुनवेला ॥
रंगभुमिसव विसरतजा गा जंगलहोगा हेरा ॥ २ ॥ अंगरनेरा पाच
वजहे अवतो चेतनवेगा ॥ कह्यकविरसुनो भारसाधु यहिघर
नेरानमेरा ॥ ३ ॥

राग भैरव ॥ भु ॥ जय २ भैरव सरनधि चरणा याहुने गरिब उधार
रे ॥ के ॥ नजिन जपतपनजिन ध्यानयाय मफूत भुगुलिजन मसरे
॥ नजिन मेव्या आसा नधन संपति जुलथो लीथे २ डबरे ॥ ५ ॥ दयि
ब्रधकजिन अनेगर कमस स्वयावे हितु हितकावरे ॥ २ ॥ दुर्मति फु
टकाव सुमति विडुन्ये अपराधदको क्षमायावरे ॥ सेवक भिप्रयात
सोडने कहुगान याव जि गुग २ दासरे ॥ ३ ॥

जय भैरव

राग भैरव आति ॥ ब ॥ आरति श्रीसचिदानंदधीरजकी ॥ वेदवि
मलजस गावयमेरे प्रभुगिकि ॥ के ॥ पहिले आरति प्रभू आये
आदिपरम धामकी ॥ आत्मा अभयसेने सुख सहज विआमकी
॥ १ ॥ दोसी आरति प्रभू रूपतन्व प्रकासवा नि ॥ बोले वैराग विवेक
ज्ञान जोगजुम्हि त्रुजानिकि ॥ २ ॥ तेसरि आरति प्रभू काया कम
लविचवासि ॥ खेलो पिन्दावन लिलापरपुर्णा अविनासकि ॥ ३ ॥
कहन ससिधर सुनोसाधु नाम लिलाजागी ॥ खेलो मतमगन आत्मा
पिरति सहज लागिकि ॥ ४ ॥

राग भैरव ॥ प्र ॥ गौरिनन्दन लोकपद न नोमिसतत पदगुग ॥ के ॥
गजवदनय करदन्ति क्षरा कपल हल त्रय लोचनी ॥ मकुटमनिमय
द्विअनुपम भालसासेअति सोभनी ॥ १ ॥ अजंगपतिकर चरणाभू
षणा नागजक्षपवितक ॥ पिठपटकटि कौचिमणिमय धृदुहाति

आरति श्रीसचि

गौरिनन्दन

सोभन ॥ २ ॥ आयिलसुखनिचरागवंदितसकलवंदित विनासन ॥
 भक्तजनभव अयविनासन अभिमतफलदायक ॥ ३ ॥ गोरखराजरा
 जेप्रपिकम साहकिजयकारण ॥ भनतसिंहविभुभुतिगित
 मानसिपुन ॥ ४ ॥
 रगभैरव ॥ ५ ॥ नमोनमोदेविअधामुरति सिवसंकरभैरवनाथ
 मेहेस ॥ चंद्रकलानंसिरसोभामान परकासआतिन ॥ ६ ॥ वधि
 जनपोल वधिससपोल ॥ प्रयानमगक निर्महागंगा सुंदर ह्यभिनी
 ॥ १ ॥ वधिसह्याउंउन वधिफरुकिरउन ॥ सुजचंद्रनहससकंदल
 उतिभिनिभेस ॥ २ ॥ गदोमुगडमांलहृदयसहाली ॥ विज्याकरसन
 जाज्वलमान रूपगौरिमेहेस ॥ ३ ॥ जयपरकासनभगतसिसेन
 दयानंस्वसेन मंगलपुरा विवभैरवभेस ॥ ४ ॥
 रगभैरव ॥ ५ ॥ कोटिप्रनाममेरि श्रीगुरुचरणसरोज ॥

कै ॥ चोधभुवनमेव्यापकतुमहो नानारूपधरन ॥ रविससिनारणन
 सबतुमहो तुमहोपंचभूत ॥ १ ॥ तुमहोब्रह्माविष्णु सदाशिव निर्गुन
 सगणस्वरूप ॥ तुवपदब्रह्मपरमानंदे निराकारस्वरूप ॥ २ ॥ तुव
 परमात्माजगजिवात्मा बैठकमलकिधामा ॥ गात्रयसेवकमेरिह
 दयप्रो सदाहेतेरिनामा ॥ ३ ॥
 रागभैरव ॥ ४ ॥ धीरधरियक चित्तसेगुनकोसुकिजगहितकी
 ॥ कै ॥ तपनगुनसावर्णिमनुवर द्वांभां सुतपहिचानिये ॥ अठम
 मनुजाको कहतअव रव्यात त्रिभुवनजानिये ॥ १ ॥ ईनकीजन्म
 सुकर्मसकल ममवचनक्रम जानिये ॥ त्यक्तअद्वैत युक्तसमासु
 निधार सपनिये ॥ २ ॥ योगमायाकिवरप्रसादसे पायजोमनुराज
 कि ॥ सोरविजसावर्णिमनुवर पायपुराणाभाकि ॥ ३ ॥ कहतसिंह

विरमनुजसदिव्यमणि वसुमालकि ॥ हितकरुयह कंशभूषन
हरतभूभयजालकि ॥ ४ ॥

रागभैरव ॥ प्रातसमयस्त्रविजगाव कोसल्यामहतारि ॥ उन्था
होलाल वरभौरभयोहे मुनिजन मनहितकारि ॥ ५ ॥ नागानंद
किसोर मनोहर मंदमंदसोरआय ॥ निमुदिन नाम नामजोगाय
जन्मकिदोसउतार ॥ ६ ॥ तुलसिदासद्वारधारे दरसनदिजेअधि
कारि ॥ उन्था होलालतुम दरदरसनीजेजन्मजन्ममुषपाये ॥ ७ ॥
आरतिसाजेईआय विमल गुनगाये ॥ तुमारिपितम हमारेधोना
कवने जसगुन गायिये माई ॥ ८ ॥ तुमारेवचन सुनोरघनन्दन नेना
पलषउधारे ॥ वृष्णवेदपदेयहिद्वजे उक्तिभयनरन्यारि ॥ ९ ॥ भैरवा
आनलिय लकेमन लियेकंचनथाले ॥ भरतसनुघन चरदोलाय
जनकमुनालियेफारि ॥ १० ॥

रागभैरव ॥ आ ॥ प्रथमनामसुमरुलेन श्रीगणेशदेवा ॥ १ ॥ य
कदन्तदयावंत चतुर्भुजनेरा ॥ वामेहातपकवानलेत भुफलदेन
मेरा ॥ २ ॥ विस्वनाथविस्वकर्मविस्वरूपनेरा ॥ विघनसर्व को
नासकारिसिद्धिवरनेरा ॥ ३ ॥

प्रातसमयस्त्रवि

२५

पृथ्वी

१६

पंचालिभैरव

रागपहरिया ॥ प्र ॥ पंचालिभैरव संगनविज्याकरसनकुमारिसु
 दारिनेनावमनति भावनंकांगिपुरनगरि ॥ नलेजूईधरिपसुपति
 गुज्येश्वरि ॥ ध्रु ॥ च्यागुलिपिठ्यानिगुलिनदियादधुसअतिभि
 न्दवान ॥ गुवाहालसंगुचंगु आदिनारायणा देवनंउसेचोन
 पेम्पेशुमिधान ॥ १ ॥ योगयासाधनकुलयार्धरमदानजनगुलि
 याक ॥ देवयाभजनसहेव प्यावनसवसलपु गुनिधक कवि
 नैध्वल्लहाक ॥ २ ॥

स्ववप्राप्ति

रागपहरिया ॥ त्रि ॥ स्ववपासागधिनमिजन ॥ ध्रु ॥ वनस
 वासुरीपुमे विज्याकरसनी ॥ वोयाधे जिपिवावना मलाकवल
 न ॥ १ ॥ जमुनायागिरम जसोदायाकायन ॥ जयावजिमिस
 मनजोसेवनयन ॥ २ ॥ कदमसिमायाकोस किचकावचोन

॥ सरसलवोनायगा मिमायाभावन ॥ ३ ॥ कुकटकान्ह
 जुया कसतिवचन ॥ केनकलकेसेतल अनेकल्पन ॥ ४ ॥
 पिरतियापामानं चिनायजियगा ॥ लसिकलजनलाना रस
 याभावन ॥ ५ ॥ देसधलकिमधुक वसलुमना ॥ ६ ॥ मन
 नमफया लुमनेव मिजन ॥ ६ ॥ नागनसाध्वजया विनतिने
 डने ॥ मनोरथपुरेयाव गोपालप्रभु ॥ ७ ॥

राग गाली ॥ च ॥ जै २ भोलानाथसिवनि ॥ धर्क ॥ गंगागौरि रंग
चटावय ॥ भिजन अफने मारथे ॥ १ ॥ सिवजिवोने अर्गववं दुने कोपि
निके गाथ ॥ २ ॥ पचका भुलत पकर मगाउ ॥ भागय घोटी काथ ॥ ३ ॥
होरे बेलत धुप्रमचिहै ॥ गिरिवर नन्दिनि साथ ॥ ४ ॥

राग गाली ॥ सुमेरो आदि भवानि देवि ॥ सिंघनधि देवि गरजन
आवय ॥ बोलत अमृतवानि ॥ १ ॥ देविके द्वारे हरि हए पार ॥ जाल
ध्वजा फहेरानि ॥ २ ॥ जो सुमरो दुख पाप हरु नहे ॥ कायानिर्मल वा
नि ॥ ३ ॥ ध्यान भक्त के तेरे जसो गाव ॥ परसन दे हो भवानि ॥ ४ ॥
कृपा करो गारिवन को भैरोना ॥ धर्क ॥ भैरो भैरवी सहित विराजित
अवर जो गिनि साथ ॥ वावन कोटि भुतगरा साथ ॥ बटे नाग किछावा
॥ त्रिभुवन नाथ कि गिरिजानि ॥ जिन कि माना मुंराड ॥ जिन के हाथ
पिनाक धनु मारो असुर त्रिपु ॥ का जोर सेवक विनतिकारु है

देतुम हारिवर ॥

राग गाली ॥ कृपा करो गारिवन को भोलानाथ ॥ धर्क ॥ तोहरी
रिंगन गत की नाथ ॥ लिंग की उपजत सब ॥ १ ॥ लिंगत १ पंचलिंग
रनरा ॥ सब को हिपजे ॥ २ ॥ तोहरी लिंगे जोति सलिंगे ॥ सब को ही लिंगे
॥ ३ ॥ दक्ष की ज राविना सिन लिंग ॥ माने उरु कि नास ॥ ४ ॥ लिंगत
लिंग स्वयं भू लिंग ॥ लति पति कियो तुम नास ॥ ५ ॥ तोहरी लिंग
तुर्षा लिंग ॥ बोलत दुख सब नास ॥ ६ ॥

नार

रगाहिंदोल ॥ प्र ॥ नादरहसमनुवा हाभजो विलंबनकरो रे ॥
 नावतहै परवेवा ननाहि ॥ कैसेविधिआहापार ॥ उतरना ॥ १ ॥ यहि
 संसार कांधकिवारी ॥ समुह २ पगधरना ॥ २ ॥ यहिसंसारअगनिज
 लाई ॥ धनजनविरहिनिमरना ॥ ३ ॥ मुरदासकेप्रभू तुमारेदरसको
 हरिकेचरणानितधरना ॥ ४ ॥

गोचरगति

रगा हिंदोल ॥ प्र ॥ गोचलसुनियहमारोक नैया ॥ १ ॥ पद
 मदयानिधि संकलनारनि तारनदेव उरान ॥ मुनिजनकरोनुवधा
 न ॥ १ ॥ अनुचितसव्यमोहि प्रानसमयल जानियभेद निदान ॥ वृष
 यमगन परध्यान ॥ २ ॥ मोहिगत भय मनिनुपपदनेजि यभेदनिदा
 न ॥ गोविंदमननुध्यान ॥ ३ ॥ कविकेमनोरथपरियहतिम
 भयजगअपने सुजान ॥ राखियप्रभूमोरामान ॥ ४ ॥

सुरधि

रगाहिंदोल ॥ प्र ॥ सुरधधिरधरि सुनहिन ॥ पंछिपसुव्यातिरिक्त
 जो ज्ञान जाननमानुषरित ॥ १ ॥ तवजननियह ममतावदु किमो
 हगहन कि कुप ॥ मानुषलोककुतापरदात तवज्ञानसुभलुप
 ॥ १ ॥ यहभवकिस्तीती कालिहरिकि मायाकिहेप्रभाव ॥ विस्मय
 नकरु यहविषयेमे मोहकियाहिस्यभाव ॥ २ ॥ जक्रपतिहरिकि
 योगमाया सोमाहंमायाजादू ॥ हरिपिमोहकीरजिनमायानेजग
 दापिमोह किजादू ॥ ३ ॥ अनतसिंहवि सुभदसुगिन गायनकि
 रसधान ॥ अक्रजनमनकितमनासतदेतसुधारसयान ॥ ४ ॥

अपनेसुनिय

रगा हिंदोल ॥ प्र ॥ अपनेसुनिये चितलगाई ॥ विषयमेजग
 नाचनचाई ॥ १ ॥ केवलमानुष प्रायनजानन विषयज्ञान

प्रमारा ॥ पंडिपसुमृगसवमुजानत विषयकिसबज्ञान ॥१॥
 जानतजोपसुपंडिमृगादय ~~सु~~ ज्ञानअपरनिदान ॥ सोसव
 जानत मानुससकल सर्वअपरकिज्ञान ॥२॥ जानतजोनर
 लोकविषयकि सोपसुपंडिहिज्ञान ॥ भोजननिद्राभयमैथुनमै
 तुल्यनरपसुज्ञान ॥३॥ विषयज्ञानमै मोहविरोधन सुनिय
 चित्तलगाई ॥ भावतसिंहविआतिसुंदरभक्त ~~सु~~ मनसुखदाई ॥४॥

राग प्रथम मंजोर ॥ प्र ॥ गर्वउलाकिथुनि सैवानांकरवेलाता ॥ चर ॥
 मित्रधामज्याजे निला कुंजोस्ववे ~~द्वय~~ तोयवा गर्व आवुकीरिछ्या
 वानी ॥१॥ उकीरिउके सयनी प्येवाछो तापमेला आपलादामा सुसुवा
 नी ॥२॥ व्यावासिकीकप तोयनी धिपाथज्या ~~हो~~ ताताकापेबाध्य
 रिउनी ॥३॥ गर्व यिस्यापसे वाथे वासेवास ~~मे~~ नो कुंजोसुखजा
 मलिधाम ज्ञांकि पुकेवानी ॥४॥

राग प्रथम मंजोर ॥ प्र ॥ हेहरी तयमजिपराण ॥ चर ॥ गोकु
 लस वंसउसे विज्याकसदानी सुंदरजगतपवान ॥१॥ सिरसमनुक
 सोभा ह्यसंघायापानी गलसवनमाला स्वान ॥२॥ भुवनसमडुवाति
 पुरुषपराण अपरुवरूपसमान ॥३॥ लहाकह्यपामनउरे पायिव
 सुनानी सुंद ते कृष्णजुविनान ॥४॥

पिनिवदोरे

रागप्रथममंजीरे ॥ ७ ॥ पिनिवदोरे जंजालस्पामकर ॥ ८ ॥ पिनि
 तिककारणा मोईवापनेजिलो जगतसंसार ॥ ९ ॥ सितलकडंतले
 पलंगविछारिदेवो ॥ नवलजुवाति वधाल ॥ १० ॥ सुनकिवर्तभीर
 लावः सुपारि देवो ॥ रूपकेवर्तभीरपान ॥ ११ ॥ मीराकेप्रभुछुमारी
 दरसको ॥ तुमविनभवकैसेपाल ॥ १२ ॥

किनहीक

रागकेदारा ॥ १ ॥ कीनिहिकयोरजगतजनु अनुचिन चिनजगण
 भवानि ॥ सेसवविमिरीहिलिखिकरुणामय अनुगतराखोभवानि
 ॥ २ ॥ पतिनासिरोमनि गुरुजनवंवक हमकपतिअभिमानि ॥
 तुवपदभाव भगतिनहिराखर केवलभयआगेजानि ॥ ३ ॥ त्रिभुव
 नविधित पापजनसंभव सबहमेकयलसयानि ॥ पतिनउधारनि
 पप्रवाहनतुव सफलकयलसयानि ॥ ४ ॥ दिनपतिवरुणा विरंचि
 सदासिव सुरपतिसांग पारिणि ॥ सकलदेवगण मनहुनमानणके
 दडबोल तजमवानि ॥ ५ ॥ प्रल्लप्रताप विनतिकरकरजोरीतोहे
 त्रिभुवनपतिगानि ॥ जनअपराधक हेलहमसुधीरदुरकरनिज सुन
 जानि ॥ ६ ॥

रागकेसरी ॥ शु ॥

गुप्तेकालि

गुप्तेकालि मुनिये मेरे दरदकि ॥ हाथ पंजामे दरबनहि हय कैसेक
 रो मेरे दरदकि ॥ १ ॥ तिन भुवनकि नाथ जो हेमाता अनाथको
 जानवरदिजे ॥ दुखनामकर मुख परदे हो माहा अभयवरदिजे
 ॥ १ ॥ तिन सुंदरी ज नू मोहिनि भक्तिको प्रतिपालनि ॥ जक
 जननि दासीरिजिय अपने चरण मेरा धिय ॥ २ ॥ देविपतिनो
 हे दुस्त नासिनि सेवक बिनति थारिकरे ॥ अपने दयाकरो
 मेको देखिय रत्न प्रसमानि दिजे ॥ ३ ॥

शिवरअवतार

रागजयजमंगि ॥ वी ॥ शिव अवतार हरकालन ॥ १ ॥ तिममाहा
 विरडधिया डरवहरांग ॥ किंचकल फल जुसे गुपनन ॥ १ ॥ रन
 सन्देह यथास अनियक मन ॥ जरासंदनि फल जो नावन मन ॥
 २ ॥ लाले न्है खलु मनावलिन दुसासन ॥ लाना हो आनि पुनि पिका
 ल प्राधन ॥ ३ ॥ दुर्जे धन आदि स्मात थववलन ॥ वयारिपनि सहिला
 न भुमिसथन ॥ ४ ॥ खनावरसन जुल जोगिनियागन ॥ नयावलि
 तल अन भूतवेताल ॥ ५ ॥ गुलिन गुणवधान पायलहाकलन ॥
 तोलतयके मतरे निपादि चरण ॥ ६ ॥
 राग जयजमंगि ॥ वी ॥ रुकते रुको के थारे नन्दाने जनककि ॥
 १ ॥ दोने २ सखिसव फलन किमाला हाथ लगि रहि धिक जे से पुन
 बिजनककि ॥ १ ॥ कोकहे पिनासो वानको कीलकी सोर घाट

रुकेरुके

द्वोरिदेप्रतिजामाननोरंगिधनुककि ॥ २ ॥ कहनतुलसिदामनोरंगिधनु
कतान ॥ वांसकीधनुजैसैनोरंगिपलछकी ॥ ३ ॥

रागजयजमंति ॥ वं ॥ दिनावन्धु दिनानाथ पाहितेकहामोहेतु
॥ र्क ॥ जादिनतुमगिधानारोलकापतिरिउमारे ॥ तादिनतुमदेव
नकी बंदितेछोडायोहै ॥ १ ॥ जादिनतुमगनिकाके अगुनाके
गुनमानो ॥ तादिनतुमसोभलिको फुठेफलवायोहै ॥ २ ॥ जादि
न तुमद्वारिकासो उपतिकेबिरवढाये ॥ माहाएजागजाकाजेन
गेपावनधायाहै ॥ ३ ॥ जादिनतुमभारथमो त्रिधमाको प्रानए
ख्यो ॥ तादिनतुम पाराडोसंगेसारधिकहायोहै ॥ ४ ॥ तुमहिअजा
नजानेतुमधाडिभजडनआने ॥ बडनअधीन होयि सुरगुणागयो
है ॥ ५ ॥

रागजयजमंति ॥ वं ॥ स्पामाकोसंदेसआरि पतिलेपिआविहै
॥ र्क ॥ जवसरिपतिआरि विरहदगछादि ॥ इतिनेकोहाथ
देकर उधोसेवचारिहै ॥ १ ॥ नगरउजारोकिनो उजारोवसयदा
रो ॥ कुवारीसोप्रितिकारि २ हप्रविसरायिहै ॥ २ ॥ पवरखनाथकि
चरणाभिमबर मनलायि ॥ रामप्रसादजसंतुष बहुविधिगायोहै ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥

रागजयजमंति ॥ च ॥ रामसैमनरामा यहिनेरो कजरमन
॥ र्क ॥ मायाकेसंग त्यागि प्रभुकेसरनलागि ॥ जगतसुरवमा
नो मिथा फुठेये सवसाजरे ॥ १ ॥ कहैउपरकाहेनुमारी सोपने
जो जगपहचानो ॥ बालुकीमिलाजैसे वसुधाकेराजरे ॥ २ ॥ ना
नकजनक कहतवान बिनुसैजैहै तेरोघाट ॥ दिन २ गयोहैका

ल नैसैजैह आजरे ॥३॥

मनपुरेयाव

रागजयजमंति ॥ चौ ॥ मनपुरेयाव दुरवफुटाके ननान ॥ १ ॥
 च्यापुगुंया त्वापलस विज्याकभिमसेन ॥ पद्धिमसमुषसोसेर
 सन हेमालभुमिस ॥ १ ॥ छलपोल्यामुरति सुनान मसिलधर्म
 धधिनअवनार गनन मसन ॥ २ ॥ द्विगुलिगुनवसुल मेवम
 दुधिनैज्ञान ॥ त्रिभुवनयादानाजुसे द्विगिमडवन ॥ ३ ॥ अतिव
 लवयलिया फुटकावगमान ॥ भीमसेन धायकभ्र थमह्वन ॥ ४ ॥
 दरसनविजगितदनाव ननान दुषियावीनातिनेना विरुनेननान ॥ ५ ॥
 लहाकह्यपानुगलस ॥ द्विगुलितुध्यान परदेसव्याथन वलसिद्धिदान ॥ ६ ॥
 रागजयजमंति ॥ चौ जय २ मद्धिन्द्रनाथ ॥ १ ॥ करुणामयध
 ह्य मद्धिन्द्रनाथ ॥ अरुणायामुनरूप यहादे लुपाउन ॥ १ ॥ विरीने
 नारायण स्वयंभूसुरूप ॥ हरसिद्धिधर भैरवसाथ ॥ २ ॥ जोगन
 रिंद स्वामिविरमाहाएज ॥ ललितापुस अलभरिपल ॥ ३ ॥

जय २ मद्धिन्द्र

करेकरे ॥

रागभथारि ॥ प्र ॥ करकरुनामयदीनेजननिदेवि ॥ १ ॥ पा
 पि पदमपतिन मतिहिने मानसमदनहिने ॥ नुवपदमननहिमुख
 रति रसमति चंचलविषयविरिने ॥ १ ॥ वालावनमै खेलनभूलेनजा
 ने जपमाला ॥ विषयविरवमगनजौभनजाने वृधभयदुरवजाना
 ॥ २ ॥ वेदविहितभीधि जजनविरोधि पामलपरवसमाने ॥ गुरुसे
 मननाहि नहिभाव्ये मायाप्रगनअज्ञानि ॥ ३ ॥ निन्दकियेनिसि
 अवसरविते नाहकजनमगमाय ॥ चरणसरनगति दासकहेमो
 को देहोचरणकिछाया ॥ ४ ॥

भुफलकरो

रागभथाहा ॥ प्र ॥ सुफलकरोसवकाज विघन राज सुफल
 करोप्रभुआज ॥ १ ॥ जयविनायक मंगलदायक सेवितअमु
 ब राज ॥ विघनविनासन वृंहपरायन भूतप्रेतगनराज ॥ १ ॥

कैजत्रिलोचन करिमलमोचन भारसोहे दिजराज ॥ मूलकट दसन
 भुजंगभूषण सुंदरमुखगजराज ॥ २ ॥ संकरनन्दन त्रिभुवनवन्दन
 भजनदानवराज ॥ आससेवकको वासचरणाकिशानमुक्तिदेधि
 राज ॥ ३ ॥

चरनेकभन

रागभथाहारि ॥ प्र ॥ चरणाकमलप्रणामामि गजानन ॥ क
 ईश्वरनन्दन सुरमनिरंजन भजनविघनसमुल ॥ त्रिभुवनवन्दन
 गिरिजानन्दन गंजनदनुज सकुल ॥ १ ॥ मंगलदायक भूतगनना
 यक भायक त्रिदशसुदक्ष ॥ विघनविनायक सिद्धिभूदायक
 पुरनकर सधरन् ॥ २ ॥ जगतकारण पतितउधारन तारनभव
 माहाजाल ॥ कलुषनिवारन संतजनतारन धारनकर अक्षमाल
 ॥ ३ ॥ मकुतभूषन प्रनिमयपूरन किरनससिसिभ्रभाल
 कमलत्रीलोचन भूभयमोचन भुजगराज ननुजाल ॥ ४ ॥

मुखकवाहन करलउधारन मुनिजनध्यानकरन् ॥ ५ ॥ भाषेसिं
 हविरललितमानोहर मंगलसरसगिरि ॥ चरणामुमिरन ईक्षित
 पूरणा भगतजनमनहित ॥ ६ ॥

रागभथाहारि ॥ व ॥ वल्लविनान कृष्णविनान ध्वसंसार गतन
 गोपालयाचरणासरण ॥ क ॥ अधमअनाथ धममायामोहमन
 ॥ रतिरसमुखदको सपनधनेन ॥ १ ॥ ब्रंहादिनंदेहनेलनल ध
 न ॥ ध्वदेहिमिपितोरेनफटकुहुगुमान ॥ २ ॥ गोपालदासनंल्लय
 याहुनेजनन ॥ भगतिभावन कान्हलावविवेकन ॥ ३ ॥

रागभथाहा ॥ प्र ॥ कोजानेनेरीलिलारसकरभोला ॥ क ॥ धान
 करेप्रभू गंगाजलसेल्लियविभूतकिजोली ॥ पसर २ घसि धुलिभवर
 पीर सेसकिनयगामिगरी ॥ १ ॥ व्याकुलभयअग्नि उलातिपलति

वृद्धवनेन

कोजानेनेरी

अई हरजिके गले लपनि ॥ करत फुंफुं काल अधे द्वाला ज्वाल भाल मेरि मनि
 ॥२॥ सहिन सकि चन्दा छुति पिपि वधारा वधं दार मै परि वन्दा ॥ सिंह
 राजे वाडि वयल देवि रूपि हरिो दिवयल मै चटि ॥३॥ अनि रेवनि
 दोरि उछ वाडि दोरि फुकि गयि जटा जुकि ॥ फुकि गै गंगा चडि दिस
 धारा नंगा भंगा वडंगा ॥४॥ खल २ हसनि देवि पारवनि आये
 मिले दुष छुनि ॥ तात सहित माता देहो अपने हाथ सेवक को गोद
 गनि ॥५॥

को जाने मरिमा

राग भथाहार ॥ प्र ॥ को जाने तव मही माजननि ॥ धर्म ॥ आधिर
 त्रिभुवन स्थावर जंगम अस्थि प्रजा तिकिन्दु ॥ सो सब पुराडरिका
 था सुपालूत भक्ष जगत ~~सकिन्दु~~ हरकिन्दु ॥१॥ सो हम के सब
 संकरतिनु के नान्दन सेव सकिन्दु ॥ को भवई भर नुति समरथ
 को प्रह्व नुतिके ॥ २॥ हम विधि सोहारे सोहरति नू को ग्रह

न करि जे सारि ॥ यदि हरे मनि नूपार स्य भरि हरे कागति ना सुर
 पीन ॥३॥ ते नुतिको मम नाहिस मरथ सक्ति मान नहि होई भाषत
 सिंह विर विधिकि नूनि वारि नूनि को फल होई ॥४॥

रेर सने सुनिये

राग भथाहार ॥ च ॥ रेर सने सुनिये यह मम वचन ॥ धर्म ॥ दुद
 दहि मधु घृत सुसकर मैवा सरसनहित ॥ सादर सै हम देत नि सुदि
 न भक्ति भारिय कचित ॥१॥ मनुसमै ० तुम भक्ति सै कहिये
 उत मरसिक काम ॥ निर्मल नील कमल दल लोचन नारायण किना
 म ॥२॥ भाषत सिंह विर अति भक्ति सै भुलो नहि यह काम ॥ तुम
 विनु को रस जानत न ममे लेहु सदा हरि नाम ॥३॥

रेर सने प्रदि यता दधि मधु सरकरा घृत म ॥ मरत प
 सो वीदि धामि क्षन भि दि वर लोचन हरे ॥१॥

रगा भथाहा ॥ प्र ॥ सुरथाजसुन थक बित भक्त मन आते हीत
 ॥ १ ॥ जब जगत पति को कलेवर मुक्त करि जगदिश्वर ॥ जलयका
 मय अहिसयन सै उठिक देखे दहु आरि ॥ १ ॥ इस्तमति मधु कैट
 भ दंडु बल पारक्रम आति भारि ॥ अरुनलोच कोप सै भारि बडी
 विधिक वारि पारि ॥ २ ॥ ग्रहन केत त्पार भई डनु अदन को उ ओग क
 र ॥ देवि हरि आति कोप सै भारि समर मै जायिये र ॥ ३ ॥ भनत स
 ह विर भुभपद सकल पाप धेय करे ॥ सरस भजन करत जो न राय ह
 जगत पार करे ॥ ४ ॥

रगा भथाहार ॥ प्र ॥ देविछास्का मनि नारि हे जगत माता
 ॥ १ ॥ अधिक भयो मन हृदय कि दर दुराई देहो मेरो ॥ हेम
 गिरि सनि २ देहो मेरो दरसन करुणा को छांया ॥ १ ॥ नाहि मे

रोवंधु नहि मेरो रोगा नहि मेरो कोहि नहि साथ ॥ बुधि मति पगि
 त्रिन पाणि किलो न देखो मेरो साथ ॥ २ ॥ हिन करो देवि अनाथ दे
 व के दया राखो पुरन दान ॥ दास को विनति २ अस्त सिद्धि न
 निधि अद्य वरदान ॥ ३ ॥ कहत अज्ञानि सुन हो रानि भव कियो
 थोरि मारि ॥ यह सागर पार २ तारि देहो अपने गृह कि दरस
 न ॥ ४ ॥

रगा भथाहार ॥ ॥ ॥ होये गु स्वव कने गु स्वव धर्म पापान मन सत
 ये गु स्वव ॥ १ ॥ ॥ जोग भजन पु एन आदो न लोक न नेने गु स्वव ॥ शु
 गुली की नान महु ध्व सै सार स ॥ ज्ञानी न नेने गु स्वव ॥ १ ॥ धर्म तो
 लना व पाप स भुटा ल पु ज म या भये काया स्वव ॥ भाव पी नान म
 गति महु स स्व वे कु य ला ये गु स्वव ॥ २ ॥ ॥ बाल व त ह ग ज्ञा य
 जु ई व का ल न ची ई गु स्वव ॥ भगत न श्री भगवान स मन तो व
 सर न ला ये गु स्वव ॥ ३ ॥

विश्वनाथ

रगा सारङ्ग ॥ चो ॥ विन्द्रावन वथे मगजोहत है वनमालासित
 ल पौन अति सुगंध आरि ॥ ध्रु ॥ मुनिधुनि वउक्ति जुक्ति वीसि
 वन जमुना के तन ॥ निकट नृपतन न नागर बोलत है आरि ॥ १॥
 पुष्पन किं मे जल चित कुसुमन कि ॥ लता ललित कुंज भ अन वै थ्ये वि
 हारि लाल ॥ सुरदास मदन मोहन तलपित जैसे मिन वा दि वेगी च
 लो ॥ दरसा दिजे तुमहि प्रात प्यारे ॥ २॥

प्रभुपद

रगा सारङ्ग ॥ च ॥ प्रभु तुम मूरति विश्व देवार्थ ॥ ध्रु ॥ कोटि २
 भुज पर कौरव पांडव भारथ जु द्वार विहै ॥ कोटि २ सिर धरे सह भ्रभान
 के तेज अगम मूरति अर्जुन को देवार्थ ॥ १॥ से सगरुडासन चन्द्र
 ससुज कर त्रिभुवन रोक पथ धरे ॥ देविय अर्जुन हर्ष वदाय धन्य २
 राधव दरसन पाई ॥ २॥ कौरव हार पांडव रौखिय दुपति मनोर

धनतारे ॥ कहतसेवकजनतुल्यगुणवदनाअगमअपारतुमसंत
जनतारे ॥ ३॥

रागसारङ्ग ॥ चौ ॥ सोहतसंगदेवोरिस्वामामालधायवरंग
॥ १ ॥ भूजदेलायचलतनन्दललातेरंगहरधरधाय ॥ गौवारि
बोले तोरंग ॥ १ ॥ उपमामिलाय सरसलोका २ चलेकरधरधाय
॥ राजाकहेयिह गितरंग ॥ २ ॥

रागसारङ्ग ॥ व ॥ अनाथविनतिसुनिलिजियेजगदम्बि
के ॥ १ ॥ तुलबिनुनहिअउर वेदप्राना ॥ सिंहचदियत्रिशु
लदम्बरु दम्बरुदिमिवाजे ॥ १ ॥ नवडुगोजो गिरिवहैसंग
साथे ॥ भूतभैरव दाकिनिसाकिनि हर्षन दिमिसूनाचे ॥ २ ॥
गिरिवरनादिनिभगतविचारिणी ॥ कह्यदासअनाथ जातिकरुणा
नयननलिजे ॥ ३ ॥

रागसारङ्ग ॥ प्र ॥ चलोहोविदुरघराजायिये ॥ १ ॥ जाकेघ
रको ने कामनहिहो ॥ जाहाआहरताहाजायिये ॥ १ ॥ तुमतो
होप्रभू अंतरज्मामि ॥ तुमसोंकाहाछपायिये ॥ २ ॥ तुमतोछाहमे
घघनवलिसम ॥ स्त्रीयाकहेप्रभुआरिये ॥ ३ ॥ चरणापवालि
के चरणोदकलिजे ॥ रुचिभोगलगाये ॥ ४ ॥ मुरदासकेप्रभू
तुमारिदरसको ॥ बिडकीपापवहाईये ॥ ५ ॥

रागसारङ्ग ॥ प्र ॥ तेजोमनहरविमुखनकोसंग ॥ १ ॥ कागा
कागक उ लचुगावय ॥ स्वाननहोवतगंगा ॥ १ ॥ क्यावरकोने
अर्गजाले ॥ पन प्रकटभुवराअंग ॥ २ ॥ जाकेसंगकमतिउपजत
है ॥ होतभजनमोभोग ॥ ३ ॥ मुरदासकेप्रभू कालिकमालीबलन
नडुजनरंग ॥ ४ ॥

मैदेखोर घनाथ साविरि

राग सारङ्ग ॥ वं ॥ मैदेखोर घनाथ साविरि ॥ र्क ॥ सरजू के तीरे
अनुध्यान गरी किनक भुवन मोजान ॥ १ ॥ सुंदर लोलक पोर विराजित
चंदन चंचित लास ॥ २ ॥ सारंग धनुक वैजंति माला पितंबर
फहरान ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभुनु मारि हरस को आनं दउन संगानि
॥ ४ ॥

राग सारङ्ग ॥ वं ॥ मनि रुचि सुचि कृत कुराडल सो है ॥ गल के सुभ सुंदर जग
सुंदर जग मो है ग

गो भुवन

राग सारङ्ग ॥ वं ॥ रंग भुवन पर परवस कियो हरि गरुड वाहन से
॥ र्क ॥ मनि रुचि सुचि कृत कुराडल सो है ॥ गल के सुभ सुंदर जग
मो है ॥ १ ॥ उर धर विकसित मारवरे ॥ भयवार गाल क्षिप्रि सन्त
पति भने ॥ २ ॥

कहक

राग सारङ्ग ॥ वं ॥ कहक पि कनक पुरि को वात ॥ र्क ॥ पद न

रामजि कहियो अंगद सिता है कसल छेम ॥ १ ॥ अति दुवल तनू
रहिये सिता वसन मलिन दिन गान ॥ २ ॥ असोक वगिषा मोरहि
ये सिता राक्षसि है चौकिदार ॥ ३ ॥

मेवम दुवल द्विजोल

राग सारङ्ग ॥ प्र ॥ मेवम दुवल द्विजोल श्री भीमसेन ॥ रथि माहा
रथि विर रास सदान थिर स्याक दिन गुलि दोलंदोल ॥ र्क ॥
दुर्पतिया अपमान प्राप्त सभास वनानं ब्रवल सयाना प्रतिग्यान
॥ उर्जोधन या गुमान न उसासन या पगान फटकल सन हिन्दु नान
॥ १ ॥ जज्ञया ज्ञा भाल पान मात्या जुहु फोनानं ज्ञा संध देहि निफा
फल ॥ कान्हू जुया मिषा भाव मनन धिके तनानं दुया यफयि व
निदान ॥ २ ॥ सुबाल या गरागाक गुपत वास सलाक किंचक ह्युपन
जं स्याक ॥ विरथ भुपति स्याक लखल पुज सलाक वयारि

याभयनं प्रपाक ॥३॥ प्राणपतिमन दुर्पति श्रीभिमसेन विदुनेधिपालि
पलेदान ॥ संसारया सुखसार शुगुलिनुवारं २ मेवत्पाकजितलज्जा
छाय ॥४॥

रागसारङ्ग ॥ प्र ॥ मिरिवनमोखेलत ह ॥ अविधान हो देसो
कीपन ॥ कं ॥ करमुखिवाधिली वोजन फलमुलवान भलिहो ॥१॥
॥ नृपवर रणावहाडर ईहरसभन प्रमानेहो ॥२॥

रागसारंग ॥ व ॥ जय २ भजलपाभवानि यापालिविव अभयवर
दान ॥ कं ॥ काथेसकमारिमाजु भजलपाजुसेचोना शुगुलिमु
गुनिविवदान ॥ थछेमाजुमाहालादिने सेवासोसेवरवि ॥ व वस
जुह भावयावसास ॥ १ ॥ कुसुतिर्ध कुमारराजा बडरुपजुसेचोन
नई व खेवस्य थवथास ॥ यप्पामाजुविद्युदेव भालपाथेवलवि
भुतगनचोनवसथास ॥ २ ॥ निहु होस व्रंहापारिण पलिंगारेमहेभी

जिमिस तुलिनासयाव ॥ लोहगट ईद्रायशिहासापनागरापति
यावजितउद्धार हनास ॥ ३ ॥ धंतिनासवाराहिमार्ह सिकवहिलि
चामुंदा यावजित बालवाध मासि ॥ भगिरास सिद्धिलक्ष्मि
मतिकोमाहाभैरव विवजितधिपालिसवास ॥ ४ ॥ अनाथउभये
जुसे पिठेउनेरसतासे भावयायगुरुयाआसानं ॥ विरंचिमुखवे
द वसुमदुमास आरंभतिथि ॥ ५ ॥ ल्हाकल भवविद्यादास ॥ ५ ॥

रागसारङ्ग ॥ व ॥ जय २ गरापतिधिके जिविनिकोनि विघन
विपति नासयाव ॥ कं ॥ रिद्धिसिद्धिजवयव तसेआतिसेभालाक
मनुकसचंद्र कलाधिक ॥ सोलअतिताहाक ॥ दलप्रकासयासे
संसारया जोनिमयरूप ॥ १ ॥ सुद्येवसथिन मेवमडरुपवस
जोसाजुलपानिजपमाला ॥ ल्हाकलगरिवधक स्वयेतेलकरुणा

दयक विववासहिपालियाथास ॥२॥

मुनि

रागसारङ्ग ॥ सी ॥ प्र ॥ होहोरिवेलवृजघोरणामे वृजवासिष्ट
जवन २ बारिहो ॥ कं ॥ बौधाय धुध गुलाललालकी कृष्णजिवनलके
रामजंगलिहो ॥ १ ॥ दंफकिधुनिमुनि विकारभायेह रहना सधट २
धुधवारिहो ॥ २ ॥

सकट

रागसारङ्ग ॥ व ॥ सकटु ॥ कसारभस वितयसस्मिन् विरचितवडविघ्नरा
॥ मुकुमितापिकसितमुडरावर्तितनर्तितनयरातरंग ॥ १ ॥ प्रियसारिकि
मुराति वहसिमहेस ॥ हिमकरकिरनक लापकरामत केरवकोमलवेस
॥ कं ॥ त्रिदसनरापति जबमविरल मुदयतिलोचननिर् ॥ विततवि
अतिभ रादिभपांडर रुचिकिभूभदति सरि ॥ २ ॥ लोचनदहनगहन
तमदिधिति मिक्कलयसि सन्तर्प ॥ कंठविषमविष सैवंधादिवमोह
वहसि डराप ॥ ३ ॥ प्रविततविकट जटापट्टा धुति विगुठतिहाडि

गोवाल ॥ प्रतिकृतिरिवहिमकिरनकलानामुदयतिवालमृगाली ॥ ४ ॥
प्रसरतिनस्पनकनककनादिव विसदृसवचनमनेकं ॥ प्रक्लासेनिप
तासि पस्पसि सचकिन मुकुसि मलयजसेक ॥ ५ ॥ विहीतपनिव्रत
धर्मव सादिव गरायसि रिपमिव काम ॥ वनमभिनन्दसि गिरिम
विन्दसि निन्दसि गृहमभिराम ॥ ६ ॥ हृदयगतंहरमवलोकीगुमिव
नमयसिगुधससि विंव ॥ तदुगुस्विद्यसि प्रलकसिमुह्यसिवह
सिकं पमविलंब ॥ ७ ॥ भागुभक्त नित प्रितिविजया वडविधको
तुक कथनमुहार ॥ अमयतुसकल भवनजन समधिक दारुणा डोरि
ताविकार ॥ ८ ॥

रागसारङ्ग

रागसारङ्ग ॥ न ॥ रागाविचधर्मकरे अदभुत ॥ कं ॥ तेजभीरव
नुरंग सैन्य सभ दराज जुद्धकर भारि ॥ ताहिसमै कोनापरिनासन
आबोरिउभई भारि ॥ १ ॥ सुरयभूपति आयेमाहावति चनुरंगवह

साज ॥ जुद्धमचिअति सैन्यडुआ कि जितेयेवन राज ॥ २ ॥ अल्पजनसे
जितकरेरा देव कि यह काम ॥ भावतगित ललितसिंहविर भक्तिज
न कि धाम ॥ ३ ॥

गरीब

रागमल्लार ॥ प्र ॥ यह विध प्रथम संग्राम करे दानवगन मथन को
॥ र्क ॥ जुद्ध समय में देवि भगवति न जिनि स्वास फेरी २ ॥ सोयवन
कि प्रमथगगा भयि सत सह श्रवेति २ ॥ १ ॥ सो प्रमथगन महति
जुहुट विविध आयु धक धरे ॥ परसुपट्टस भिंदिपाल निक्षन ख
डकर धरे ॥ २ ॥ नास करे दानव दल मल देवि वल से वल भरे ॥ काहुं
वजावन पटहरगगा संवधुनिकार करे ॥ ३ ॥ मराज वाजन अंस
वडी विध नाचिन गायिक जुहुकरे ॥ प्रथम रागगा रन जुहुट नम
दनुजगन कि नास करे ॥ ४ ॥ भनती सिंहविर रसन गीत मन आन
द करे ॥ हरत वडी विध दुख जालक भक्ति भजन जो उकरे ॥ ५ ॥

मे

रागमल्लार ॥ चौ ॥ संकर सदानंद मानिया सहाय माथे चंद्र
मा सो दायि ॥ र्क ॥ भूषण व्याल सुत गले धरे मराड माला

बधरवधंवरछाता ॥ सिरगंगावहेसिवनाचतहेभरेहो ॥ १ ॥ नृत्यके
ईस माहादेवमनोहर ॥ दमरुदिमि २ वाजे ॥ नृपरागावाहाडुरभने
हो ॥ २ ॥

जलविह

रागमत्तार ॥ ३ ॥ जलविहरनमयसंकरमगनभयि गिरि
जालियसंग ॥ ४ ॥ मलयपवनसितलवहन हो सोभामानविरा
जितहे ॥ कोकिलमयुरधुनिमधुरहै ॥ १ ॥ जलसितलकिलकनक
रतहै ॥ भावमानविहारत है नृपरागावहाडुरभनतहै ॥ २ ॥

अजापनि

रागमत्तार ॥ ३ ॥ आजमिलियोरघुपति सोनामदल आयेपिया
समुजेनहि तनभरथ सामथमुहे ॥ ४ ॥ भवानिभैरवनाथ देव
रिषि गंगासाथ सरधनुलि ये हाथ आयरघुनाथ ॥ १ ॥ लंकेमन
विरभाई कपिकोरिसाथ लायि फिरिसमुदरतारि आयेदोनोभाई

॥ २ ॥ विभिन्न नहिभई स्वहु भेदवतायि कुंभकरगातेरि कोन
जगाई ॥ ३ ॥ कहयमनोधारिसुनयियाचिता धरि आजुतमकथि
नभयिकै सेविधिउतारि ॥ ४ ॥

रागमत्तार ॥ ३ ॥ पलसदरियाकैसेभरो गिघघरिया ॥

बारमन

रागमत्तार ॥ ३ ॥ वरसतजोनहिपानि हेगुमानिघन ॥ ४ ॥
उडिगईहंसा मुकिगयोसरोवर ॥ वनवेलिसवमुकि ॥ १ ॥ इतगो
कुलउतमथुरानगारि विचवहेजमुनापानि ॥ २ ॥

॥३३६॥

रागआनरा ॥ वं ॥ जननिगुप्तयक किवहुरूपा इवहरणाकिभूषा
 ॥ १ ॥ तुमकमलाअतिसंपतिरूपिनि तुमजगदिश्वरिमाना ॥ तुम
 हिमैत्र अनंतस्वरूपिनि तुमधिवीधसुदाना ॥ १ ॥ तुमहिकलकिल
 ज्पास्वरूपिनि तुमपुष्टिजगरूपा ॥ तुमहिअतिसंतोवस्वरूपिनि
 तुमसांतिस्वरूपा ॥ २ ॥ तुमजननिअनि क्षमास्वरूपिनि तुमहि
 माखु मिनि ॥ तुमहीशूनिनिगदि निचक्रीनि तुमसैरिनिचापिनि
 ॥ ३ ॥ तुमअतिभिमा वानाश्रुमुंदि परिधायुद्ध करलिन्दि ॥ भनत
 सिंहविर विधिकस्तुनि पदमपदकोदिन्दि ॥ ४ ॥

रागआनरा ॥ वं ॥ भगवानयकतुमविनु अैसेकोहिनहि देवो
 हानिकाधेजलसै भक्तवच्छले ॥ १ ॥ ध्रुवतोअनाथनाथेभापू
 काटे कियो ॥ लेचलपाताल रैच्येवेग वाहावलसै ॥ १ ॥ गंजन

कहेरिगृहेगजनगंभीरिरे ॥ कैसेकरहुतेआलिधाधोकिना
 करसभप्रवच्छले ॥ २ ॥ मोहिअनाथप्रभू ~~च~~ करवरीहि
 लिनो ॥ कानेकनेफन्दाआलि किन्हो थाडेउकारे थहोसे ॥ ३ ॥
 राग आनरा ॥ च ॥ अदभुतजोगियरूप ॥ दोरेथाडेहोकोने
 रूपकोनेभेस काहानलिआयेहो ॥ ४ ॥ सिरमोनिनिजदायक
 गंगा माथेहो ॥ येकमोदेखिय सेसकेसतपतानिहो ॥ १ ॥ अर्ध
 चंद्रकाधित काहावसोनि काहाहो ॥ फुटललोकाकेतुकवर्ध
 वरकाधेहो ॥ २ ॥ गलेमुंघकिमाला कमंदलुहाथेहो ॥ गोरवा
 हनयक साथकरधारे बाधेहो ॥ ३ ॥ लोहकिदविया हाथउपरनि
 कोनाहो ॥ बासकिवासुरि कजाये सबदअति नोनाहो ॥ ४ ॥ गावन
 भगवतिदास ब्रह्मनहिपायेहो ॥ धुंन्देभवानिकेभापआपसिव
 आयेहो ॥ ५ ॥

राग गांधा ॥ प्र ॥ भजोमनरा मनामकिसरना ॥ १ ॥ गिरिधर
 लालगरिवनेहारिदीनदरतदुखहरन ॥ १ ॥ तज्जुंजालसपविष
 यनको ॥ भजुलेगोविंदसरगा ॥ २ ॥ कथिननुहे राभवकासागरकिसे
 विधिपारउतरन ॥ ३ ॥ नातकदासआयप्रभू कासरना ॥ मितिगयोज
 नमसो मरन ॥ ४ ॥

राग गांधा ॥ च ॥ मेरोअवनिरथकोमनलागो ॥ १ ॥ देसने
 पालधरमकिसाला ॥ देसनकोपथआये ॥ १ ॥ वागमतिमनमति
 केसंगम ॥ संघमोलाचितलाय ॥ २ ॥ भनजानुजनचराणपयोरी
 पसुपनिदरसनधाय ॥ ३ ॥

राग गांधा ॥ च ॥ भगवाननुमहिसेंसारकिनाथ ॥ १ ॥ जोक
 धुमेरे विह्वेआहय ॥ तुकमेहरयकसा ॥ १ ॥ भनजानुजन

रागगांधा ॥ वं ॥ हेजननिमाद्योजितपार अधर्मअकरमफुटकाव
 विव ॥ र्क ॥ डुरजनसौतअनकुवधिमननसे ॥ यानछिनडुरजनडुसया
 संघार ॥ १ ॥ सतुरिर्नफलमनघालयावेथार्थेनेन ॥ जननिर्नफुटकल
 सतुरिहकोअन ॥ २ ॥ ल्हाकल्लमामनसअनिर्नहरवजुमे ॥ दरसनवि
 वजि संसारउद्धारयासे ॥ ३ ॥

रागगांधा ॥ रवजनि ॥ हाय २ जउभनरत्नसमान ॥ र्क ॥ जोभन्याचु
 डामनि लुपलेयानेजउति ॥ होहोचतकनस्थानचपरवान ॥ १ ॥ जो
 उभनयापेहस ॥ पळुयागपेहपासा ॥ वनयाजउभनलहुरि
 भेस ॥ २ ॥ भुपतिन्द्रमल्लनल्हाना सुजनयासुगति ॥ सोवाधि
 र्क ॥ कसुगानं लोकयासुगति ॥ ३ ॥

रागसौरथ ॥ ॥ रूमरूमरूमरूम आयोवरसारितु ॥ कृष्ण
 जनमभयो बुद्वरसै ॥ र्क ॥ गुणर मसुरकरतवढापे ॥ वाज
 तवेनुमदंगा ॥ सारिगमपमधम किनरावे ॥

रागसौरथ ॥ वं ॥ गरुडावरकिन्होमाधनि मैयगावनमाने ॥ र्क ॥
 निरमनिरुनिवदन सोहे के घने रो अख रो ह्य ॥ १ ॥ विरमनो
 रथ परनकारन रससेभूप भनेह्य ॥ २ ॥

रागसौरथ ॥ प्र ॥ आजहरकिधामचलेहो ॥ र्क ॥ असुरपतिकेका
 जकरी ह्यः सजनमनाव रात्रु शीमय ॥ १ ॥ राजसभनकेभुपभनि
 ह्य ॥ निधनजनाव दैत्यपतिके ॥ २ ॥

रागसौरथ ॥ प्र ॥ तेजिजानु चितमिरे उनभावरे ॥ र्क ॥ वानकपुर

ने हम अवआई उत होई हम धारि रि वलिसुनवानासुर कितन
पाउवानामनु ध्यान धारि ॥ स्वपने दरस पाई दिन तासै कहुवन सो
है मोह भयोरी ॥

राग सोरथ ॥ प्र ॥ सारि धन गर्जे २ रस किवदन परसे मेहरवा
॥ र्क ॥ मोर पापि वार कोयलिक रुके मूरुवा बोले मून जवरसे
॥ १ ॥ कालि वदनिया घुमलि २ या पौन चलत सन जवरसे ॥ २ ॥
राग सोरथ ॥ ५ ॥ वरिषासमय स्वहान स्वय दय गुंचोस सुन
अनाबो ॥ जंगल ह्यसया हाल हरवन नम्याल सुबलने नाव ॥ १ ॥
मोहन सारिणि जिव वसमान ॥ र्क ॥ जुपि वथ्वे वस साज
याव गुं सरस नसि हलन उपागरे ॥ आव दरसन लाय वसगन
जिपनि नुगल मुयाव ॥ २ ॥ मथुरा सहरा सुखया थासरव
दुति जुयि वथ्वगा मरे ॥ अने गरस वनि जिपनि मलुमनि

परयावस जुलस्पामा ॥ ३ ॥ लहाक ह्यकुमुदिनि यति पुरुषमनि
जगने जयन स्वयावरे ॥ लुमना ह्यनगुरा मनमतेना तिनभ
मलया जितस्वान ॥ ४ ॥ करुणामडुल्लव जायमतेखव भालपे
थममसयावरे ॥ विरहनायन सरिगनावन लेनि वम सुथोप
रान ॥ ५ ॥

राग सोरथ ॥ प्र ॥ काहेन गोपालन आये उधो ॥ र्क ॥ किवहि
देस मो पंडित नहि जोनिक नहि नकोई ॥ मो विरहिनिके व्यथान
जानि हियारा डुरवोई ॥ १ ॥ किवहि देस कि नात्रिक नाहि दाडरना
हि नमोरे ॥ कालि घटाघन चौउर आयो वरसे घनघोर ॥ २ ॥ क
उन किवान न सुनि माधव सोई रहेवन मो ॥ हरि हमारो सुधिवि
सारे गई है परमानंददास ॥ ३ ॥

राग सारथ ॥ प्र ॥ वृजवंधु का संग येने होरि विनु देवे नंद
 लाल ॥ ६ ॥ जाय कहो उद्धव निधुरसे वितन न लागे पहार
 ॥ १ ॥ कोयाहि कुन्दुके पापिया पोले वरसन लागे मेघ ॥
 सोर भृंगार अकारथ गयो है अजहुन आयो सदेस ॥ २ ॥ वृजव
 निता सब छोडि के माधव कुवजा के परप्रित ॥ तेरे सुरन हमनि
 सुदिन लेवन हम कुवजा के पृत ॥ ३ ॥ बुवाचंदन अवि अर्गजा
 के सर किलक निहारा ॥ पृथिनारायण प्रभु चिरंजिव यजुग
 भी राजते हार ॥ ४ ॥

राग सारथ ॥ प्र ॥ दसपकानि भरि २ किलकट पिया पाउप
 जन अने गरंग ॥ ६ ॥ मधुमाने पिया छकित छयल सो सन मुख
 ऊंरुट पारे ॥ १ ॥ दउरि २ दिन येन पठाया तापर देतो गाव
 पारे ॥ २ ॥ केछवि मोहि ऐसे लागत हमन प्रेसत वारे ॥ ३ ॥

राग सारथ ॥ प्र ॥ मोहन आज लाज मान्योरी ॥ ६ ॥ यकवर
 नंद जसो मति थाडे यकवर वन भद्र भाई ॥ यकवर वसुदेव उधव
 था दे यकवर २ देव कि भाई ॥ १ ॥ भरि पचकारि रंग मोप
 दारि मारत कुम २ मारि ॥ वार २ मेरि छानिको वत है गोपिनि
 मारवन बोनि ॥ २ ॥ कासा कहो मेरे पीर सखिरि आवत हे नंद
 लाल ॥ गुरुजन के विच वगन दवायो दुतन हे सरविजाल ॥ ३ ॥
 ऐसे न धितो कहुन हि सखिरि आवि एवानक जानि ॥ उद्यत अ
 नेक मसानाना पर कितकिचाद निरान ॥ ४ ॥ अवर भिजि गई
 सारि भिजि बोलिया धरि मेरी ॥ जब मै सावर यकला पाउ
 नवराखो पनि तेरी ॥ ५ ॥ श्रीराव हाउ प्रभू होरि खेले सब राज
 नको राज ॥ राधावल्लभ होरि सर सब मोहे कविजन के सिराना जा ॥

रागसौरथ ॥ ६ ॥ केसारेजुद्धकोवहरीत दानवदलमलकरत
पतित ॥ १ ॥ ईश्वरिवाहनहिमगिरिदिन्दि ॥ कुंदलयडिकरि
कोपहिकिन्दि ॥ १ ॥ दानववरधनजुमनकिन्दि ॥ जोअगिरि
वन दाहकिन्दि ॥ २ ॥ भावनरिहविर हरिगित नामत कलिमल
कनिन ॥ ३ ॥

रागसौरथ ॥ ७ ॥ अदभुततेजकिपुंजपरे ॥ १ ॥ अंत्यअधिर
सुरआदिपरंदर अतिमहतिकोपकरे ॥ ईनकिसरिरेसेतेजनिक
लिअति सकलामिलि यककुरपरे ॥ १ ॥ तेजमहतिअतिज्व
लित अंगन अवलपति विव कुरपरे ॥ देविअधिर सुर हरि
न भयिमन तेजदिगंतर व्याप करे ॥ २ ॥ देवसककिसरिरेतेज
जरेहुपमानभरे ॥ तेजकेभयियक नारि अनुपमतेज त्रिभुवन

व्यापकरे ॥ ३ ॥ सुललितगितभनत सिंहविर अवननसेसवपाप
जले ॥ भजननसेमनकिन्तमनासत जोमनरजनिकोहरे ॥ ४ ॥
राग सौरथ ॥ ५ ॥ अदभुतप्रलयेकिसंग्राम ॥ १ ॥ जवउठि
भगवान सयरासे युद्धकरेमाहाघोर ॥ विरमधुकेटभडुनुसेमुष्टि २
कोजोर ॥ १ ॥ पंचसहस्रअब्द विततभुजवलकिप्रहार ॥ स्ववल
सेअ मत्तभरहुनु जुद्धकरतअपार ॥ २ ॥ तवभगवति दहुअसुर
को चित्रमोहितकिन्हु ॥ तवडुनुसेहोड नममनवरकिजोवाँदित
॥ भनतसिंहविर रनरसहरत दुषकोनित ॥ ४ ॥

रागसौरथ ॥ ५ ॥ यहविधकहन श्रीभगवान ॥ १ ॥ यदिअ
वहि संतुलनभयनुम सुरडोनु माहाविर ॥ यहिघारिविचमैरिभु
जसे होहु बध रधिर ॥ १ ॥ समरसेनुमदेहो यहिवरवारकाकाम ॥

यहिवरसैसु संतोस हमहै जाउनु परघाम् ॥ २ ॥ भनतसिंहविर
हरिवचन अवगासैकल्याण ॥ ३ ॥ भक्तजनकिहरतकलिमलभन
हो अमृतपान ॥ ३ ॥

+ रागसोरथ ॥ प्र ॥ भैरव द्विगुगुनव्हायनिमसया ॥ ४ ॥ स्वगोल
मिरवावसया कसेततलेहगुलिया मिरउनस्वभालाक वस ॥ ५ ॥
विष्णुकअतिरसनं भुटयाभुमियाधास वज्रविरमाहाकालभै
रव ॥ ६ ॥ मिरसजालमोति मनुकयावानअति स्वातयाजेजसलोव
अति ॥ ७ ॥ न्हससकंदलजोति गलसमोलयामाल वनावलोक
या मोहनमति ॥ ८ ॥ जोनावजोगन अनेगवुगुलि लाहारनिर्जभि
तस ॥ ९ ॥ हालनलोयाव ॥ १० ॥ थोजगसतयमने निथुरजरमयासे
थोदेहयाधिरज निवि ॥ ११ ॥ हलक लयाकरमस धुनियागातया

धिनंविष धिनंप्रसमनिदान ॥ १ ॥

रागसोरथ ॥ प्र ॥ वृजलालका हागयि तुमनंद दरसनमनकि
माया ॥ श्रीभनलियोमन कृष्णकिनाम आफकाहारहिलात ॥ २ ॥
रितुभयाहारि कादिन हा चितभई मनरवन ॥ कैसेकडहोरि के
रंगपानि भीरुहिभरि ॥ ३ ॥ १ ॥ रसकियोरति पृथिमानाके वारिषा
किरसवरसकि ॥ कियोएतिभावकि स्यामसोलियो मगनभयि
रसकियो ॥ २ ॥ जउभनकेमाया पुरुषसहिन सोपुरुषदेवियपरा
न ॥ रतिकेमनलियो पतिसवकियो रसंगस्वआप ॥ ३ ॥ संगनलि
यसाध सबकेस्वमन पूरनदियोरानि ॥ श्रीलक्ष्मिपतिजुगकि दाना
देहोदासकि रगनरस ॥ ४ ॥ एकआठसय दयासिवरखमेभाववनाह
गावय ॥ श्रीगजेन्द्रविक्रमसाहदेव रसकियो पूनहोले ॥ ५ ॥

+ रगासोरथ ॥ च ॥ ब्रह्मसंकेजिमनयाभाव देपासा ॥ क ॥ तमस
 न्यासेजुव ह्म हातनंकोबासेनमा ब्रह्मजसेजुल न गोवालोरे ॥
 ब्रह्मकृष्णजुया नेनाववासुरि जिर्न चोनेमफरेयहा चोनेमफ
 घोरिविनागांटे ॥ १ ॥ चानसेहितावजुसे जलसउगलघासे
 जसोदानंस्वस्पहा २ कालोरे ॥ हतासनं वसेसोसे ह्युतसउहाव
 स्वसे त्रिभुवनदकोषन कावोरे ॥ २ ॥ धितधायब्रह्मलया गथेसि
 यजिनंधाया स्वोरे २ कामिनियाथासरे ॥ रसिकलरसविसेकाम
 नापानयासे गोपिनिब्रह्मिनेथोयाख्यालोरे ॥ ३ ॥ अकरमिजि
 मिसा चतुरमजुगितान गनलायवउरुष रामर ॥ कनसारि
 छनब्रह्म कृष्णयातजिव्यधान वसचराणासजिधे निदान ॥ ४ ॥

राग मालव ॥ सुप्र ॥ किंभवामिभणामि वामुतादितामदनेन ॥
 कुत्रयामिकरोमिवा किमुप्री लिताकदनेन ॥ १ ॥ शिवमयाकुमी
 नया निंदितोपिगिरिसोपि ॥ क ॥ किंहित किमुवाहित निविवेचि
 हृदयेन ॥ सिक्षितं न च वारितं न च वासरि निचयेन ॥ २ ॥ भावया
 मितदास्य मुत्रम कांतिहासभरेण ॥ चंद्रविंशमि चोज्वलनिबर्च
 द्रिका निकरेन ॥ ३ ॥ पाणिपत्रय नोगतोमशिरोरेवकिंचयामि
 ॥ दैवदैत्यम बाधते किमितोपिवा कथयामि ॥ ४ ॥ वारितोदयि
 तोवचो न कर्त सखिनि वहस्प ॥ युक्तेमेव न तोयतोममयत
 ना हृदयस्य ॥ ५ ॥ काननेनवनेमहि धरमन्दले विचरामि ॥ तस्य
 विश्वविलक्षण स्यन साय्यमा कलयामि ॥ ६ ॥ तारकियतिचन्द्रसे
 षा परवनेत्र युगस्य ॥ कोनकीयतिसंको ममभाग्यभूमिरु
 हस्य ॥ ७ ॥ भावकोविद रेखगोचर माननोति विण्य ॥ सैलराजमु

नानिवेदन मस्तुलोकहिताय ॥८॥

राममालव ॥ दोसु ॥ सोचतिपनिमुरथ माहाप्रतिवेस्य समाधिस
हिन ॥ इनजनमिलि आयेमुनितन आसनमे पकचित ॥ १ ॥ यह
विधतिगुमिलि गर सुनो कौस्तुकिचित्तदयि ॥ २ ॥ मानकोमुनि
जिने इनजनजोग्पा सनकोदिन्दी ॥ ज्ञायराकिअतिहितनसेडुनु
मुविधि पुजनकिन्हु ॥ ३ ॥ आसनगिकबैठे डुनुजन मुनिकहत
कोहिवाता ॥ भायतसिंहविरजसवर्णुन आ वतुजनकिआता
॥ ४ ॥

रणवसंत ॥ प्र ॥ प्रथमवसंतभीरामका आवधनगरप्रतिरामर
जदिन ॥ १ ॥ माघमासभर सितपद्मेनि केदुललितअविधर
जि ॥ जोगलग्नभुभजान रामनिलककल्पाणा धानदिन ॥ २ ॥
धोजप्रतापमोनि चौकापरजिः के ललितअविधरजि ॥ ३ ॥
वनायके पुरवनाय चतुरंगिनि शरा सजायदेना ॥ ४ ॥ गुरुवसिष्ठ
मुनि सतसंगजि सवजिनथव हरीगंगाजि ॥ सिंहासनपर राम
रसिया करतपिछाना ॥ ५ ॥ वाजतदमसावा तालप्रंझाजि निर
तननन वैलोक आमजि ॥ आरनिकरप्रभु तिलकसा रामस्य
गाउ जसगोपाल ॥ ६ ॥

रणवसंत ॥ ७ ॥ स्पामसुंदर वसंतवेलस राधावलितलमुना ॥
१ ॥ विंदावनसवाजनथानाव करकर्दल मृदंग धोलकदफरि

नगाराजंतर नवोरनमोरा वंजरी ॥ १ ॥ गोपिगणपति जुलमेहालाव
 ततसलच सालपयाव ॥ उमंगलकरनालनेकुलिसिंहसं ॥ खभेरी
 पोंगावासुरी ॥ २ ॥ अभिरुवाचवेलिहोलावथिथिजोननयाव ॥ न्हिला
 वहोलाव होलकाव ॥ कान्हगुरसनंविजाकल्हाकह्नुअनाथयाआसा
 द्विपालि ॥ ३ ॥

रागवसंत ॥ प्र ॥ अवर ~~चिह्नि~~ चफेरो लंकारामके दोहायि ॥
 ॥ १ ॥ कहतमनोधीर सुनोपियारा वनयहिमनि कौनेसिकाई
 ॥ मतियाहिनगंगे भयेनेरा तिरियाहरतयलाई ॥ १ ॥ जावलअव
 ला तुमकाजानो उनकिकिरतिवढाई ॥ भूमंदलमे पकरीमगाउ
 उनपछिदोनोभाई ॥ २ ॥ जनककिकंम्या श्रीरघुवंसि संगलदे
 मनभाई ॥ पोनकिउत्र माहावलिजोधा सपनमे लंकाजलायि

॥ ३ ॥ मोहेरावणा कि दससिरमेरा सयजोजनकिवावा ॥ विसराव
 लख वारिमेरा कुंभकर्ण जसोभाई ॥ ४ ॥ सायलबाधिस नारदउने
 नंत्रपणउराकुलछाये ॥ सुरदासकेप्रभू तुमारीदरसको लंकाहाथे
 जावाई ॥ ५ ॥

राग वसंत ॥ प्र ॥ चलोयंधु सवमिलि कुंज विन्द्रावनवेलि ॥ १ ॥
 नारिवारि सभेचली जववारि तनकिचरहपथ गोकनपुरारि ॥ था
 डिहोहुदधि वेचनधिरे दहकि २ नित्यजासि ॥ १ ॥ दरनहितोहरा
 असोहावालकं सके कहगयवान ॥ धुडिसकलवन केसजोहेभारत्ये
 त्वहेवनेहुकाय ॥ २ ॥ अनर्थवचनवोले जानिगोपारि दारनोरीरे
 वहजगात ॥ धरहमनुकिसि आउतारि धिरभयवैसिदेहमैदान
 ॥ ३ ॥ दामोदरसुनो विनतिहमारि ~~कनोविनतिहमारि~~ जोकहु

दही डधरह ॥ मुग मुग बिहतरहिमान श्री अंग मै जो तुमरे हरे ॥ ४ ॥
 राग वसंत ॥ प्र ॥ भजन करो मन श्री भैरव नाम हे ॥ भुलो मानि जग
 मायामो ॥ क ॥ बाल बन राजव खेलि न भूले तहूणा पै थे गुमान
 बुधा भय जब बोलत भुद्धि नहि अंग धुरि २ पछुताना ॥ ५ ॥ काम
 क्रोध लोभ माया मोह त्यागा नाहक मायावतोरना ॥ धन जन भूमि
 गृह संग न जै हरे नाहक पिछे पछुताना ॥ २ ॥ कहत सेवक यही म
 ति वारे तुव पद गाउं वजाउ ॥ श्री भैरव नाथ भक्त न के प्रभु तन
 मन तुव पद गाउं ॥ ३ ॥

४ राग वसंत ॥ प्र ॥ हे हे कान्हू जो दोहुने जिजमनु नाया पार विन
 ति नेने माल ॥ क ॥ मन याह तासनं पया थनिकाल जन पने
 मने विधिव निभाल ॥ मने सने अवलावलं सगा सलाव

५ ललंजुल मभिने उचाल ॥ १ ॥ सहरया चार स अने गवयिलें स
 सरमन मन सम दाल ॥ साजल वने थास मेव मडु अवसर अन
 याय निह्य समुधार ॥ २ ॥ पर्याति रिया धन सुय मन के वारन दि
 न २ थुगाले विहाल ॥ छपन क तोलति व हथ ~~छि~~ याय मने
 दिन ब्रय मानि थन वारं वार ॥ ३ ॥ भास्कर मल्ल पावचन ये ताव
 तोलति व गुण विकार ॥ रस पाव स वसे जु वसिसे समय स
 वस या वर सन गोपाल ॥ ४ ॥

राग वसंत ॥ ॥ हे हे माई भगवति तुमारी सर रामे आई ॥ हे ज
 गद मेवे ॥ क ॥ त्व हे माई माहा कालि त्व हे माता माहा लक्ष्मी त्व हे माई
 माहा सरस्वति देवि ॥ तुम हिर हे मानाय हसनिसार मै भुक्ति मुक्ति वर
 दाना ॥ १ ॥ अनाथ विनति सुनिय जगदम्बिके तुमारी सरन मै आई ॥

अज्ञानिअनाथको कृपाकरोप्रभु भक्त को पार लगाव ॥ २ ॥
 राग वसंत ॥ प्र ॥ जोगयाषदाय उद्धव जोगयाषदाय संदेस
 ॥ र्क ॥ नापनं वृद्रावनस हितलनुयाकेलस गनवन थोरव उपदे
 स ॥ १ ॥

राग वसंत ॥ प्र ॥ हे हे भैरव स्वयंतेल करुणा दयान ॥ र्क ॥ धि
 गुलिखात अनहाकुसे निहून दुसेतल चंद्रमाथिक ॥ मतुकसतसे
 तल रत्नमणिमय थास थास लोल कवनसिर ॥ १ ॥ वेताल आस
 नयासे धुं देगलिजसहिसे हयान अतिवानलाक ॥ गलसकोषा
 सेतल जयाधेलमाल जोनाजुल त्रिभुलदमरुक ॥ २ ॥ मतेनापतल
 ह्म गरीश दुपति दुर्गादेवितल जवस ॥ खवसतसेतल कनका
 ति ~~कालिका~~ कालिका कुमारी वाराहि विष्णुवि ॥ ३ ॥ वागमतिवि

भुमति संगम्या थासस विज्याक देवगणामुना ॥ अनेगवाजन
 थासे प्याषनडत अन भैरव अनमोहनं जुल ॥ ४ ॥ ल्हकलनं सु
 मरुपा अनेगचितं ~~लपा~~ लपा धिगुलिपालिभजतपा ॥ ल्हक
 लनं फोसेचोना विडनेधिनैथनि गीषनिहालयानाव ॥ ५ ॥

राग वसंत ॥ प्र ॥ भिमसेन पंचपांडव रसनविज्याक ॥ भिमयका
 दसिव्रतदना व विज्याक ॥ र्क ॥ मधेमंडलस मनुष्यलोकयात
 उकारवियावयमवं ॥ इरपतिसहितनं भिमसेनमाहाराजावनि
 जाल उद्धा यानाव ॥ १ ॥ भुमति जामनं न्हिहिधियादिन २
 धिगुलिनामकयाव ॥ तेलधिनकरुनानं दनावसोयाव तेलधि
 नउपदेसवि ॥ २ ॥ गथिनहवहजाम गयेधिनडसिमधन
 ॥ थथिनजिजरामजुया व धुया ~~जिनयनि~~ जिनयनि निवधिनं ध्यानसवि ॥ ३ ॥

मनुष्मजमनुयादानभात्रमदया लोकसजिअनिस्तिजुव ॥ छले
 यायमतेधिर्न अनाथवनावधन वीवजित अनेगधर्म ॥४॥ अतिदुस
 सितकयामनस जिरसनभाव ध्यानयायनुमन ॥ सदानंदिगुलि
 तुध्यान विवधिनधिरन थवकुलविवजितथान ॥४॥ नेपालया
 छत्रपति श्रीगिर्पाणायुद्ध विक्रममाहाराजा सदानंधिरन ॥ लहाक
 यावियेकन स्वयमाताधिरन परानमबोनसदान ॥५॥
 रागवसंत ॥ प्र ॥ नामकासेवयाधन श्रीतारनीमनि ॥ र्क ॥
 निजियाकारणा हिलावतिरथभुमि धेनयोधोग्रामसलाक ॥ रस
 मंधरमनजुलयो आनंदन हव्यमनसतयाव ॥ १ ॥ जुयावनि
 चोर स्वरागआकास स वलायाकिचोल दयाव ॥ वायूयावेगन
 कयाकमुपाचस चियकलध्वै मुनावतल ॥ २ ॥ मनयाभावण

केनपोजालस हरनिपिंल्लनाव ॥ प्रानसमानयासा मधुलुकेस्पू
 लातसेहुं नतियाचास ॥ ३ ॥ ब्राह्मिजुलोअननेनयोमन स
 लखसविकनतयाधे ॥ दैवतनामकासे अतिनमनतसे फटका
 वणमान आथ ॥ ४ ॥ आंधसदकोसिव भुगतिमनमसिल
 विवेकमदया जुल ॥ वियावगुणस्तान ऊंजसचोको भावप्रस
 नजुसे माईप्रसमनि ॥ ५ ॥ लहानथोअस्तानिने नेनावजननिर्न
 लहाकलयासहाय ईश्वरि ॥ हेमगिरिकोस कामजानामदेसे चो
 नाजिछास्कारमिनि यासरन ॥ ६ ॥
 रागवसंत ॥ त्रि ॥ मननमतेनाअतिनन्दजुयाकाय ॥ र्क ॥ भुवनस
 महुअति सुंदरअजुगति स्वसेननुस्वयनमगाक ॥ अनेगकलास
 देव रसहेयकेसवजिपनिप्र लसिकलजाक ॥ मनेनासवि ॥ १ ॥

लसिकलवानमिवा न्हितावस्वयाव वनमोहनपू उई निधेनेन ॥
 धिरनंमचोनज्ञान जुगतसवतु भ्यान वायमालिवधक ग्पाक ॥ २ ॥
 वयावजिचोनाथास तसेथव मुलेस दुतकलखान नखाक ॥ ३ ॥
 धिन मिजनहाय भागपयाफलनंलाप जिवनंतुतले नगाक ॥ ३ ॥
 जरमयाफलजुल करमसमिसानव हरिजयासेवक नंहाक ॥
 स्वगलिलोक बाधनि पुरुषदकोसमनि पुंमयाफलनंलाक ॥ ४ ॥
 राग वसंत ॥ जुगलसविहारा मिद्योवमजेन ॥ ५ ॥ वसवननखा
 क जिमनउयिनियाक थमि नवेनसम्राक ॥ वसपरदेसलाक
 जोभनदकोफुक अनेगकलासचिक सिनेहनवातधिन ॥ १ ॥
 तोलतेमफयाजिन मिपिनियातोलेन अतिनंमजेव वमिजन
 मलुमनेमफुजिन मिवाचोसथेन वसगगानुमनान दहलउवि
 रहन ॥ २ ॥ देलेन मगसवना न्हेलनं पिलवाना वपदनास्वया

नं मषन्हा ॥ थुगलिविधनरवन्हा तोलतेपरानयाना फ्यातेधिर
 जयाना रामयानामकासेचोना ॥ ३ ॥ न्हाकल अपधिचोनाद्वि
 छलया आसरास लखनपिजिपापि वनाव ॥ जयपरकासधनि
 नृपतिदकोसमनि तेजनं सुरजउति सुन्दरजडुपति ॥ ४ ॥

रागसिन्हाज्या ॥ वी ॥ न्हियान्हि थंलुमनकाव हरीयानामकाव
 ॥ कं ॥ गरोशसिद्धिपाति गरायाथाकर गनसविज्यानावचोन
 ह्री ॥ चरणासेवालेपे चधियान्हिदिनं चरितलोकउपकार ॥ १ ॥
 जुलबोजजुगति जुलथोजगदुख जुयिकाथे २ मसिया ॥ धनसमन
 तसे धरममधामे धरलपपापसलिन ॥ २ ॥ बनेतेलहिजि बनिबजन्म
 परि बनानं बुयसिय माल ॥ जुयावचोनम्याहजमयासाचनाज
 न्मनं दुखसिल वल्लन ॥ ३ ॥ कलिसजन्मकपत पापमन थाथिन
 गतिलायलोकन ॥ थलियाहुनिनं थुगुलिजनमस थुनुकहीनाम
 काव ॥ ४ ॥ मनुक्षजनम मजुलेसदानं मन न गथे २ मसिल ॥
 ॥ सुजया सुवचन सुमतिमनेनानं सुख सपापभोगयान ॥
 ५ ॥ कुसंगसंग स कुवादिपापमन कुगतिकलनास जुल ॥

दयानुधनद्वय दयानदानमदु दारिद्र्यनुपिलिधु जनम ॥६॥
 मयनेपोसरिर मयनेतिरिजन मयनेपुनपरिजन ॥ धमनयानज
 कथवतदयिव थथे नदानपुन्यमाल ॥७॥ वलथवदवधका व
 लमद्वल जन वलनडवविसेसन ॥ परयातदुरवपिय परमपाप
 लाफ परलोकनरकसवन ॥८॥ सालयासालससाधुवसंगस
 सहजनं भुभगजितान्न ॥ परयातउपकार परमधरम बदमपद
 लान वलन ॥९॥ नेनानपापक नेडनेहरिकथा नेडने
 भारथपगन ॥ जमयापाम फेने जतनधरम जपलपेहरि
 नामकाव ॥१०॥

रागसिन्हाजा ॥ ११ ॥ कृष्णयाचरित्रकने लोकननेडने
 ॥१२॥ पासाथिथि वाने सिन्हाजावने रसन पुवाह्मिथिजोने

॥ ज्वापुनिर्न कुलज्यासने फयान फयाथेतनेलसकरदको अन
 मुने ॥१॥ मिलिहिनं ववफसखानसिमायाकोस तोसेतलपता
 सिचास ॥ वृदावनपुखलिस राधिकाहितलरस हवद्विलयस
 दुना ॥२॥ वृदावनदथुसदसेचोनसिमाचोस कृष्णचोनकोस्वया
 रसन ॥ लिथेकोहावयाव वसततयाथाम मयनकयरासिमानो
 सी ॥३॥ लयनंतोलनाव थववसनतुखल ह्मति २ तोकपुलवन
 ॥ थुगुलिसव्यावहिलन्हिलायासवदनाल वयायहेनंमसिलला
 जन ॥४॥ थिथि मिषालदयाव वचंभावाह्मन्हाव वसतक
 तिकाव विल ॥ थववासुरिपयावराधिकावसिजुयाव सिंधारि
 पुखलिसहितल ॥५॥ श्रीजयरराजिनमलेजुयाव सहितचोय
 माल जसपरनाप ॥ समुद्रयालयफुक कृष्णयाव्यामफुक

लहाकलनलाय गथे फयिव ॥६॥

फेरिवाज २

रागघाटु ॥ फेरिवाज २ हरवे मुरलिया ॥ १ ॥ जमुना
 केनिरतिर धेनुचढाय मुरवरस मुरलि वजैया ॥ १ ॥ वारिमे
 गंगापारि जमुना ॥ विचग्वालिनिघेर कन्हैया ॥ २ ॥ आजुकेलारि
 का मारुजपरिया मालुं पारिहार कन्हैया ॥ ३ ॥ पुतनातारे कंस
 पछाडे ॥ मथुरामोराज करैया ॥ ४ ॥ वृजवालगा देरी माझिनेरे
 सिसवाके घाट ॥ ५ ॥ जुनुनुज नदिया वहत हे मोरे पिया कैसे
 पार ॥ ६ ॥ लाल कर धि लाल सिपाहि वैजनि रंजनि सान ॥ ७ ॥
 जात हे हम मथुरा नगरी ॥ विच परिगई सा न ॥ ८ ॥

एगसोरथ ॥ ॥ गंगा माई नीर मलाल जल प्रति बो जा कर थ
 सदनाव ॥ ॐ ॥ वेगुली दीग सवन योवी उ स्पः वरु गुमुपावन
 ॥ नूननं वर सत नुये काव बीजा कर थ सदनाव ॥ १ ॥ मनु क्षे वा
 गती मति नीर मलाल जल प्रति भो मिस नु स्प बो न ॥ लव हो लाव क ह
 नाने स्वयाव ॥ २ ॥ ब्रह्मा बीसु महेश्वर इंद्र भगवानः कदा
 चो क देव लोक ॥ देव देवी चक्र मुख्य साहितन ॥ ३ ॥ प्रति पाल
 याव लोक भूतानि या मन तीवः जो पानि उधार ॥ कोरि कोरि
 हा क ह या बीनति बीजा कर थ सदनाव ॥ ४ ॥

एगसोरथ ॥ ॥ नम नम नम नम नम आयो वर धारि तु
 रल लज नम नम नम नम नम ॥ ॐ ॥ सुर पुर मे सुर
 करत व ठाईः वाजत ताल मृदंगा ॥ सुरे गम प धनि
 को न र गावे तान योलात तन नतनन ननन वरले ॥ १ ॥

उर वसि येन का नी नृप कर तु दुः पायेल वाजे हम्
 हम् ॥ ताये या ताता ये या तादी कता दीम् दीम् उगु
 दू योली घनन घनन घनन गजे ॥ २ ॥ राहिन भाड
 व लला भलमी वानः त्याम भये भव ताए ॥ मनन मनन
 मनन मनन नु नु नु नु मेघ गजे घनन घनन घनन गजे
 ॥ ३ ॥ श्री राम राज नृवी नम साह देव भुषति होर तु
 न गावे ॥ नूनन नूनन नूनन जल वर सि गई हर कीतला
 गद गद गद गजे ॥ ४ ॥

नेपाली सम्वत् ५५३ साल भाद्र सुदी १२ ऐज २ कादीन मउवा एकादीन
 भैचालो गयाको भाद काठु गाको धम्मा भाच एली
 हा हाका नयाकोठी पौ अँले हा ल १०५३ साल माघ वदी ३० ऐज २ कादी
 नका २ वसे भैचालो गयो भाद गा तु साबु ठमि पाठ नु गा मति बोधना
 गोवा वनेति अपा लिफा गा तु सह गा कोरू ५००० ७००० हजार
 घुभाके मानिस पनी कोरू ४००० ५००० हजार घुभा र थोच
 फन मय

॥ गजल ॥ यो दुनीयामा दैन के ही सार यो माया के वजा
 ए. हं. यो दुनीयामा दैन के हि सार यो माया के वजार ॥ धुं ॥
 हं. दै चार दी को मेला यो इन्द्र जाल के बला ॥ आषि पर
 हं. सब फेला खुले हं नर्क के द्वार ॥ १ ॥ हं यो दुनीमा ॥
 हं यो ईशु मिशु संग साथी. दोलथ घोदा हंती ॥ २ ॥ आनं दै भाँती
 भाँती सब हो गुहा वीव हार ॥ २ ॥ हं यो नीयामा दैन के हि सार
 यो माया के वजार ॥

॥ ३८ ॥

गजल ॥ आया जाली मा पन्दा भया गुन्या ॥ १ ॥
 का मन्दा ॥ सारा का थन्दा ॥ पुस्तक ॥ यो नी ॥
 दं ॥ १ ॥ को वजा ॥ १ ॥ दानी ॥ १ ॥ यक ॥ १ ॥
 भा ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 पकार ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 रदी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

गजल ॥ यो जींदगी का क्य भरा सा आज हो की भोली हो ॥ १ ॥
 ॥ धुं ॥ भोली भने प्रदि भने २ नासल रुन को बोली हो ॥ भोली भो
 ली पादि पादि सब दो दी दौ ॥ भोली को आजै गर ॥ १ ॥ यो जी ॥ १ ॥
 भेका आज हो की भोली हो ॥ राम नाम के सुमर नगरी ॥ १ ॥ इन्द्र
 जाल के काम बनी पाप को जे रे हो ॥ आषी रीम को फोसी मा
 पर्द हं पाप गुन हो सीया रे ॥ २ ॥ यो जी ॥ १ ॥ जी का क्य ठे काना
 आज हो की भोली हो

गजल ॥ यो भवसागरका वीचमाँ किन जन्म गरायो प्र
 भु^{जन्म} कीन जन्म गरायो औले मलाई आहोँ गरायो जन्म प्र
 भुले नक कुले माहोँ ॥ ६ ॥ गरायो प्रभु ॥ मलाई मफ
 तको ऊँ रत को तं ता वछा यो फेर लख चौर सी फीन
 माहोँ ॥ ७ ॥ कीन जन्म गरायो प्रभु पा अनी ते संसा
 र मा ॥ इन्द्रजालमा धन जन्म को वस मा पारे मफलमा
 जन्म गरायो प्रभु भुले इजुर को नाम ध्यान गयो ताहोँ ॥ ८ ॥
 कीन जन्म गरायो ॥ दोरौं भने माया लाग्छ प्रभु वसौं भने
 माहोँ फासी भयो प्रभु औले मलाई मलाई आहोँ ॥ ९ ॥
 कीन जन्म गरायो ॥ राम राम हरे हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे
 २ भगवान् इरी हर हरसन नी मीत तपो वन जान
 को ईक्षा भयो औले मलाई आहोँ प्रभु औले मलाई
 आहोँ ॥ १० ॥ कीन जन्म गरायो प्रभु ॥

गजल ॥ जादु सारि वडली सक्यो यो सनि सारा व
 डली सक्यो यो जवाना वडली सक्यो यो जवाना ॥ १ ॥
 अत्याचार ले हुँदु तीर्थ मा पन्दा भयर गुन्दा ॥ आठौं
 पहर साधु को मन्मा २ भी समाउने को धन्दा ॥ २ ॥
 वडली सक्यो सनी सारा ॥ कर्महीन डीन डीन ब्राह्म
 ण वी से वेद पुराण ॥ मुख्य क वल मा क्या पीर गुद
 दं सुद्र को ब्याण ॥ ३ ॥ वडली स ॥ दानि मिले द
 क यक लाख भी समागण ॥ जो धनि दै उहि अ
 निलो भी शोध को उधार ॥ ४ ॥ वडली स ॥ रंदि
 हर को चलती देखि २ मोहित भये कुल नारी ॥ य
 कपाई लमा धर्म वचने २ सदा र ह्या सरी रतयारी ॥
 ५ ॥ वडली स ॥ अवता घत दे गयो ईमान सबैको २ इन्द्र
 जाल ऊँ ^{अयता} स्वामी ॥ आरवीर मा यम पास मा पर लां न पा
 प गर्नु हुँसी यार ॥ ६ ॥ वडली स को जवाना ॥ जादु स

गजल ॥ धर्म अलोप भै पाप प्रगत भयो यही नौरंगी
 फेसनैले यही नौरंगी फेसनैले ॥ ६० ॥ बाई नो करी ७०८
 हपैआ जुताई वाइ रे हात ६०१० हपैआ कोट सुट प्योत
 लगाउं ३००१४०० हपैआ हात्माई नारी घरी २००१३००
 हपैआ कजालमा जुल पाल ६०१६० वैसा खर्च
 लगाई थकन परीयो यही नौरंगी फेसनैले ॥ ५॥ धर्म ॥
 धरमा जाहान मारि वाल वचा हवाई फेस्त मा हुजाहं हपै
 आ लगाई साहु मोरे यही नौरंगी फेसनैले ॥ २॥ धर्म ॥
 तमायु खाउ भने हुकाचिली दैन सी गेरु बाहु भने का
 यवी भयन आसा प्रवत खाउ भने अतीतीतो खानु स
 क दैन वगली मारी चोरी खाँ भै यही नौरंगी फेसनैले
 ॥ ३॥ धर्म अलोप भै पाप प्रगत भयो यही नौरंगी फे
 सेनैले ..

॥३८३॥

॥३८४॥

॥३८५॥

॥३८६॥

1135

